ISSN-0971-8397

विकास को समर्पित मासिक

योजना

नवम्बर, 2003

मूल्य : 7 रुपये

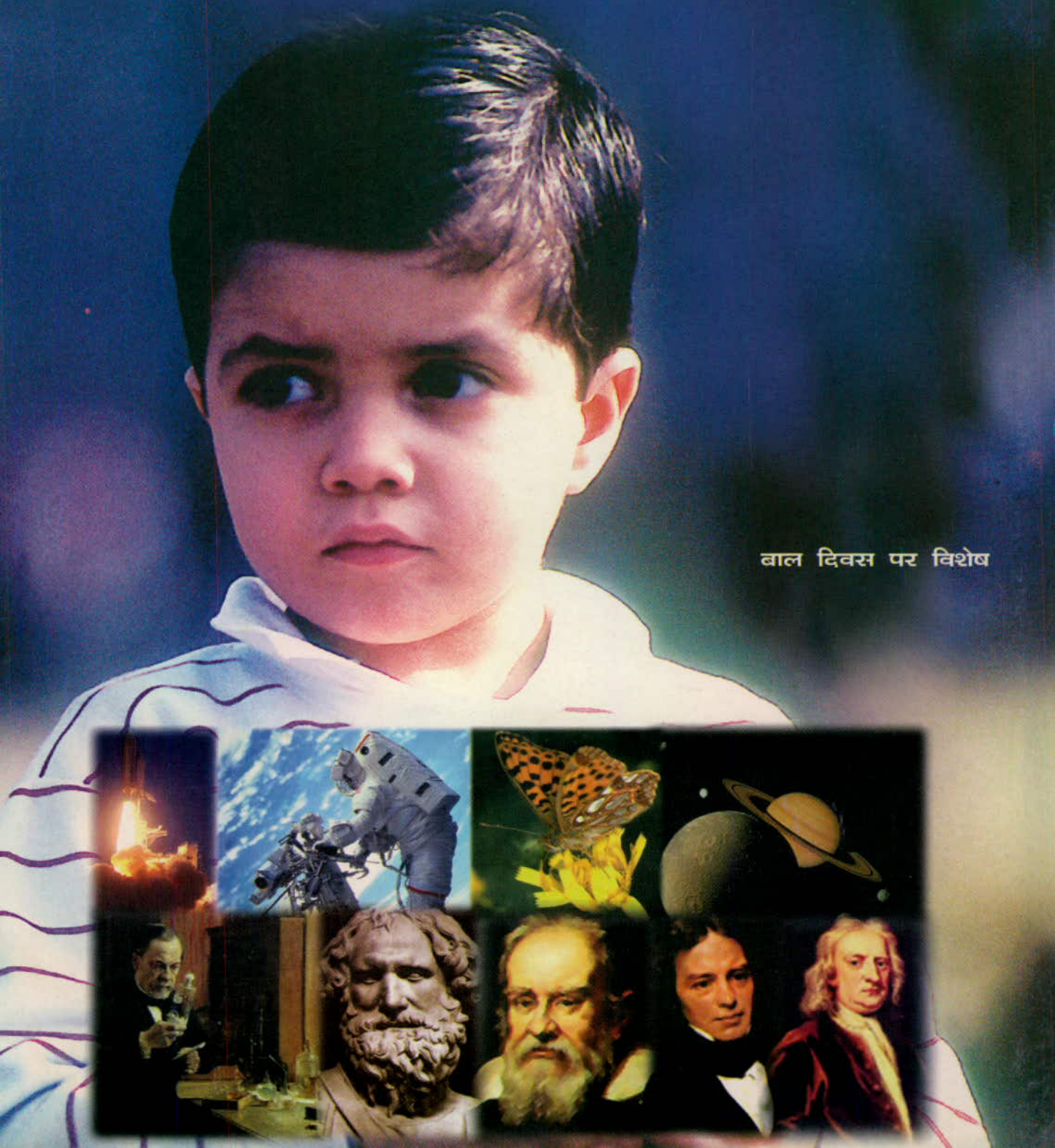

बाल दिवस पर विशेष

बच्चों से मुझे प्रेम है और वह बढ़ता ही गया है।

--नेहरूजी

योजना

वर्ष : 47 अंक 8 नवम्बर, 2003 कार्तिक–अग्रहायण, शक–संवत् 1925

प्रधान संपादक
विश्वनाथ रामशेष

संपादक
राजेन्द्र राय

उप संपादक
रेमी कुमारी

संपादकीय कार्यालय
कमरा नं. 538 ए, योजना भवन, संसद मार्ग,
नई दिल्ली–110 001
दूरभाष : 23096738, 23717910
23096666 / 2508, 2566
ई–मेल : yojana@techpilgrim.com
www.publicationsdivision.nic.in
a) dpd@nic.in
b) dpd@hub.nic.in

संयुक्त निदेशक (उत्पादन)
डी.एन. गांधी

व्यापार प्रबंधक
जगदीश प्रसाद
दूरभाष : 23387069
दूरभाष फैक्स : 23387983

आवरण
दीपायन मैत्रा

इस अंक में

- बच्चों के प्यारे – गुलाब वाले चाचा नेहरू — देवेन्द्र कुमार — 4
- बच्चों की भाषा में लिखा गया विज्ञान साहित्य — प्रकाश मनु — 8
- बच्चों में आत्महत्या की प्रवृत्ति और समाज — कौशलेन्द्र प्रपन्न — 15
- आशियान के साथ घनिष्ठ संबंधों की शुरुआत — नवीन पंत — 20
- कानकुन में एक–दूसरे की चिंताओं को समझने का स्तर बढ़ा — अरुण जेटली — 24
- फिर टकराए अमीरों और गरीबों के हित — अनन्त मित्तल — 26
- झारखंड में तसर रेशम उद्योग की दशा एवं दिशा — ललन कुमार चौबे, गार्गी — 30
- उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल की थारु जनजाति — रूपेश कुमार सिंह — 35
- मंथन – शिक्षा और साक्षरता — आभा श्रीवास्तव — 40
- जहां चाह, वहां राह – ग्रामीण बालिकाओं के लिए बेमिसाल उदाहरण – स्व उत्थान — ममता भारती — 43
- स्वास्थ्य चर्चा — – — 45

योजना हिन्दी के अतिरिक्त **असमिया, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, मराठी, तमिल, उड़िया, पंजाबी, तेलगू** तथा **उर्दू** भाषाओं में भी प्रकाशित की जाती है। नई सदस्यता के नवीकरण, पुराने अंकों की प्राप्ति एवं एजेंसी आदि के लिए मनीआर्डर / डिमांड ड्राफ्ट / पोस्टल आर्डर 'निदेशक, प्रकाशन विभाग' के नाम से बनवा कर निम्न पते पर भेजें :–

विज्ञापन एवं प्रसार व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग, ईस्ट ब्लाक IV, लेवल VII, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110 066 टेलीफोन : 26100207, 26105590

चंदे की दरें : वार्षिक : 70 रु.; **द्विवार्षिक** : 135 रु.; **त्रैवार्षिक** : 190 रु.; विदेशों में **वार्षिक** दरें : **पड़ोसी देश** : 500 रु.; **यूरोपीय एवं अन्य देश** : 700 रु.

'योजना' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। जरूरी नहीं कि ये लेखक भारत सरकार के जिन मंत्रालयों, विभागों अथवा संगठनों से सम्बद्ध हैं, उनका भी यही दृष्टिकोण हो।

संपादकीय

नेहरूजी कहा करते थे, 'मुझे बड़ा दुख होता है, जब मैं कहीं देखता या सुनता हूं कि हमारे छोटे बच्चों की देखभाल ठीक नहीं होती। क्योंकि असल में भारत की दौलत उसके बच्चे हैं। अगर उनकी देखभाल हम ठीक न करें, उनके खाने–पीने, कपड़े, पढ़ाई और स्वास्थ्य की देखभाल न करें तो कल का आने वाला भारत पिछड़ा हुआ होगा। यह बात नहीं होनी चाहिए।' और शायद इसलिए ही बच्चे नेहरूजी के राष्ट्र निर्माण की योजनाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे, वैचारिक स्तर पर ही नहीं व्यावहारिक अमल के समय भी उन्होंने बच्चों को लेकर नई–नई योजनाएं बनाईं। नेहरूजी का मानना था कि बच्चों को सिर्फ औपचारिक स्कूली शिक्षा ही नहीं, अपनी रचनात्मकता को विकसित करने के साधन भी उपलब्ध होने चाहिए।

14 नवम्बर नेहरूजी का जन्म दिवस है लेकिन देश के बच्चे उसे 'बाल दिवस' के रूप में ही जानते हैं।

14 नवम्बर चाचा नेहरू के जन्म दिवस जिसे पूरे देश में 'बाल दिवस' के रूप में मनाया जाता है के अवसर पर इस अंक में विशेष सामग्री दी गई है।

आज के बच्चों के समक्ष कई चुनौतियां हैं, कई तरह के दबाव भी हैं जिससे वे अक्सर कुंठित हो या तो घर छोड़ जाते हैं अथवा आत्महत्या तक कर लेते हैं। इन घटनाओं के तह में जाएं तो मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, सामाजिक दबाव आदि घटक के रूप में नज़र आते हैं। बच्चों के लिए दबावमुक्त वातावरण निर्मित करना हर व्यक्ति, परिवार और समाज का पहला उत्तरदायित्व होना चाहिए ताकि उनका संपूर्ण, समुचित एवं संतुलित विकास हो सके। इस संदर्भ में हमें बच्चों को कुछ सिखाने की बजाय एक अच्छे मार्गदर्शक की भूमिका निभाने भर की आवश्यकता है। 'बच्चों में आत्महत्या की प्रवृत्ति और समाज' लेख में इस पर ही चर्चा की गई है।

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए साहित्य एक आवश्यक जरिया है। आज का युग 'विज्ञान युग' है। बिना अच्छे विज्ञान साहित्य के कोई भाषा अपने को मुक्कमल नहीं मान सकती। विज्ञान साहित्य न सिर्फ आज की जरूरत है बल्कि इसके सामने कई चुनौतियां भी हैं। बाल विज्ञान साहित्य के संबंध में विशेष लेख आप पढ़ सकेंगे अंक में शामिल लेख 'बच्चों की भाषा में लिखा गया विज्ञान साहित्य' में।

बाली में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने आशियान देशों के साथ आर्थिक संबंधों की शुरुआत की है। वाजपेयीजी के इस प्रयास के सफल होने के बाद इस क्षेत्र में खुशहाली और समृद्धि का नया युग शुरू होने की संभावना जतायी जा रही है। इन संबंधों एवं समझौतों के बारे में तथ्यपरक लेख अंक में प्रस्तुत है।

विश्व व्यापर संगठन (डब्ल्यूटीओ) की पांचवीं मंत्रीस्तरीय बैठक की विशेषता यह रही कि व्यापार संगठन की अब तक की हुई सभी बैठकों के मुकाबले विकासशील देश इस बार कहीं ज्यादा मुखर रहे और उन्होंने वैसे सभी प्रस्तावों का डटकर विरोध किया जिससे उनके हितों को आंच पहुंचने की गुंजाइश थी।

भारत में लगभग 65 प्रतिशत आबादी रोजगार, कृषि और उसी से संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। सकल राष्ट्रीय उत्पाद में भी कृषि क्षेत्र का 30 प्रतिशत योगदान है। कमोबेश यही स्थिति अन्य विकासशील देशों की भी है। इसलिए वे कृषि पर सब्सिडी को लेकर इतने संवेदनशील हैं। कानकुन में हमने क्या खोया और क्या पाया की जानकारी एवं विशेषज्ञों के विचार के साथ 'योजना' आपके समक्ष प्रस्तुत हो रही है।

'मंथन' नामक हमारा नया एवं स्थाई स्तंभ पाठकों द्वारा अत्यंत पसंद किया जा रहा है। इसके अंतर्गत इस बार चर्चा है, शिक्षा और साक्षरता की। शिक्षा को वह प्रकाश माना गया है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रकाशित करने की सामर्थ्य रखता है। शिक्षा का अर्थ है – व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास लेकिन आज शिक्षा के मायने ही बदल गए हैं। इसी पर अंक में चर्चा की गई है।

'योजना' का आगामी अंक कृषि पर केंद्रित होगा। भारतीय कृषि की दशा, दिशा, समस्या, भूमि प्रबंधन, कृषि क्षेत्र में हो रहे अभिनव प्रयोगों आदि विषयों पर लेख शामिल होंगे।

आपकी राय

(संदर्भित अंक–अगस्त 2003)

सर्वश्रेष्ठ पत्र

आइए! राष्ट्र निर्माण में सहयोग दें

अगस्त विशेषांक पढ़ा। आजादी के 56 वर्षों की हमारी शिक्षा–यात्रा उत्तरोत्तर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। हमने शिक्षा, विकासदर, मुद्रा–भंडार, आर्थिक–संवृद्धि, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी समेत जीवन के विविध क्षेत्रों में नई ऊंचाइयों को स्पर्श किया है। पर अभी भी गरीबी, बेरोजगारी, स्वच्छ पेयजल और मानवीय विकास का पहलू और क्रियान्वयन का भ्रष्ट कार्यस्तर एक अहम् प्रश्नचिह्न है, हमारे विकास के बड़े–बड़े दावों पर। पर आशा की किरण समाप्त नहीं हुई है; बल्कि ज्ञान आधारित भारतीय समाज (प्रबुद्ध वर्ग विशेषतः) और परिपक्व लोकतंत्र हमें आश्वस्त करते हैं। हम निश्चय ही कामयाब होंगे – अपने मिशन में, विकसित भारत के सृजन में। यह हकीकत हमें अपने श्रम से साकार करना है। आइए, राष्ट्र–निर्माण, सामाजिक सौहार्द्र और सरकार की विकास योजनाओं में समर्पित सहयोग दें। हम ज्ञान, सहिष्णुता, प्रेम व श्रम का प्रसार करें और राष्ट्र की धारा को अपने श्रम–बिन्दु से उत्फुल्ल करें। ईमानदारीपूर्ण कार्यस्तर एवं समर्पण से सब कुछ संभव है। अतः हम कामयाब होंगे, ऐसा विश्वास है।

–उमेश चन्द्र राय, इलाहाबाद (उ.प्र.)

गागर में सागर

'योजना' के *अगस्त 2003* के अंक में संपादकीय सहित सभी लेख रोचक, सारगर्भित एवं महत्वपूर्ण हैं। अंक के आर्थिक लेख जैसे हरजीत अहलूवालिया का 'नई धारा के आर्थिक विकास में वित्तीय क्षेत्र का योगदान', जी. श्री निवासन का लेख जो 'कार्पोरेट क्षेत्र' को फोकस करता है, जितेन्द्र गुप्त का लेख, जो 1999–2003 के वर्षों को आर्थिक विकास की एक नई परम्परा के दृष्टिगत होता है; पेट्रोलियम मंत्री रामनाइक का लेख जो तेल की आत्मनिर्भरता को दर्शाते हुए इस दिशा में विकास को इंगित करता है तथा के. राजेन्द्र नायर का लेख जो भारत के कपड़ा उद्योग के बारे में महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्द्धक सामग्रियां उपलब्ध कराता है, प्रतियोगी परीक्षाओं और आर्थिक तथा अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययन की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है।

के. वेकट सुब्रमण्यन का लेख 'चेतन समाज के रूप में भारत' भारत की भावी संभावनाओं और आकांक्षाओं को स्पष्ट करता है जिसे भविष्य में प्राप्त किया जा सकता है। जो असंभव नहीं अपितु अपेक्षित है। मृदुला सिन्हा और राजीव शर्मा के लेख भारत की मानवीय शक्ति, उसके विकास और उच्च कल्याण स्तर की संभावना को दर्शाते हैं।

एस.ए. खादर तथा राजेन्द्र प्रभु के लेख भारत की प्रौद्योगिकी तथा उसकी वैश्विक स्थिति एवं उपलब्धियों को रेखांकित करते नजर आते हैं।

के.के. खुल्लर का लेख 'भारत के 56 साल' महत्वपूर्ण ज्ञान देता है। अंतिम दो लेख के.जी. जोगलकर तथा एस सेथुरमन के लेख वाजपेयी सरकार की सकारात्मक उपलब्धियों की समीक्षा करते हैं।

यह विशेषांक 'गागर में सागर' जैसा है इसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी लेख समाहित किए गए हैं। इस विशेषांक की तारीफ कितनी भी करें कम है।

–सत्येन्द्र पूजन प्रताप त्रिपाठी, इलाहाबाद

गंभीरता से प्रयास करें

भारत ने आजादी के बाद 56 वसंत देखे हैं। इन वर्षों में हमने राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्रों की आधारभूत संरचना में काफी विकास कर लिया है। आजादी के दिनों में महिला शिक्षा, बंधुआ मजदूर, ऊंच–नीच, समाज के सभी व्यक्तियों को समान अधिकार, यातायात के साधन आदि जैसे विषय स्वप्न समझे जाते थे, वे आज एक सामान्य–सी बातें हैं। किंतु इतना सब करने के बाद भी हम पिछड़े देश क्यों हैं? हालांकि कागजों में हम 'विकासशील' के नाम से जाने जाते हैं। आज हमारी एक तिहाई जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे गुजर–बसर कर रही है। देश में औसत रूप में सड़कें, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं स्तरहीन हैं। विकास का केन्द्रीकरण शहरों के पास हुआ, गांव इससे आज भी अछूते हैं। गांवों और शहरों के बीच विकास असंतुलन बढ़ा है। अतः आज आवश्यकता यह है कि हम इन प्रश्नों को हल करने के लिए गंभीरता से प्रयास करें। आज यह निश्चित करना आवश्यक है कि विकास से लोकतंत्र की अंतिम इकाईयां लाभान्वित हों। एक स्वतंत्र खुशहाल भारत बनने के लिए यह जरूरी है कि हमारे यहां आर्थिक, राजनैतिक भ्रष्टाचार खत्म हो, लोग शिक्षित, स्वस्थ्य हों, उनके पास करने को काम हो, गांवों का विकास हो तभी बात बनेगी।

–रोहित कुमार सिंह, पटना (बिहार)

महिलाएं आगे आ रही हैं

भारतीय अर्थव्यवस्था को परिलक्षित करते हुए आवरण पृष्ठ से सुसज्जित अगस्त अंक से हस्तगत हुआ। आद्योपांत पढ़ने के पश्चात यह कहने में सर्वथा अतिश्योक्ति नहीं है कि 'योजना' का यह अंक 'हमारी अर्थव्यवस्था के विकास का एक दर्पण' है जिसमें इस देश की सारी बातें प्रतिबिम्बित एवं स्पष्ट दिखाई दे रही हैं।

अन्य उपयोगी एवं सार्थक लेखों के अलावा सी जयंती का 'आर्थिक विकास के नए परिवेश में महिला उद्यमियों का योगदान' आलेख में महिलाओं की भागीदारी से सम्बन्धित अच्छी जानकारी मिलती है। वास्तव में आज भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा गांवों को सशक्त करने के लिए जितनी योजनाएं चलाई जा रही हैं, उनमें महिलाएं बड़ी तेजी से आगे आकर हाथ बंटा रही हैं एवं योजनाओं का पूरा लाभ उठा रही हैं। अनेक स्वयं सेवी समूहों द्वारा यह कार्य और आसान होता जा रहा है।

–दिलीप कुमार जायसवाल, चिरैयाकोट, मऊ (उ.प्र.)

बच्चों के प्यारे – गुलाब वाले चाचा नेहरू

○ देवेन्द्र कुमार

देश के बच्चे नेहरूजी के राष्ट्र निर्माण की योजनाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे, सिर्फ विचार के स्तर पर ही नहीं कार्य और व्यावहारिक अमल के समय भी उन्होंने बच्चों को लेकर नई–नई योजनाएं बनाईं और उन पर काम शुरू हुआ। पचास के दशक में राष्ट्रीय बाल भवन की नींव रखी गई। इसके पीछे नेहरूजी का विचार था कि बच्चों को केवल औपचारिक स्कूली शिक्षा ही नहीं, उसके साथ खेलने का उन्मुक्त वातावरण तथा अपनी रचनात्मकता को विकसित करने के साधन भी उपलब्ध होने चाहिएं।

बच्चों के नाम अपने एक पत्र में जवाहर लाल नेहरू ने लिखा है –

'अगर तुम मेरे साथ होते तो मैं तुमसे इस खूबसूरत दुनिया के बारे में बातें करना पसंद करता। मैं तुमसे फूलों, पेड़ों, परिन्दों और जानवरों, सितारों और पहाड़ों, हिम की नदियों और ऐसी दूसरी अनोखी चीजों के बारे में बातें करता जो हमारे इर्द–गिर्द हैं, हमें घेरे हुए हैं। ..... तुमने बहुत–सी परी कथाएं और पुराने जमाने की कहानियां पढ़ी होंगी। लेकिन आज तक जितनी भी परी कथांए या साहस की कहानियां लिखी गई हैं उनमें सबसे ज्यादा दिलचस्प और बड़ी कहानी तो यह दुनिया है। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि उसे पढ़ने के लिए आंखें, सुनने के लिए कान और एक ऐसा दिमाग चाहिए जो जिंदगी और दुनिया की खूबसूरती को बेरोकटोक अपने–आप में समेटने के लिए तैयार हो।'

बच्चों के बीच जाकर बातें करने और उनके साथ हंसने–खिलखिलाने के लिए आज नेहरूजी नहीं हैं लेकिन इस दुनिया में जब तक हंसते–मुस्कुराते बच्चे और गुलाब मौजूद हैं उनकी याद बनी रहेगी। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का नाम आते ही जो दो चित्र सबसे पहले आंखों में आते हैं वे हंसते हुए बच्चों का और स्वयं उनका अपना है जिसमें नेहरूजी अपनी अचकन के बटन होल में सुर्ख गुलाब का फूल लगाए खड़े मुस्कुरा रहे हैं। यह आकस्मिक संयोग नहीं है कि नेहरूजी को बच्चे और गुलाब प्रिय थे। गुलाब के ताजे फूल और हंसते हुए बच्चे एक दूसरे के पर्याय ही तो हैं।

बच्चों को दुलारते चाचा नेहरू

नेहरूजी बच्चों से कितना प्यार करते थे, इसके एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। सबसे बड़ा तो स्वयं उनका जन्मदिन है जो चौदह नवंबर को पड़ता है। इसे उनकी इच्छा के अनुरूप बच्चों के राष्ट्रीय त्योहार यानी 'बाल दिवस' के रूप में मनाया जाता है। बाल दिवस आधुनिक, स्वाधीन

भारत में बच्चों का अपना ऐसा पर्व है जो देश भर में राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है।

बच्चों के साथ इस गहराई से जुड़कर उन्हें प्यार करने वाला कोई दूसरा राजनेता दुनिया में दूसरा शायद ही कोई हुआ हो। लेकिन इसका मतलब यह कदापि नहीं कि अन्य कोई राजनेता बच्चों से प्यार नहीं कर सकता। भला ऐसा कौन होगा जिसे बच्चे प्यारे न हों। यह बात कहने का अर्थ यही है, जितना बड़ा नेता उसकी व्यस्तता और उलझन उतनी ही अधिक होती है। ऐसे में सबकुछ भुलाकर खुद को बच्चों से जोड़े रखना और बच्चों के बीच जाकर खुद बच्चों की तरह महसूस करना, हंसना–खिलखिलाना कोई आसान काम नहीं होता। यह नेहरूजी ने बार–बार और लगातार किया, क्योंकि उन्हें बच्चों से सचमुच गहरा लगाव था। वह लगातार उनके बारे में सोचते और बात करते थे।

हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारा देश विश्व राजनीति के एक कठिन दौर में स्वाधीन हुआ था। आजादी की खुशी के साथ देश के खौफनाक बंटवारे का दर्द मिला। लाखों बूढ़े, जवान, औरतें और बच्चे बेघर, बेआसरा होकर आने पर विवश हुए थे। वह समय आज़ादी का जश्न मनाने का नहीं दुखियों के आंसू पोंछकर उन्हें हिम्मत बंधाने का था। पूरा देश इस पुनर्वास के काम में लग गया। अभी यह समस्या सुलझी भी नहीं थी कि सीमा पार से कश्मीर में आक्रमण हो गया। इस राष्ट्रीय संकट की गूंज पूरी दुनिया में सुनाई दी। समस्याएं बड़ी और गम्भीर थी। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद दुनिया का नक्शा बदल गया था। पूरा विश्व दो महाशक्तियों के प्रभाव क्षेत्रों में बंट गया था। ऐसे में भारत जैसे देश के लिये अपनी अस्मिता बचाये रखकर पुनर्निमाण के साथ नवनिर्माण की प्रक्रिया को बढ़ाना एक महान लक्ष्य था।

साधनहीनता और समस्याओं का घटाटोप। सब कुछ आंरभ से आंरभ करना था – गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी तथा अन्य कई मोर्चों पर देश को जूझना था। लेकिन नेहरू अदम्य साहसी और दूरदर्शी थे और सबसे बढ़कर वह थे एक स्वप्नजीवी। अपने सपनों को पूरा करने की कठिन चुनौती सामने थी। उसमें उलझे रहने के बावजूद वह जब तक थोड़ा समय निकालकर बच्चों के बीच जाकर, या उन्हें अपने पास बुलाकर हंसने खिलखिलाने और बच्चों को नई–नई बातें बताने का अवसर खोज ही लेते थे। बच्चों से उनकी निकटता राजनीति के इस कठिन दौर में निरंतर बनी रही।

बच्चों के लिए अच्छी एवं ज्ञानवर्धक सस्ती पुस्तकों का महत्व नेहरूजी खूब जानते थे। इसी दृष्टि ने 'नेशनल बुक ट्रस्ट' की स्थापना में अपने को साकार किया। नेहरू बाल पुस्तकालय योजना के अधीन देश की सभी भाषाओं में बच्चों का ज्ञान बढ़ाने तथा नयी–नयी जानकारी देने वाली पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं।

देश के बच्चे उनकी राष्ट्र निर्माण की योजनाओं में महत्वपूर्ण स्थान रखते थे, सिर्फ विचार के स्तर पर ही नहीं कार्य और व्यावहारिक अमल के समय भी उन्होंने बच्चों को लेकर नयी–नयी योजनाएं बनाईं और उन पर काम शुरू हुआ। पचास के दशक में राष्ट्रीय बाल भवन की नींव रखी गयी। इसके पीछे नेहरूजी का विचार था कि बच्चों को केवल औपचारिक स्कूली शिक्षा ही नहीं, उसके साथ खेलने का उन्मुक्त वातावरण तथा अपनी रचनात्मकता को विकसित करने के साधन भी उपलब्ध होने चाहिएं। बच्चों के उर्वर मस्तिष्क में सोये कल्पनाशीलता के बीज तथा कुछ नया जानने की इच्छा को बढ़ावा देने की दृष्टि से बाल भवन के विचार ने खासा योगदान किया है। आज पूरे देश में इसकी सत्तर से अधिक शाखाएं काम कर रही हैं। जैसे नेहरूजी स्वाधीन भारत की नवनिर्माण योजनाओं को भारत के नये तीर्थ कहते थे, उस तरह ऐसे कार्यस्थलों को बच्चों के अपने मंदिर कहा जा सकता है।

नेहरूजी एक राजनेता होने के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त, प्रसिद्ध लेखक भी थे। नेहरूजी बच्चों में कैसी वैज्ञानिक दृष्टि का विकास चाहते थे, इसकी झलक स्वाधीनता संघर्ष के दौरान जेल में उनके लेखन में देखी जा सकती है। सन 1931 से 1933 के बीच उन्होंने बेटी इंदिरा प्रियदर्शिनी के नाम समय–समय पर जेल से पत्र लिखे थे। ये जेल यात्रा के दौरान लिखी गयी उनकी सबसे अच्छी रचनाओं में हैं। उन पत्रों में बेटी के प्रति केवल पिता का प्यार ही नहीं था, उनमें दुनिया के इतिहास की झलक भी मौजूद थी।

बच्चों के लिए अच्छी एवं ज्ञानवर्धक सस्ती पुस्तकों का महत्व नेहरूजी खूब जानते थे। इसी दृष्टि ने 'नेशनल बुक ट्रस्ट' की स्थापना में अपने को साकार किया। नेहरू बाल पुस्तकालय योजना के अधीन देश की सभी भाषाओं में बच्चों का ज्ञान बढ़ाने तथा नयी–नयी जानकारी देने वाली पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं।

नेहरूजी के प्रोत्साहन से ही प्रसिद्ध व्यंग्य चित्रकार शंकर ने 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट' की स्थापना की। इस संस्था से भी हिन्दी, अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं में बच्चों के लिए पुस्तकें छप रही हैं। अंतर्राष्ट्रीय गुड़ियाघर तथा अंतर्राष्ट्रीय बाल

चित्रकला प्रतियोगिता जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम नेहरूजी के सुझाव पर शुरू किए गए थे।

इससे बखूबी समझा जा सकता है कि बच्चों के चाचा नेहरू केवल उनके साथ खेलने तथा हंसने भर से ही संतुष्ट होने वाले नहीं थे। वे देश के सभी बच्चों की शिक्षा, खेल और मौलिक प्रतिभा विकास की ऐसी समन्वित योजनाओं पर कार्य करना चाहते थे जिनसे बच्चे अपना सर्वांगीण विकास कर सकें।

वैसे नहेरूजी गंभीर स्वभाव के व्यक्ति थे और जिम्मेदारियों का बोझ मनुष्य को आप से आप विचारशील और गंभीर बना भी देता है, पर फिर भी उनके मन में बैठा बच्चा हमेशा ही बच्चों के बीच पहुंचने को बेताब रहता था। राजनेताओं, विदेशी अतिथियों तथा अन्य गणमान्य लोगों के साथ नेहरूजी के अनेक चित्र देखे जा सकते हैं। लेकिन उनमें वे प्रायः ही गंभीर और विचारमग्न दिखाई देते हैं। अगर खिलदंड, खिलखिलाते नेहरूजी को देखना हो तो हमें उन चित्रों को देखना होगा, जिनमें ये बच्चों के बीच मौजूद हैं। वह कहा करते थे जब मैं बच्चों के साथ होता हूं तो बहुत खुश रहता हूं।

बच्चों के लिए वह कुछ भी करने को तैयार रहते थे। एक बार वह सेवाग्राम (वर्धा) गये। यहां बालमंदिर में नेहरूजी ने कुछ बच्चों को नृत्य की तैयारी करते देखा। वह खड़े–खड़े उन्हें नाचते देखते और मुसकुराते रहे।

नाच खत्म हुआ तो पांच वर्ष की एक बालिका पास आई। बोली – चाचाजी, आप भी हमारे साथ नाचिए ना।

नेहरूजी ने हंसकर कहा – "इस बार नहीं, अगली बार जब सेवाग्राम आऊंगा तो नाचना सीखकर आऊंगा। उस समय तुम लोगों के साथ जरूर नाचूंगा।" पर बालिका ने जिद पकड़ ली और बोली, "नहीं, अगली बार नहीं। आपको इसी बार नाचना होगा।" और वह चाचा नेहरू का हाथ पकड़ उन्हें नाचने के लिए खींचने लगी।

आखिर नेहरूजी को बच्ची की बात माननी पड़ी। कुछ देर वह बच्चों के साथ नाचते रहे। बाद में बालिका ने कहा – "जब आप अगली बार आएं तो अच्छी तरह नाचना सीखकर आएं।"

चाचा नेहरू ने बच्ची को प्यार करते हुए कहा – "जरूर, जरूर! अगली बार जब भी आंऊगा, इससे बढ़िया नाच दिखांऊगा, सब हंस पड़े उसमें नेहरूजी की हंसी भी शामिल थी।

उनके मन–महल के दरवाजे बच्चों के लिए हमेशा खुले रहते थे। वह बच्चों के प्यारे चाचा नेहरू थे और बच्चे थे उनके लिए महकते ताज़े गुलाब। ❑

(नंदन पत्रिका के
पूर्व सह संपादक
संप्रति स्वतंत्र लेखक)

Aspiring for an M.E. or M.Tech from a prestigious institution?

BRILLIANT'S POSTAL COURSES FOR

GATE 2004

SUBJECTS OFFERED • Computer Science & Engg. • Electronics & Comm. Engg. • Electrical Engg. • Instrumentation Engg. • Mechanical Engg. • Production and Industrial Engg. • Civil Engg. • Geology & Geophysics • Mathematics • Physics • Chemistry • Engg. Sc. (Engg. Maths, Electrical Sc., Materials Sc., Solid Mechanics, Fluid Mechanics, Thermodynamics) • Life Sc. (Chem., Biochem., Microbiology)

Three of Brilliant's students have secured the No.1 rank in GATE 2003.

With 70 ranks above the 99th Percentile and 471 ranks above the 90th Percentile, a whopping 674 of our students were successful in GATE 2003.

AIEEE 2004

Your gateway to the National Institutes of Technology

All the Regional Engineering Colleges have been upgraded to National Institutes of Technology and accorded the status of Deemed Universities. And, admission to all of them, as well as to many other institutions of specialized engineering education, will be on the basis of the AIEEE [All India Engineering Entrance Examination].

Now, who can equip you for success in this highly competitive exam, better than Brilliant Tutorials – a 30-year veteran who has helped produce thousands of winners and hundreds of top-rankers in competitive entrance exams all over India.

Course Highlights:

• 8 sets of lesson material and assignments • 3 Postal Tests in each subject • A ready-reference compendium of important formulae, equations and data in Maths, Physics and Chemistry • 4 National Sit-down Tests at 25 centres across the country • 4 Home-based Mock Test Papers • Doubt Letter Scheme

Admission open, Write, call or fax for free prospectus

BRILLIANT® TUTORIALS

Box: 4996-YOH 12, Masilamani Street, T. Nagar, Chennai-600 017. Ph: 24342099 (4 lines) Fax: 24343829
e-mail: enquiries@brilliant-tutorials.com

ADMISSION ALSO OPEN FOR THE FOLLOWING POSTAL COURSES FROM BRILLIANT

IIT-JEE 2004, 2005 & beyond • MBBS Ent. 2004, 2005 & beyond • MBA Ent. 2004 • MCA Ent. 2004 • IAS 2004 • IES 2004 • CSIR-UGC / UGC (NET) JRF/L Exams. Dec. '03, June '04 • AMIE Section A, B Exams. Dec. 2003, June 2004 • GRE, TOEFL, BANKING • GEOLOGISTS' Exam. 2003 (Category 1) to be conducted by UPSC in Nov. 2003

STALWARTS COMBINE TO FORM THE BEST EVER TEAM

हिन्दी माध्यम में

IAS PRELIM-CUM-MAIN

GS Training Programme

Complete Solution for the revised Course in GS

With the option of Flexi Modules

सिविल–सेवा व राज्य सेवा परीक्षा में सामान्य अध्ययन विषय के बदलते स्वरूप व उनकी उपादेयता को देखते हुए हमने सामान्य अध्ययन के लिए एक अलग शाखा **Indian School of General Studies (ISGS)** की स्थापना की है जो सिर्फ 'सामान्य अध्ययन प्रशिक्षण कार्यक्रम' को समर्पित है। इस शाखा को देश के प्रख्यात IAS TRAINING संस्थानों व विख्यात शिक्षकों का सहयोग एवं समर्थन प्राप्त है। यह शाखा सामान्य अध्ययन संबंधित सभी प्रकार के अनुसंधान और विकास में सतत् कार्यशील है।

हमारी योजना ● 400 घंटे क्लासरूम प्रशिक्षण ● पूरे दो दिनों का परिवर्तनकारी वर्कशॉप ● संबंधित क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक ● पूर्ण परिमार्जित अध्ययन सामग्री ● निरन्तर परीक्षण (Test) व्यवस्था ● फ्लेक्सी मॉड्यूल विकल्प ● निबंध लेखन अभ्यास

विशेष योजना **Shashank Atom, Jojo Mathews** व **Manoj K. Singh** द्वारा हमारे विद्यार्थियों के लिए समय-समय पर कार्यशाला।

हमारी GS Team

● इतिहास व संस्कृति-अनुभवी विशेषज्ञों की टीम ● विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी/सांख्यिकी **Jojo Mathews** *(Director-ALS, Interactions, Associate Editor- Competition Wizard)* ● निबंध एवं पर्यावरण संबंधी मुद्दे - **Shashank Atom** *(Director-ALS, Interactions, Chief Editor- Competition Wizard)* ● भारतीय राजव्यवस्था- **Manoj K Singh**- *(Director-ALS, YD Misra's IAS, Interactions, MIPS Education)* व मनोज सोमवंशी ● भारतीय अर्थव्यवस्था - प्रशान्त कु. झा (105th Rank holder in IAS 2002 Result) ● भूगोल आलोक शर्मा व महेश कुमार बर्णवाल - (भूगोलः एक समग्र अध्ययन के लेखक व १९९७ के सफल प्रत्याशी) ● सांख्यिकी, मानसिक योग्यता, सा. विज्ञान - ए. के. सिंह *(Director- Institute of Mathematical Sciences)*, विजय कुमार व अन्य विशेषज्ञ ● सामाजिक मुद्दे रंजना सबरवाल - (Sociology Course Director at MIPS) व अन्य ● समसामयिकी - **Jojo Mathews**, ए. झा, सुप्रीयो एवं मनोज कु. सिंह

पत्राचार कार्यक्रम शुल्क केवल **1800** रू (कुल **150** सीट पत्राचार कार्यक्रम हेतु)।

For prospectus & application form please send Rs 50 by MO/DD in favour of **Alternative Learning Systems (P) Ltd** payable at Delhi

GS Programme Director: **Manoj K. Singh**

Director- *ALS Pvt Ltd, Y D Misra's IAS, Interactions, MIPS Education, ISGS*

Special Concession for SC/ST Candidates

Alternative Learning Systems (p) Ltd

ALS Alternative Learning Systems

Corporate Office: **ALS Pvt Ltd**, B-19, ALS House, Commercial Complex, Dr Mukherjee Nagar, Delhi-110009.

Ph: 27651700, 27651110, 27652738. Cell: 9810345023. FAX: 27653714

MIPS EDUCATION A Division of ALS

बच्चों की भाषा में लिखा गया विज्ञान साहित्य

○ प्रकाश मनु

आज का युग 'विज्ञान युग' है और बिना अच्छे विज्ञान साहित्य के, कोई भाषा अपने को मुकम्मल नहीं मान सकती। विज्ञान साहित्य आज की जरूरत है और चुनौती भी! लेकिन बच्चों के लिए बच्चों की भाषा में विज्ञान साहित्य लिखना कहीं ज्यादा बड़ी चुनौती है। विज्ञान लेखक का एक–एक शब्द सधा हुआ होना चाहिए, ताकि वह उसी जरूरत और मंतव्य को पूरा करे, जो लेखक के मन में है। वरना अर्थ का अनर्थ होते देर नहीं लगेगी।

आज का युग 'विज्ञान युग' है और बिना अच्छे विज्ञान साहित्य के, कोई भाषा अपने को मुकम्मल नहीं मान सकती। विज्ञान साहित्य आज की जरूरत है और चुनौती भी! लेकिन बच्चों के लिए बच्चों की भाषा में विज्ञान साहित्य लिखना कहीं ज्यादा बड़ी चुनौती है। इसलिए कि एक ओर यहां विज्ञान के बहुत गहरे और प्रामाणिक अध्ययन मनन की दरकार है, तो दूसरी ओर उस बहुत जाने हुए को एकदम पचाकर, बहुत सीधे–सादे अल्फाज़ और दिलचस्प अंदाज में बच्चों के लिए पेश करने की जरूरत है। यह एक नाजुक मसला है और विषय की गंभीरता और शैली की रोचकता के बीच संतुलन साधना कई बार बड़ा मुश्किल हो जाता है। लेकिन यहीं किसी लेखक की असली कला और हुनर की परख होती है, उसके सामर्थ्य और भाषा शक्ति की भी। बच्चों की कथा–कहानियों में जिस तरह कल्पना की लहरों पर सवार होकर बहने और कई बार तो 'गप्पबाजी' की भी खुली और खिलंदड़ी छूट मिल जाती है, वैसा यहां नहीं है। विज्ञान लेखक का एक–एक शब्द सधा हुआ होना चाहिए, ताकि वह उसी जरूरत और मंतव्य को पूरा करे, जो लेखक के मन में है। वरना अर्थ का अनर्थ होते देर नहीं लगेगी।

दूसरी ओर बच्चों के लिए लिखे गए विज्ञान साहित्य के साथ एक बड़ी चुनौती यह जुड़ी है कि उसे रोज इस्तेमाल में आने वाले मोटे–मोटे शब्दों में ही विज्ञान की बड़ी–बड़ी, पेचीदा बातों को समेटना है। बच्चों के लिए लिखा गया विज्ञान साहित्य पेचीदा और उलझाऊ किस्म का नहीं, बच्चों की कथा–कहानी की तरह सरस और मनोज्ञ होना चाहिए, जिसे पढ़ने का उत्साह बच्चों में खुद–ब–खुद हो और वे ज्ञान–विज्ञान से जुड़ी इन रोचक किताबों के पास खिंचे आएं। हम सभी यह जानते हैं कि बच्चों के लिए लिखी गई किसी अच्छी कविता या कहानी का सबसे बड़ा गुण यह होता है कि बच्चों को उसे पढ़ने के लिए बार–बार कहना नहीं पड़ता। किसी भी सुंदर कविता या कहानी की किताब देखकर बच्चे का मन खुद–ब–खुद उसे पढ़ने के लिए ललकता है। कहना न होगा कि बच्चों के लिए लिखे गए विज्ञान साहित्य में भी यही खासियत होती है। वह प्रामाणिक होना चाहिए, दिलचस्प भी, और कुछ इस ढंग से लिखा गया हो कि बच्चे के भी नया सोचने और समझने, जानने की इच्छा जाग्रत हो और उसकी कल्पना और जिज्ञासा के बंद कपाट खुलने लगें।

विदेशी भाषाओं में बच्चों को विज्ञान की जानकारी देने वाली किताबें इतनी खूबसूरत भाषा में और इतने खूबसूरत ढंग से छापी जाती हैं कि वे बच्चों को खेल–खिलौनों से कम नहीं लगती। हिंदी के लेखकों–प्रकाशकों में यह चेतना नजर नहीं आती।

लेकिन इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण काम कतई नहीं हुआ, यह कहना भी गलत होगा। बच्चों की भाषा में ही बच्चों को विज्ञान की रोचक जानकारियां और सही दृष्टि देने वाली कई किताबें इधर देखने को मिली है। इनमें मीर नजाबत अली की किताब *विश्व को बदल देने वाले आविष्कार* और जमाल आरा की *पक्षी जगत* इस लिहाज से अव्वल हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट ने 'नेहरू बाल पुस्तकालय सीरीज' में इन्हें छापा है। *विश्व को बदल देने वाले आविष्कार* पुस्तक दो खंडों में है। पहले खंड में मीर नजाबत अली *पहिया, भाप का इंजन, माइक्रोस्कोप, मुद्रण* जैसी चीजों पर बिल्कुल आम बोलचाल की भाषा में चर्चा करते हुए बच्चों को यह

बताते हैं कि ऊपर से साधारण लगने वाली इन चीजों ने किस तरह से हमारी दुनिया में एक क्रांति कर डाली है। तथा इनके कारण मनुष्य का जीवन कितना आसान और सुविधाजनक हो गया है। इसी पुस्तक के दूसरे भाग में डायनमो, टेलीग्राफ, परमाणु ऊर्जा और इलेक्ट्रानिकी के संबंध में हुई खोजों की खासा रोमांचक वर्णन है, जिसे पढ़कर पता लगता है कि आज के मनुष्य की विजय गाथा ज्ञान–विज्ञान के किन–किन पड़ावों और नई–नई खोजों की जबर्दस्त उत्तेजनाओं से होकर गुजरी है।

जमाल आरा की पुस्तक *पक्षी–जगत* का लहजा भी करीब–करीब ऐसा ही है। जमाल आरा 'पक्षी जगत' में हमें पक्षिओं की अनोखी दुनिया में ले जाते हैं और हमें किस्म–किस्म के रंग, आकारों और अंदाजों वाले पक्षियों से मिलवाते हैं। यों तो पक्षियों और उनकी आश्चर्यजनक रंगारंग दुनिया के बारे में बहुत से लेखकों ने लिखा है, पर जमाल आरा की इस पुस्तक की खासियत यह है कि उन्होंने अलग–अलग पक्षियों की किस्में और स्वभाव बताने के साथ–साथ, उनके बारे में मोटी–मोटी बातें भी बड़े दिलचस्प अंदाज में बताई हैं। पक्षियों की चोंचें एक दूसरे से कितनी अलग और विचित्र होती हैं तथा उनसे पक्षियों की कैसे पहचान की जा सकती है? पक्षियों की टांगों और पंजों का अध्ययन कैसे करना चाहिए। उनके अंडों को कैसे पहचाना जा सकता है। पक्षियों के घोंसले, आहार आदि के बारे में मोटी–मोटी जानकारियां कैसे इकट्ठी की जाएं? पक्षियों का अध्ययन करते समय डायरी में कौन–कौन–सी बातें कैसे लिखनी चाहिए? तथा पक्षियों की प्रवास यात्राएं कब और क्यों होती हैं? आदि बातों के बारे में जमाल आरा की यह पुस्तक एक जरूरी 'गाइड बुक' की तरह है।

सुरजीत की पुस्तक *हमारे विचित्र जीव–जंतु* भी खासी मजेदार किताब है। इसमें सुरजीत ने बया, नीली तितली, बिच्छू, जिराफ, लोमड़ी, काक्रोच वुलवेरीन, डॉल्फिन, ऊदबिलाव के बारे में काफी दिलचस्प और विस्तृत जानकारी दी है। न सिर्फ सुरजीत की भाषा बच्चों के लिए बहुत मोहक और चित्ताकर्षक है, बल्कि वे इन जानवरों के बारे में जो जानकारियां संजोते हैं, वे भी मन में नक्श हो जाने वाली हैं।

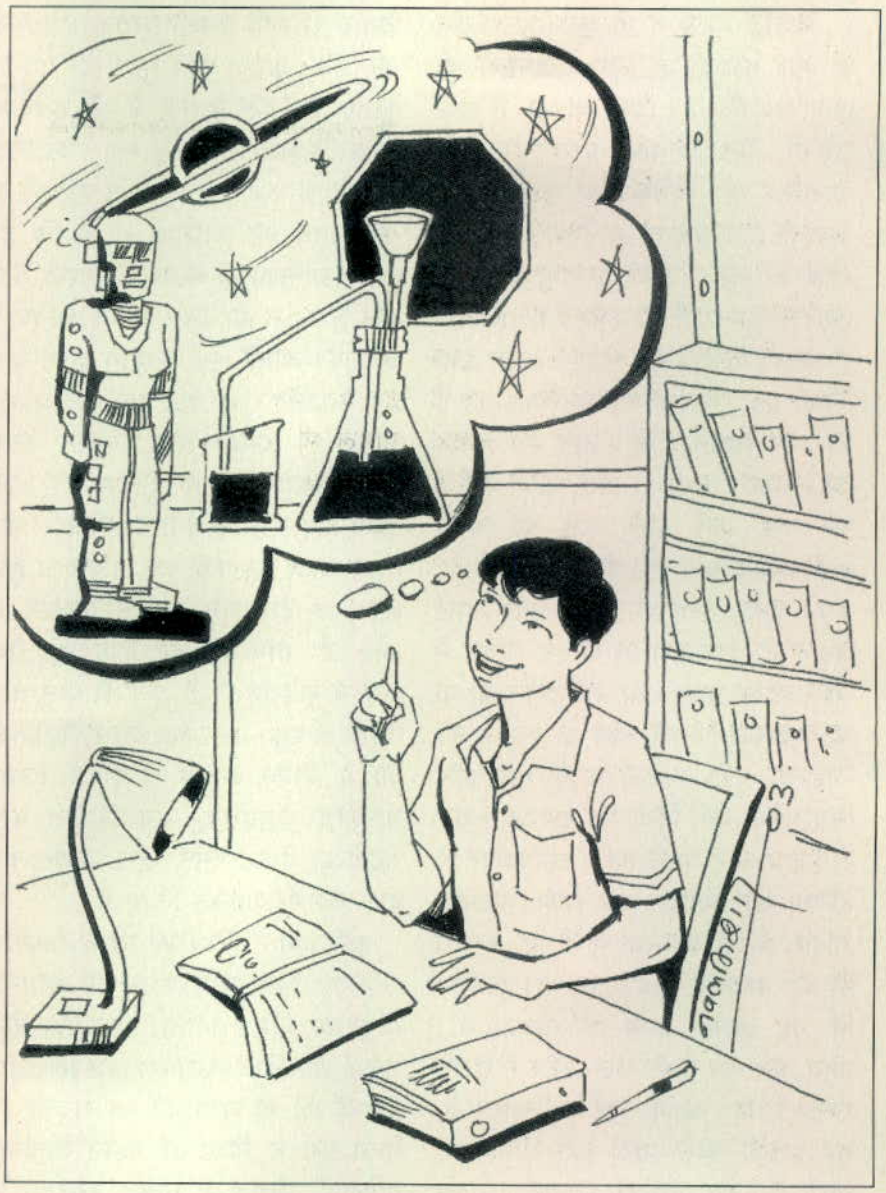

इसी तरह सुरजीत की संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के जीवन और आविष्कारों पर लिखी गई किताब *प्रसिद्ध वैज्ञानिक और उनके आविष्कार* एक अद्भुत किताब है। बच्चों के लिए वैज्ञानिकों की अच्छी जीवनियां कैसे लिखी जाएं, इस लिहाज से सुरजीत की यह पुस्तक एक आदर्श पुस्तक है, जिसमें न सिर्फ महान वैज्ञानिकों की जीवन कथाएं पढ़ने को मिलती हैं, बल्कि यह भी समझ में आता है कि उनमें इन्सानियत की भलाई की, कुछ नया खोज दिखाने और बड़ा काम करने की तड़प किस हद तक थी। और उसके लिए जीवन भर उन्होंने कैसी अंतहीन तकलीफें झेलीं, लेकिन अपना रास्ता नहीं छोड़ा।

श्रीकांत व्यास ने भी कुछ अलग ढंग से बाल पाठकों के लिए वैज्ञानिकों की जीवनियां लिखीं। 'शिक्षा भारती' से छपी उनकी तीन किताबें *ग्रामोफोन और चलचित्र के आविष्कारक एडीसन की कहानी, टेलीग्राफ के आविष्कारक फिनले मोर्स की कहानी* तथा *परमाणु शक्ति के आविष्कारक फेर्मी की कहानी* इस लिहाज से अनूठी किताबें हैं। श्रीकांत व्यास द्वारा लिखी इन पुस्तकों की खासियत यह है कि इनमें वैज्ञानिकों के बचपन और स्वभाव का अध्ययन करके वे बातें खोजी गई हैं जो उन्हें आने वाले कल का महान आविष्कारक बना रही थीं। एडीसन अगर अपने तमाम तरह के प्रयोगों और खतरे उठाने के दुस्साहस के कारण जीवन में आगे बढ़ता चला गया, तो टेलीग्राफ के आविष्कारक फिनले मोर्स के बचपन की जिज्ञासा–वृत्ति ने उसे इतना धुनी और विचारशील बना दिया कि वह अपने ढंग से जिया और अपने महान आविष्कार से दुनिया को प्रभावित कर सका। परमाणु शक्ति के आविष्कारक फेर्मी का बचपन भी और बच्चों से कुछ अलग था। इसलिए कि वह खेलते समय भी सोचता था। बहुत कम उम्र में ही खेल–खेल में उसने समझ लिया था कि जब लट्टू नाचता है, तब इसकी कील यानी धुरी सीधी क्यों रहती हैं? और जैसे ही इसका नाच बंद होता है, लट्टू गिर पड़ता है। फेर्मी समझ गया था कि लट्टू की कील सीधी इसलिए रहती है कि यह नाचता रहता है। पृथ्वी और चांद सितारे भी कुछ–कुछ इसी तरह अपनी धुरी पर नाचते हैं। श्रीकांत व्यास की ये किताबें इतने खूबसूरत ढंग से छपी और लिखी गई हैं कि इन्हें पढ़ने के बाद यह कहना गलत होगा कि हिंदी में बच्चों के लिए अच्छा विज्ञान साहित्य नहीं लिखा जा रहा।

हरिकृष्ण देवसरे ने भी वैज्ञानिकों के जीवन और उनके आविष्कारों को लेकर कई उम्दा किताबें लिखी हैं। इनमें प्रकाशन विभाग से छपी उनकी पुस्तक *वैज्ञानिकों की जीवन कथाएं* बहुत सुंदर और पठनीय पुस्तक है। इस पुस्तक में डॉ. हरिकृष्ण देवसरे ने विश्व के ग्यारह महान वैज्ञानिकों की जीवन कथाएं देकर बाल पाठकों को यह बातने की कोशिश की है कि इन धुनी वैज्ञानिकों के भीतर की गहरी तड़प और लगन ने ही उनसे महान आविष्कार करवाए। अपनी धुन में काम करने वाले इन वैज्ञानिकों को कई बार सनकी और पागल भी समझा गया, लेकिन उनके महान आविष्कारों ने दुनिया की आंखें खोल दीं। अगर ये धुनी वैज्ञानिक न होते तो न आज रेलगाड़ी का आविष्कार हुआ होता, न टेलिफोन का, न बिजली के बल्ब और ग्रामोफोन का आविष्कार होता और न रेडियम जैसी अनोखी धातु का। देवसरे ने बहुत प्रामाणिक ढंग से वैज्ञानिकों की ये जीवन कथाएं लिखी हैं, जिनमें भारतीय वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु, चंद्रशेखर वेंकट रमन, और सत्येन्द्रनाथ बोस को भी शामिल किया है।

इसी क्रम में *विश्व की महान वैज्ञानिक महिलाएं* (चित्रा गर्ग), *भारत की वैज्ञानिक विभूतियां* (दीक्षा बिष्ट), और *साहसिक खोजें, साहसिक कहानियां* (व्यथित हृदय) पुस्तकें की भी चर्चा की जा सकती है। चित्रा गर्ग ने 'विश्व की महान वैज्ञानिक महिलाएं' पुस्तक में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होने वाली विश्व की सात प्रसिद्ध वैज्ञानिक महिलाओं के बारे में लिखा है।

दीक्षा विष्ट की पुस्तक *'भारत की वैज्ञानिक विभूतियां'* किशोर पाठकों को कहीं अधिक अच्छी लगेगी। इसमें भारत के विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक चन्द्रशेखर वेंकट रामन, सत्येन्द्रनाथ बोस, जगदीशचन्द्र बोस और होमी जहांगीर भाभा की जीवन कथाएं है, तो शांतिस्वरूप भटनागर, बीरबल साहनी, प्रशांत चंद्र महालानोबिस, विक्रम सारा भाई, जे.बी. एस हाल्डेन तथा मनाली कलात, वेणु बप्पू जैसे कई अन्य वैज्ञानिकों के जीवन–वृत्तांत भी, जिनकी अथक धुन के कारण आज भारत तेजी से विज्ञान की नई उपलब्धियों की ओर बढ़ रहा है। दीक्षा बिष्ट ने पुस्तक लिखने में स्पष्ट ही, बहुत श्रम किया है और भारतीय वैज्ञानिकों के बारे में बहुत अच्छी, प्रामाणिक जानकारियां एकत्र की हैं।

इसी क्रम में हिंदी के मूर्धन्य लेखक व्यथित हृदय की अनोखी पुस्तक *साहसिक खोजें, साहसिक कहानियां* की भी चर्चा की जा सकती है। पुस्तक में मनुष्य की साहसिक यात्राओं का वर्णन है, जिनके कारण आज हम सभ्यता के एक नए चरण तक पहुंच पाए हैं। मानवता इन साहसिक खोजों की आभारी है। यह दीगर बात है कि जब अलग–अलग देशों के इन धुनी यात्रियों ने अपने–अपने समय में इन यात्राओं को प्रारंभ किया, तो उनकी मदद करने वाले बहुत कम लोग थे। उन्हें जिस तरह की मुश्किलों और बाधाओं का सामना करना पड़ा, उसे याद करके आज भी दिल दहल उठता है। इनमें भारत की खोज में निकले अनोखे यात्री कोलंबस की कथा तो है ही, जो भारत की बजाय अमेरिका जा पहुंचा था और उसी को भारत समझ बैठा था। इसके अलावा उस साहसी यात्री मैगलिन की कथा भी है, जो यह साबित करने के लिए कि पृथ्वी गोल है, अपने प्राणों को संकट में डालकर एक खतरनाक समुद्री यात्रा पर निकला। पर अफसोस, बीच यात्रा में ही उसे प्राणों से हाथ धोना पड़ा। तब उसकी अधूरी यात्रा उसके कमांडर डैल्केनो ने पूरी की। इसी तरह उत्तरी ध्रुव की कठिन और चुनौती भरी यात्रा करने वाले साहसी यात्री नैनसन और पीरी, नील नदी का उद्‌गम खोजने निकले जेम्स ब्रूस, दक्षिणी ध्रुव की यात्रा करके वहां अपने विजई पदचिह्न छोड़ने वाले एमेंडसन और स्कॉट की रोमांचित करने वाली यात्राओं का वर्णन भी पुस्तक में है।

बाल विज्ञान साहित्य का एक बड़ा

प्रयोजन बच्चों को उनके आस पास के परिवेश तथा नए समाज की रचना करने वाले प्रमुख वैज्ञानिक संसाधनों के बारे में बड़े आसान और दिलचस्प ढंग से जानकारी देने की है। यह जानकारी रूखे–सूखे तथ्यों वाली न होकर ऐसी होनी चाहिए जो बच्चे के मन, कल्पनाशीलता और समूचे व्यक्तित्व में रच–बस जाए तथा उनके भीतर नई–नई जिज्ञासाएं उत्पन्न हों। बच्चों तक इन सामान्य जानकारियों को पहुंचाने का सबसे अच्छा ढंग कथात्मक ढंग है। यानी चीजें खुद अपनी कहानी सुनाती हैं। हिंदी के बाल विज्ञान साहित्य में कुछ इस तरह की अच्छी कोशिशें भी हुई हैं। तुरशन पाल पाठक की *मैं हूं दवा, मैं हूं पानी, मैं हूं पौष्टिक आहार, मैं हूं इलैक्ट्रॉनिकी,* श्याम सुंदर शर्मा की *मैं हूं चुंबक, मैं हूं अंतरिक्ष, मैं हूं कंप्यूटर,* राजीव गर्ग की *मैं हूं रोबोट* तथा धुरेन्द्र कुमार गर्ग की *मैं हूं बिजली* इसी ढंग की पुस्तकें हैं।

तुरशन पाल पाठक की *भारत के उपग्रह* तथा श्रीकृष्ण की *विज्ञान की मजेदार बातें* भी इसी ढंग की पुस्तकें हैं, जो बच्चों को ज्ञान–विज्ञान की नई बातें बताती हैं। इनमें तुरशन पाल पाठक की 'भारत के उपग्रह' अच्छी और नए ढंग की पुस्तक है। उपग्रह कैसे छोड़े जाते हैं और उनका उद्देश्य क्या है? इस बारे में बड़े रोचक ढंग से जानकारी इस किताब में दी गई है। खासकर भारत के उपग्रहों का उद्देश्य शांति और जनोपयोगी कार्यों के लिए है। आर्य भट्ट, भास्कर प्रथम और द्वितीय, एपल, रोहिणी, इनसैट 1–ए, एनसैट 1–बी, इनसैट 1–सी तथा आई.आर.एस 1–ए उपग्रहों के बारे में तुरशन पाल पाठक बच्चों को अच्छी जानकारी उपलब्ध कराते हैं। यहीं हिंदी के प्रसिद्ध विज्ञान लेखकों मिशचंद्र शर्मा और कुलदीप शर्मा के लेखों का भी जिक्र किया जा सकता है। हिंदी की प्रायः सभी प्रतिष्ठित पत्र– पत्रिकाओं में एकदम नए अंदाज और दिलचस्प भाषा में लिखे उनके लेख पढ़ने को मिलते हैं। वर्षों तक बाल पत्रिका 'नंदन' के संपादक रहे जय प्रकाश भारती ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। अग्नि मिसाइल पर लिखी नई *अग्नि* उनकी उम्दा किताब है।

बाल पाठकों के लिए विज्ञान की कुछ स्तरीय पुस्तकें राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने भी छापी है। इनमें से कुछ उल्लेखनीय किताबें हैं – *समुद्रः कुबेर का एक भंडार* (प्रभातनाथ मुखर्जी), *तारों की जीवन गाथा* (जयंत विष्णु नार्लीकर), *ब्रह्मांड का रहस्य* (के. पी. सिन्हा और ई.ए. लार्ड), *जीवाणुओं की दुनिया और हम* (दयाशंकर मिश्र), *तत्व–नए–पुराने* (रामचरण मेहरोत्रा और रमाशंकर राय) तथा *जैव तकनीक* (राजकुमार बंसल)। पर इन किताबों के साथ मुश्किल यह है कि ये अध्यापकीय या अकादमिक अधिक हो गई हैं और बच्चों के मन में 'विज्ञान पढ़ने का सच्चा आनंद' उत्पन्न नहीं करती। आजकल बच्चों के लिए विज्ञान–लेखन का एक ही मतलब हो सकता है कि बच्चों को खेल–खेल में, दिलचस्प अंदाज में विज्ञान की बातें, नई–नई खोजों और उपलब्धियों के बारे में बताया जाए।

बाल विज्ञान साहित्य में विज्ञान कथाओं का अपना योगदान है। विज्ञान कथाओं की खासियत यह है कि वे वैज्ञानिक सत्यों और उपलब्धियों को रोचक कथाओं और रहस्यपूर्ण फैंटेसीज़ की शक्ल में प्रस्तुत करती हैं। इससे वे गूढ़, गंभीर वैज्ञानिक सत्य बच्चों को अपने निकट और सरस जान पड़ते हैं तथा उनकी स्मृति उनके समूचे व्यक्तित्व में व्याप जाती है।

बाल पाठकों को जीव–जंतुओं, पक्षियों और वनस्पति जगत के बारे में जानकारी देने वाली किताबें भी हिंदी में इधर तेजी से आ रही हैं। इनमें सभी बच्चों के लिहाज से आकर्षक और उपयोगी नहीं है। बच्चों को यहां–वहां से टूटी–फुटी, आधी–अधूरी जानकारी देने वाली किताबें भी कम नहीं हैं। अक्सर दो–चार किताबें इधर–उधर से पढ़कर, उन्हीं में से एक नई किताब बना लेने का बचकाना उत्साह बहुतेरे नए लेखकों में दिखाई पड़ता है। खुद गहन अध्ययन और खोजबीन करके बच्चों को मौलिक ढंग से कुछ नया और आकर्षक देने का चाव कम ही देखने में आता है।

तो भी, इस दिशा में कुछ छिटपुट अच्छे स्तरीय काम हुए हैं। 'विद्या विहार' से छपी एक सिरीज़ में *जीव–जंतुओं की आश्चर्यजनक बातें* (हेमललित), *पक्षियों की आश्चर्यजनक बातें* (ललित नारायण उपाध्याय), *कीट–पतंगों की आश्चर्य–जनक बातें* (रजनीश प्रकाश), *वनस्पति जगत की आश्चर्य जनक बातें* (ललित नारायण उपाध्याय), *पेड़–पौधों की आश्चर्य जनक बातें* (कुमार मनीश) ढंग से पढ़ने को मिल जाती हैं।

पृथ्वीनाथ पांडेय की पुस्तक *पेड़ पौधों की विचित्र दुनिया* और यशवंत कोठारी की *सांप : हमारे मित्र* भी इसी ढंग की बालोपयोगी किताबें हैं। इनमें पृथ्वीनाथ पांडेय की 'पेड़–पौधों की विचित्र दुनिया' बच्चों को कहीं अधिक दिलचस्प लगेगी। पुस्तक में दूध देने वाले वृक्ष, जल बरसाने वाले वृक्ष, यहां तक कि हंसने और रोने वाले वृक्षों की भी चर्चा है। एक ऐसी घटना का भी वर्णन है, जिसमें पौधे ने अपनी अदृश्य आंखों से हत्यारे को पहचान लिया। दो पौधों में से एक पौधे को गमले से उखाड़कर, उस पौधे की हत्या जिस

आदमी ने की थी, दूसरे पौधे ने सामने पड़ते ही उसे पहचान लिया और यों 'पौधे का हत्यारा' पकड़ में आ गया। इसी तरह पृथ्वीनाथ पांडेय ने अपनी पुस्तक में कनाडा के रोशनी देने वाले वृक्ष और उत्तरी अमेरीका के उस गुस्सैल वृक्ष की भी एक झलक देने की कोशिश की है, जिसके पत्तों की खड़खड़ाहट ऐसी होती है, मानो वृक्ष काफी गुस्से में हैं।

रामेश बेदी की किताबें 'हमारे प्यारे जीव' 'जंगल के दुलारे जीव' तथा 'जंगल की बातें' के जिक्र के बगैर यह चर्चा पूरी नहीं हो सकती। इसलिए कि रामेश बेदी उन लेखको में से थे, जिन्होंने तमाम खतरे उठाकर जीव–जंतुओं, उनकी आदतों और स्वभाव को बड़े निकट से जाना। इस लिहाज से वन्य जीवों तथा अन्य जीव–जंतुओं पर लिखने वाले लेखकों में रामेश बेदी अन्यतम हैं, जिन्हें उनके आसाधरण कामों के लिए बड़े आदर से याद किया जाएगा।

हमारे प्यारे जीव पुस्तक में रामेश बेदी अपनी पालतू नेवला रानी, गिरगिट, अजगर, सफेद शेर, चूहों, टिट्डे, अप्सु और बंदरिया के बारे में बड़े ही दिलचस्प ढंग से लिखते हैं। इनमें 'मैंने पाली नेवला रानी', 'बेरहम हाथों के बचाने के बाद', 'गिरगिटा : हमारे ड्राइंग रूम की शोभा', 'किस्सा सफेद शेर का' बड़े ही खूबसूरत और बार–बार पढ़ने लायक अध्याय हैं। इनसे पता चलता है कि शेर हो, अजगर या गिरगिट, सभी मनुष्य के प्यार के वश में हो जाते हैं और तब उनका भयावह रूप कहीं बिला जाता है। रामेश बेदी की *जंगल के दुलारे जीव* भी इसी किस्म की पुस्तंक है। इसमें रट्टू तोते, मैना, सारस जैसे पक्षियों और शेर, पंडा आदि के साथ जिए गए रामेश बेदी के स्नेहिल क्षण बहुत जीवंत होकर सामने आते हैं।

रामेश बेदी की तीसरी किताब *जंगल की बातें* में वे विवरण ज्यादा लंबे नहीं हैं। लेकिन जंगल में जिन वन्य पशुओं से फोटोग्राफी आदि के सिलसिले में उनका सामना हुआ, उनका वर्णन इतना रोमांचक है कि पाठक पूरी किताब पढ़े बगैर उसे छोड़ नहीं पाएंगे।

बाल विज्ञान साहित्य में विज्ञान कथाओं का अपना योगदान है। विज्ञान कथाओं की खासियत यह है कि वे वैज्ञानिक सत्यों और उपलब्धियों को रोचक कथाओं और रहस्यपूर्ण फैंटेसीज़ की शक्ल में प्रस्तुत करती हैं। इससे वे गूढ़, गंभीर वैज्ञानिक सत्य बच्चों को अपने निकट और सरस जान पड़ते हैं तथा उनकी स्मृति उनके समूचे व्यक्तित्व में व्याप जाती है। एक बार पढ़ लेने के बाद बच्चे इन विज्ञान कथाओं को भूलते नहीं हैं।

हिन्दी में विज्ञान कथाओं के नाम पर जासूसी वृत्तांत और अवास्तव तिलिस्म परोसने का चस्का नया नहीं है। ऐसी हल्की और चटखारेदार विज्ञान कथाएं विज्ञान की मजाक ही हैं। पर इसके साथ ही हिंदी में अच्छी वैज्ञानिक कथाएं भी निरंतर लिखी जाती हैं। प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका *सरस्वती* के प्रकाशन के पहले वर्ष में ही केशव प्रसाद सिंह की विज्ञान कथा 'चन्द्रलोक की यात्रा' विज्ञान कथा छपी। बाद में डा. नवलबिहारी मिश्र की 'मंगलग्रह की यात्रा' भी *सरस्वती* में ही छपी। एक ओर राहुल सांकृत्यायन, डा. संपूर्णानंद और आचार्य चतुरसेन जैसे दिग्गजों ने विज्ञान कथाएं लिखीं, तो दूसरी ओर देवेन्द्र मेवाड़ी, हरीश गोयल, रमेश वर्मा, अरविंद मिश्र, विनीता सिंघल, विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी, कल्पना कुलश्रेष्ठ, लक्ष्मीनारायण कुशवाहा और डा. मनोज पटैरिया की सुंदर विज्ञान कथाएं पढ़ने को मिलती रहीं हैं।

जय प्रकाश भारती द्वारा संपादित पुस्तक *इक्कीसवीं सदी की श्रेष्ठ विज्ञान कथाएं* बच्चों की अच्छी विज्ञान कथाओं को संकलित करने की दिशा में अच्छा और सार्थक प्रयास है। इन विज्ञान कथाओं में हरीश गोयल अगर काल पात्र को लेकर विज्ञान कथा की फैंटेसी गढ़ते हैं, तो अरविंद मिश्र उस दिन की कल्पना करते है जबकि रोबर्ट आदमी की सत्ता को मानने से इनकार कर देगा। इस विज्ञान कथा में सारे रोबर्ट मिलकर विद्रोह कर देते हैं, ताकि वे मनुष्य के गुलाम न रहें, बल्कि रोबर्ट राज करें और आदमी को उनकी गुलामी करनी पड़े। जैसे ही लोगों को यह पता चला, हर ओर त्राहि–त्राहि मच गई। हर तरह के जरूरी प्रबंध किए गए। रोबर्ट को समर्पण करना पड़ा, लेकिन विद्रोह की चिन्गारियां उनके भीतर से गई नहीं।

इसी तरह रमेश सोमवंशी की *अंडे देने वाले मुर्गे*, विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी की *याददाश्त की चोरी*, विनीता सिंहल की *अपराधी कौन* और डा. मनोज पटैरिया की *प्रतिभा का गान* निःसंदेश सुंदर विज्ञान कथाएं हैं।

कुछ सुंदर विज्ञान कथाएं हरिकृष्ण देवसरे और शक्ति कुमार त्रिवेदी ने भी लिखी हैं। हरिकृष्ण देवसरे को तो एक से एक अनूठी विज्ञान कथाएं गढ़ने में महारत हासिल है। इनमें कोरी गप नहीं, बल्कि विज्ञान की नई से नई खोजों और अधुनातन जानकारियों के आधार पर एक से एक दिलचस्प और रोमांचक विज्ञान कथाएं बुनी गई हैं। पिछले दिनों सार्स रोग के संक्रमण को लेकर उनकी एक विज्ञान कथा पढ़ने को मिली। देवसरे की विज्ञान कथाओं में फैंटेसी है तो कथा कहने की उस्तादी भी। उनकी विज्ञान कथाएं सीधे–सीधे कोई सीख नहीं देतीं, पर बच्चों को ज्यादा सचेत, जागरूक और कल्पनाशील तो बनाती ही हैं।

शक्ति कुमार त्रिवेदी ने भी कई विज्ञान कथाएं लिखी हैं। *उड़नतश्तरियों का रोमांस* में त्रिवेदी की बीस विज्ञान कथाएं शामिल हैं। इनमें सभी विज्ञान कथाएं अच्छी नहीं हैं। कुछ तो विज्ञान की किसी खोज या वैज्ञानिक तथ्य को समझाने के लिए फार्मूलाबद्ध ढंग से गढ़ी गई लगती हैं।

इसीलिए इनमें कहानी का सच्चा आनंद नहीं आता। 'विज्ञापन का रोग', 'उड़न तश्तरियों का रोमांश', 'अनोखी खबर', 'हरे सूरज का देश', 'प्लूटो का लुप्त प्राणी', मिस्र का काला रथ', शक्ति कुमार त्रिवेदी की कुछ उम्दा विज्ञान कथाएं हैं।

हिंदी बाल साहित्य में अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं से अनूदित विज्ञान साहित्य की काफी छपा है। इनमें कई तो इतनी महत्वपूर्ण किताबें हैं कि उन्होंने बच्चों के लिए विज्ञान लेखन को अपने तईं खासा प्रभावित किया है।

इन किताबों में दिलीप एम. सालवी की *युग प्रवर्तक अविष्कार* बहुत महत्वपूर्ण पुस्तक है। चेतनक्रांति ने बहुत उम्दा ढंग से उनका हिन्दी अनुवाद किया है। भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित दिलीप एम. सालवी की इस पुस्तक की खासियत यह है कि यह हमें सिर्फ दुनिया के महान अविष्कारकों और उनके अविष्कारों के बारे में ही नहीं बताती, बल्कि उन अविष्कारों के पीछे कितना लंबा संघर्ष, कितने दुख, उपेक्षा और गर्दिश के दिनों का अनकहा इतिहास और कैसी अनवरत धुन छिपी है। जो वैज्ञानिकों को भी 'दुनिया के महान साधकों' की श्रेणी ले आती है – उस सबको भी पूरी शिद्धत से उजागर करने का प्रयास करती है। प्रिंटिंग प्रेस के अविष्कारक जोहानेस गुंटेनबर्ग, कृत्रिम रंगों के अविष्कारक विलियम हेनरी, कपास ओटनी के अविष्कारक इली व्हिटनी, रेलमार्ग के अविष्कारक जार्ज स्टीफेंसन, टर्बाइन के अविष्कारक चार्ल्स पारसन, रबर के अविष्कारक चार्ल्स गुडईयर, सिलाई मशीन के अविष्कारक एलियस होव, वायुपोत के अविष्कारक कांउट जैपलिन, टेलिविजन के अविष्कारक जार्ज बेयर्ड, मोटरकार के अविष्कारक हेनरी फोर्ड, बिजली के बल्व और फोनोग्राफ के अविष्कारक थामय एल्वा एडीसन, राडार के अविष्कारक राबर्ट वाट्सन, राकेट के अविष्कारक कोंस्तांतिन ई. सिओलकोवस्की, जेट विमान के अविष्कारक फ्रेंक वेटर, कम्प्यूटर के अविष्कारक चार्ल्स बैवेज तथा ट्रांजिस्टर के अविष्कारक विलियम शाकले के बारे में इस पुस्तक में पढ़ते हुए लगता है, मानो हम भी उड़कर उनके समय में जा पहुंचे हों और अपनी आंखों से महान अविष्कारों को जन्म लेता देख पा रहे हों और उन क्षणों में इन वैज्ञानिकों की आंखों में छाई खुशी की निर्मल चमक को भी।

अनूदित किताबों में एक और बेहद महत्वपूर्ण पुस्तक *सितारों की कहानी* है जो *आल अबाउट द स्टार्स* का हिन्दी अनुवाद है। अनुवाद केशन सागर ने किया है, जबकि मूल लेखक का नाम पुस्तक में कहीं नहीं है। पुस्तक का अनुवाद इतनी खूबसूरत और खिंलदड़ी भाषा में हुआ है तथा पुस्तक में सितारों के बारे में इतनी दिलचस्प जानकारी दी गई है कि निसंकोच कहा जा सकता है कि हिन्दी में फिलवक्त तारों के बारे में बताने वाली इससे अच्छी कोई किताब नहीं है। अक्सर लोग पूछते हैं कि बच्चों के लिए विज्ञान लेखन की भाषा कैसी हो? इस सवाल के लिए विज्ञान लेखन कैसा होना चाहिए, जरा मुश्किल काम है पर अगर यह पुस्तक आपके पास है तो आप बहुत आसानी से इस सवाल का जवाब दे सकते हैं। एक वाक्य में कहना हो तो बच्चों के लिए विज्ञान लेखन की भाषा और अंदाज ऐसा होना चाहिए, जैसा 'सितारों की कहानी' में हैं यह इस मामले में आदर्श और अद्वितीय किताब है, जिसे पढ़े बगैर बच्चे कल्पना ही नहीं कर सकते कि विज्ञान इतने दिलचस्प ढंग से भी पढ़ाया जा सकता है और उसमें इतना रस, इतना आस्वाद भी होता है।

हिन्दी में अनूदित विज्ञान लेखन में 'स्कोलास्टिक' से छपी चार किताबों की श्रृंखला का भी अपना योगदान है। ये किताबें हैं – *विज्ञान के आश्चर्य* (मैल्विन बर्जर), *विज्ञान के अचरज* (सैंट्रा मार्षेल), *विज्ञान : 150 तथ्य जिन पर आप यकीन नहीं करेंगे* (ह्यू वेस्टर्प) तथा *झटपट विज्ञान* (हरमान और नीना श्नायडेर) चारों किताबों का अनुवाद अरविंद गुप्ता ने खासी रोचक और हल्की–फुल्की भाषा में किया है। इन किताबों की खासियत यह है कि विज्ञान के बारे में बगैर कोई भारी भरकम गंभीरता चस्पा किए, एकदम खेल–खेल में विज्ञान की ऐसी बातें बता दी गई हैं' जो हमारे जीवन से सीधे–सीधे जुड़ी हैं और हमें अपने आस पास की दुनिया को कहीं अधिक बेहतर ढंग से देखने और सोचने–समझने के लिए तैयार करती हैं।

चारों किताबों में एक कोशिश यह भी है कि विज्ञान की रोचक बातों को बच्चों के आगे रखा जाए, जिससे उनके भीतर विज्ञान पढ़ने की ललक पैदा हो। इसके लिए छोटे–छोटे आसान प्रयोग करने के लिए भी ये पुस्तकें बाल पाठकों को प्रेरित करती हैं। इनमें अपेक्षाकृत छोटी पुस्तक 'विज्ञान : 150 तथ्य जिन पर आप यकीन नहीं करेंगे' की खासियत यह है कि इसमें विज्ञान की आश्यर्चजनक बातों को मजेदार ढंग से दो–दो, चार–चार, पंक्तियों में कह दिया गया है। उसी के अनुरूप मजेदार चित्र भी हैं, जिससे कुल मिलाकर पुस्तक का प्रभाव बच्चे के मन से कभी उतरता नहीं है।

अलबत्ता हिन्दी में नए नजरिए से लिखी गई ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकें अब दिखाई देने लगी हैं। इसे भविष्य के विज्ञान लेखन के लिए एक शुभ संकेत मानना चाहिए। हालांकि यह हकीकत तो अपनी जगह है ही कि अभी इस ओर लिखने और काम करने के लिए लगभग पूरा मैदान खाली है और जरूरत ऐसे लेखकों की है, जो गंभीरता की खोल उतरकर, बच्चों के साथ खेलते हुए, खेल–खेल में ही उनके लिए विज्ञान की उक्त किताबें लिखें। ❑

(जाने माने बाल–साहित्य विशेषज्ञ)

लोक प्रशासन
(हिन्दी माध्यम)

By **Atul Lohiya**

(A person who believes in hard work and scientific approach)

UGC-NET
QUALIFIED IN TWO SUBJECTS
HISTORY & PUB. ADMINISTRATION

NEW BATCH STARTS
From 10th November, 2003

ADMISSION OPEN
From 3rd November, 2003

लोक प्रशासन का चयन
उचित निर्णय
और
व्यावसायिक दृष्टिकोण

लोक प्रशासन

Mains के साथ-साथ
Pre. के लिये भी
बेहतर विकल्प

'अतुल लोहिया'

शिक्षक, मार्गदर्शक और मित्र भी

पत्राचार पाठ्यक्रम भी उपलब्ध

MAINS - 2,000/-
MAINS + PRE. - 3,000/-
डाक खर्च - 200/- अतिरिक्त

There's never a wrong time, To do the Right Thing

Alok Lall (Director) - 9818330979
AN INSTITUTE OF PUBLIC ADMINISTRATION
FLAT No. 105, Ist FLOOR, VIRAT BHAWAN COMM. COMPLEX,
DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI-9 • Ph.: 27655134. CELL.: 9810651005

बच्चों में आत्महत्या की प्रवृत्ति और समाज

○ कौशलेन्द्र प्रपन्न

मई का अंतिम पखवाड़ा बच्चों में आत्महत्या की घटनाओं के संदर्भ में महत्वपूर्ण होता है। ऐसी घटनाएं अख़बारों, टी.वी. समाचारों पर एकाध दिन के लिए तो स्थान ले पाती हैं किंतु सरकारी दस्तावेजों में शामिल नहीं होती और न ही इस घटना पर राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर कोई विमर्श की जरूरत ही महसूस की जाती है। इससे इतना तो साफ होता है कि बच्चे, इनकी समस्याएं, इनकी दुनिया बड़ों की दुनिया में स्थान नहीं बना पातीं। बच्चों को आत्महत्या करने से रोकने के लिए हमें उन्हें दबाव मुक्त वातावरण देना पड़ेगा। ऐसा लेखक का मानना है।

"आत्महत्या एक निजी प्रघटना है यद्यपि अनिवार्य रूप से इसके कारण सामाजिक हैं। कुछ सामाजिक शक्तियां होती हैं जो संपूर्ण समाज में काम करती हैं। इन सामाजिक शक्तियों का उद्गम व्यक्तियों से नहीं है। लेकिन समाज से है। ये सामाजिक शक्तियां वास्तविक हैं, यथार्थ हैं। ये शक्तियां ही आत्महत्या का निर्धारण करती हैं।"

प्रसिद्ध सामाजशास्त्री दुर्खीम की ये पंक्तियां 1897 में लिखी गई थीं। दुर्खीम ने अपनी पुस्तक *सुसाइड* में आत्महत्या पर विस्तार से विचार–विमर्श किया है। आत्महत्या के प्रकार, कारण आदि का पड़ताल करते हुए अंततः समाज, मनोविज्ञान से होते हुए सामाजिक शक्तियों पर लौटते प्रतीत होते हैं। दुर्खीम जिस आत्महत्या की बात करते हैं उसकी परिधि में युवा, प्रौढ़ और एक संपूर्ण व्यक्ति आता है। लेकिन बच्चों में आत्महत्या की प्रवृत्ति पाई जाती है या नहीं या कितनी मात्रा में पाई जाती है? इसका जिक्र पुस्तक में नहीं मिलता। दुर्खीम के सिद्धातों, कारणों पर पुनः यथास्थान चर्चा करेंगे। किन्तु इतना तो तय है कि आत्महत्या की प्रवृत्ति इधर कुछ दशकों में ज्यादा देखने को मिल रही है। लेकिन जब हम आंकड़ों की तलाश करते हैं तव निराशा ही हाथ लगती है। इस लेख में (6–18) आयु वर्ग के बच्चों में आत्महत्या की बढ़ रही प्रवृत्ति की चर्चा की गई है।

मई का अंतिम पखवाड़ा बच्चों में आत्महत्या की घटनाओं के संदर्भ में महत्वपूर्ण होता है। कोई भी ऐसा साल नहीं आता जिस वर्ष लड़के/लड़कियां छत से कूदकर अथवा पंखे से लटककर अपनी जीवन लीला समाप्त नहीं करते। ऐसी घटनाएं (आत्महत्या) अख़बारों, टी. वी. समाचारों पर एकाध दिन के लिए तो स्थान ले पाती हैं किंतु सरकारी दस्तावेजों में शामिल नहीं होती और न ही इस घटना पर राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर कोई विमर्श की जरूरत ही महसूस की जाती है। इससे इतना तो साफ होता है कि बच्चे, इनकी समस्याएं, इनकी दुनिया बड़ों की दुनिया में स्थान नहीं बना पातीं। बच्चों में आत्महत्या की प्रवृत्ति कई कारणों से जन्म ले रही हैं जिनमें से कुछ स्वरूपों की चर्चा नीचे की जा रही है :

पहला, परीक्षा में अच्छे अंक न आने या फेल होने की स्थिति में स्कूल के छत से या अपने घर की छत से कूदकर आत्महत्या कर लेना। दूसरा, लड़कियां घर में पंखे से लटककर आत्महत्या करती हैं। तीसरा, प्रेम में असफल लड़के/लड़कियां आत्महत्या की कोशिश करते हैं। जिसमें कई बार ब्लेड, चाकू आदि से नस काट लेना, दवाईयां खा लेना, जहर पी लेना, गोली मार देना, तेजाब डाल देना जैसी घटना शामिल हैं। एक और चौथा, वर्ग उनका है जो अत्यंत महत्वाकांक्षी हैं किंतु अपेक्षित सफलता न पाने की स्थिति में आत्महत्या करते हैं। इन घटनाओं के तह में जाएं तो शैक्षिक एवं सामाजिक घटक कारण के रूप में उभरते हैं। इतना ही नहीं यह बच्चों की

मनोवृत्ति, मनोरचना एवं मनोविज्ञान को भी दर्शाता है। मोटे तौर पर आत्महत्या के कारणों की पड़ताल करने पर कुछ बिन्दु उभरकर सामने आते हैं जो इस प्रकार हैं :–

शैक्षणिक दबाव

परीक्षा में कम अंक आने से अथवा फेल हो जाने से बच्चे आत्महत्या करे तो यह शिक्षा का एक दर्दनाक स्वरूप सामने रखता है। शिक्षा की प्रकृति सतत् चलने वाली होती है। बच्चों से संवाद करती है। शिक्षा का उद्देश्य एक संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है। यदि यह उद्देश्य शिक्षा का है तो वह अपने उद्देश्य में असफल ही हुई है क्योंकि संपूर्ण व्यक्तित्व वाला व्यक्ति एवं बच्चे यदि शिक्षा प्राप्त कर पाते तो वे शिक्षा–दर्शन, शिक्षा मनोविज्ञान से कुछ सीख पाते और आत्महत्या को अंतिम विकल्प के रूप में नहीं चुनते। यह शिक्षा का काला पक्ष है। शिक्षा के इतिहास पर नजर दौड़ाएं तो हम स्पष्ट रूप से दो भागों में बंटी शिक्षा पाएंगे। पहला, आजादी से पूर्व गुरूकुलीय, मजहब, जिसमें शिक्षा देने वाला अपने बच्चों से संवाद कायम करता था। रवीन्द्रनाथ टैगोर, जे. कृष्णमूर्ति, मान्टेसरी, इवान इलीच कुछ ऐसे शिक्षा दार्शनिक हुए जो बच्चों को प्रकृति की गोद में विकसने के सिद्धांत एवं दर्शन में आस्थावान प्रतीत होते हैं इस शिक्षा पद्धति में आत्महत्या जैसी घटनाओं का न पाया जाना यह सिद्ध करता है कि यहां बच्चों पर परीक्षा का दबाव, अंकों का जोड़–तोड़ नहीं के बराबर था। दूसरा, आजादी के बाद की शिक्षा। यों तो परीक्षा प्रणाली का चलन बहुत पहले हो चुका था, लेकिन शिक्षा का पर्याय परीक्षा को आधुनिक शिक्षा का विद्रुप चेहरा कहा जा सकता है। परीक्षा प्रणाली पर शोधरत (दिल्ली विश्वविद्यालय, शिक्षा विभाग) ऋतुबाला का लेख 'भारतीय परीक्षा प्रणाली का समाज शास्त्र' महत्वपूर्ण है। इस दृष्टिकोण से परीक्षा प्रणाली का पड़ताल करता यह लेख अपने निष्कर्ष पर पहुंचता है कि परीक्षा परिणामों में व्यापक स्तर पर विषमता व्याप्त है और इस विषमता का संबंध लैंगिक, भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक स्तर की विषमता से है।.... भारतीय शिक्षा में परीक्षा का केंद्रीय महत्व तथा शिक्षा के सामने समतावादी समाज की पुनर्रचना के दायित्व को ध्यान में रखते हुए यह उत्कण्ठा स्वाभाविक ही बनती है कि क्षेत्र, लिंग, समुदाय इत्यादि मानदंडों के आधार पर गहरे रूप से विषमता के शिकार समाज के साथ परीक्षा का बर्ताव कैसा रहा है? इसका सामाजिक चरित्र क्या है? परीक्षा में विफल बच्चों को आत्महत्या के लिए प्रेरित करना इस प्रणाली का सामाजिक बुनावट पेचिदा है। पालो फ्रेरा ने उत्पीड़ित और उत्पीड़क दो वर्गों का समाज में पहचान किया है। ठीक उसी प्रकार आज की शिक्षा में बच्चों (उत्पीड़ित) और शिक्षक/परीक्षा तंत्र (उत्पीड़क) की भूमिका निभा रहे हैं। इस ऐतिहासिक साक्ष्यों की रोशनी में एक बात साफ होती है कि बच्चों में कुंठा, निराशा, हताशा, असफलता से उपजी खीझ इस परीक्षा, शिक्षा–तंत्र की देन है जिसकी परिणति आत्महत्या में होती है।

सामाजिक दबाव

दुर्खीम ने मुख्यतः तीन प्रकार के आत्महत्या को पहचाना है। अहंवादी आत्महत्या वस्तुतः समाज के प्रति उदासीनता है – इसमें जीवन के प्रति किसी प्रकार का लगाव नहीं होता। परार्थवादी आत्महत्या। वह आत्महत्या है जिसमें व्यक्ति में मनोविकार आ जाते हैं और तीसरा, ऐनोमिक आत्महत्या, यह वह आत्महत्या है जिसमें व्यक्ति विरक्त हो जाता है, चिड़चिड़ा बन जाता है और उसे लगने लगता है कि आधुनिक जीवन में उसका अस्तित्व किसी मतलब का नहीं है। जब हम इन तीन घटकों में बच्चों को रखकर देखते हैं तब सबसे महत्वपूर्ण बात यह उभरकर सामने आती है कि बच्चे भय, डर एवं लज्जा जैसे भावात्मक दबाव में आकर आत्महत्या के रास्ते पर चल पड़ते हैं। उनके ऊपर मां–बाप, रिश्ते–नाते, दोस्तों की दृष्टि में स्वयं को एक असफल व्यक्ति के रूप में पेश करना गवारा नहीं होता। इस सामाजिक दबाव में परोक्ष ही सही मगर मां–बाप की महत्वाकांक्षाएं भी दबाव, तनाव पैदा करती हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि बच्चे सदा के लिए दूर हो जाते हैं। बच्चों का समाजीकरण भी इस संदर्भ में गौर करने योग्य है। बच्चों में सामाजीकरण की प्रक्रिया परिवार, समाज के नियमों, रिवाजों से संचालित होते है। तुलना, श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर और श्रेष्ठतम की शृंखला भी बच्चों को निस्संदेह कुंठित करती है। मीडिया का रोल भी इसमें शामिल है जो मानसिक स्तर के गठन में भागीदार होता हैं। बल्कि कहना चाहिए कि आज मीडिया बच्चों के लिए सबसे बड़ा 'रोल–माडल' बन चुका है। कई समाजिक संस्थाओं ने इस परिप्रेक्ष्य में शोध किए हैं और उन्होंने पाया है कि बच्चों में हिंसक प्रवृत्ति इन्हीं माध्यमों से प्रवेश करती है। लगातार टी.वी. देखने, वीडियोगेम खेलने, नेट सर्फिंग करने से उनके मस्तिष्क खुलने के बजाय संकुचित होते चले जाते हैं। आत्महत्या के लिए यह प्रवृत्ति सबसे ज्यादा सहायक होती है। आत्महत्या इस संकुचन का वृहत्तर रूप है। जब बच्चा अपने मां–बाप, अध्यापक, मित्रों से कटता चला जाता है तब उसके अंदर बैठी कुंठा, निराशा बड़े फलक पर उभरने लगती है संवादहीनता एक बड़ा कारण है जो बच्चों को समाज से, परिवार से अलग कर देता है। आज की एकल पारिवारिक संरचना भी काफी हद तक बच्चों में आत्महत्या की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है। दुर्खीम इस संदर्भ में कहते हैं कि जिस किसी समाज में पारिवारिक और नातेदारी एकीकरण अधिक होगा, उसमें आत्महत्याएं उतनी ही कम होंगी। इसी तरह ऐसे समाज में जहां एकीकरण कम होगा, आत्महत्याएं उतनी ही अधिक होंगी। आज के बच्चों को ऐसे दौर से गुजरना पड़ रहा है। जब घर में किसी से पास भी (मां–बाप) समय नहीं है। बच्चे मां–बाप के प्यार एवं उनसे बातचीत के लिए तरस जाते हैं। ऐसे में उनकी भावनाएं या तो कुंद जो जाती हैं या फिर विद्रूप होकर आत्महत्या का विकराल रूप धारण करती हैं। आत्महत्या करने वाले बच्चों को दो वर्गों में बांट सकते हैं पहला, ग्रामीण या मध्यवर्गीय। दूसरा साधन–संपन्न घर के महानगरीय बच्चे। ग्रामीण बच्चों में आत्महत्या कम पाई जाती है क्योंकि उनके सामाजिक–पारिवारिक एकीकरण अधिक मजबूत होते हैं (हालांकि आंकड़े उपलब्ध नहीं)। वहीं महानगरीय बच्चों में भावात्मक एकाकीपन, तनाव, निराशा, द्वन्द्व ज्यादा होते हैं। आत्महत्या के नायाब तरीके वे फिल्मों से सीखते हैं और तनाव, दबाव को न सहन कर पाने की स्थिति में आत्महत्या का रास्ता चुनते हैं। सारणी–1 में स्थिति को दर्शाया गया है। (देखें सारणी–1)

आंकड़ें सच तो बताते हैं मगर पूरा सच नहीं है। इन तालिकाओं में उन्हीं राज्यों को दिखाया गया है जहां 'आत्महत्या के लिए उकसाना' कालम में संख्याएं हैं। बाकी के राज्य इस कलंक से बरी हैं। दिल्ली, मध्य प्रदेश, उड़ीसा आदि। जबकि 2002, 2003 या पिछले दो–तीन सालों के मई, जून के अख़बारों को पल्टें तो दिल्ली में परीक्षा परिणामों के बाद आत्महत्या की घटनाएं घटी हैं। मगर उन्हें इन आंकडों में स्थान नहीं दिया गया। आंकडों से बाहर रखने की राजनीति अलग विमर्श की मांग करती है। उस पर भी बच्चों की आत्महत्या की वही घटनाएं, दर्ज हैं जो समाज की नजर में आ पाईं या पालो फ्रेरा के शब्दों में कहें तो 'चुप्पी की संस्कृति' को तोड़ पाएं। वरना गुमनाम आत्महत्याओं से कौन इन्कार करेगा।

सारणी–1

बच्चों के विरूद्ध अखिल भारतीय अपराध की घटनाएं – आत्महत्या के लिए उकसाना (2000)

क्र.सं.	राज्य	घटनाएं	प्रतिशत
1.	आंध्र प्रदेश	10	55.6%
2.	असम	2	11.1%
3.	हरियाणा	1	5.6%
4.	केरल	1	5.6%
5.	महाराष्ट्र	2	11.1%
6.	राजस्थान	2	11.1%
	कुल	**18**	**100%**

मनोवैज्ञानिक दबाव

मनोविकार व्यक्तित्व का नकारात्मक पक्ष प्रस्तुत करता है। इसे मनोरोगी कहना अनुचित होगा। अमूमन आत्महत्या सहज, सामान्य मनःस्थिति का परिणाम नहीं माना जाता। जीवन जैसे सुंदर, सरस सार्थक चीज को कोई अचानक क्षण भर में नष्ट नहीं कर देता। आत्महत्या एक खास मनोदशा में घटित होता है। आत्महत्या करने वाले बच्चों (व्यक्तियों) में निराशा, कुंठा, हताशा, नकारात्मक सोच, जीवन की निःसारता एवं दुश्चिंता इतना घनीभूत हो जाता है कि वह इसके घेरे से बाहर नहीं निकल पाता। मानसिक विकारों के अंतर्गत आत्महत्या के अभिप्रेरक तत्व, उन्माद, खिन्नता एवं आवेशात्मक तत्वों को शामिल किया जाता है। उन्माद के संदर्भ में प्रसिद्ध मनोचिकित्सक एस्क्विरोल का मानना है कि जब एक आदमी अपने हाथ से अपना शरीर नष्ट करता है तो वह उन्माद की अवस्था में है और उन्माद मानसिक अलगाव के कारण है। इनके अलावा फेलरेट और मोरेयूडिटोडर्स भी लगभग आत्महत्या का यही कारण बताते हैं। जबकि दुर्खीम का मानना है कि वह शक्ति जो आत्महत्या को निश्चित करती है, मनोवैज्ञानिक न होकर सामाजिक होती है। लेकिन मनोविज्ञान एवं मनोचिकित्सक आत्महत्या जैसी प्रवृत्ति को मनोविकार से उत्पन्न रोग मानते हैं। इसके अंतर्गत कई तत्व शामिल होते हैं। शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की शिक्षा–मनोविज्ञान से संबंद्ध नमिता रंगनाथन का मानना है कि आत्महत्या में सामंजस्य बिल्कुल ख़त्म हो जाता है। ख़ासकर जब बच्चे स्वयं को कुंठा, निराशा, चिंता से जूझने में असफल महसूस करते हैं तब वो आत्महत्या करते हैं। आत्महत्या रेशनल डिस्जिन नहीं होता। वहीं विमहंस की दिव्या एस. प्रसाद (मनोचिकित्सक) बच्चों में आत्महत्या की प्रवृत्ति के कारणों में आंतरिक कारक के अंतर्गत – विखण्डित पारिवारिक ढांचा, खराब शैक्षिक परिणाम एवं खण्डित व्यक्तित्व को स्वीकार करती हैं। दिव्या का मानना है कि बच्चों में आत्महत्या दो तरह के पाए जाते हैं। एक 'इम्पल्सिव सुसाइड' और दूसरा 'प्लांड सुसाइड'। दूसरा वाला पहले वाले के वनिस्पत ज्यादा सफल होता है। इसके कारणों पर दिव्या बताती है कि बच्चों में 'पर्सनालिटी डिस्आडर' और 'डिप्रेशन' दो तरह के आत्महत्या के लक्षण पाए जाते हैं। डिप्रेशन की स्थिति में बच्चे को यह लगने लगता है कि मैं बेचारा हूं, निकम्मा हूं और मेरा भविष्य अंधकारमय है। कहने का अर्थ है बच्चे में दुश्चिंता, हताशा, निराशा, असहयोग एवं असार्थकता की भावना प्रबल होती है। वैसी स्थिति में बच्चों में आत्महत्या की घटनाएं बढ़ जाती हैं।

उपचार

हमने बच्चों में आत्महत्या की घटनाओं के पीछे छिपे कारणों, स्थितियों आदि पर विचार किए। यदि यह रोग है तो इसके निदान भी होंगे। ऐसे बच्चों को कैसे ठीक किया जाए, इस पर दिव्या बताती है, आत्महत्या की तीव्रता, नाजुक स्थिति को जांचने के बाद दवाईयों का प्रयोग करते हैं ताकि घबराहट, अवसाद, चिंता से विद्वेलित मन नियंत्रण में आ सके। इस विधि में तीन से छह माह लगते हैं। दूसरी विधि है, साइको–थेरेपी, काग्नेटिव बिहेवियर थैरेपी आदि। यों तो काग्नेटिव बिहेवियर थैरेपी साइको थेरेपी में ही शामिल कर लिया जाता है। इसके अलावा ध्यान, योग, दैनिक क्रियाकलापों में छोटे–छोटे लक्ष्य निर्धारण करके बच्चों में फिर आत्मविश्वास जागृत किया जाता है।

निष्कर्ष

आत्महत्या एक संवाद है। यह संवाद स्वयं से होता है। बल्कि कहना चाहिए कि इस संवाद में कुंठाएं, निराशाएं, उन्माद, सामाजिक, शैक्षिक दबाव आदि शामिल होते हैं। जब एक बच्चा (व्यक्ति) आत्महत्या का मन बनाता है तब वह निपट अकेला नहीं होता। उसके पीठ पर मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक दबाव एवं प्रतिष्ठा का भारी बस्ता लदा होता है। जब हम आत्महत्या की पृष्ठभूमि में जाते हैं तो हमें एक ही कठघरे में शिक्षा, समाज, मनोविज्ञान एवं परिवार खड़े मिलते हैं। कितना सुखद होता कि हम बच्चों को दबावमुक्त वातावरण में विकसित, निर्मित होने देते ताकि उनका संपूर्ण, समुचित एवं संतुलित विकास हो पाता। श्री अरविन्द का मानना है कि बच्चों को कुछ भी सीखाया नहीं जा सकता। बस हम (अभिभावक, अध्यापक) एक मार्गदर्शक की भूमिका ही निभाएं। मगर ऐसा व्यावहारिक धरातल पर नहीं देखा जाता। हम शासक होते हैं। हमीं उपदेशक होते हैं। बच्चे तो प्रजा एवं आदर्श श्रोता की भूमिका निभाने को विवश होते हैं। इस विभेद को खत्म करना पहला कदम होगा बच्चों को आत्महत्या के रास्ते पर जाने से रोकने के लिए। तभी सच्चे अर्थों में हम समाज एवं देश को भविष्य का कर्त्ता–धर्त्ता दे पाएंगे। ❑

(स्वतंत्र पत्रकार)

सारिणी–2

प्रतिशत अन्तर

1997	1998	1988	2000	2000 में 1996 के स्तर से	2000 में 1999 के स्तर से
13	28	24	18	63.6%	25%

स्रोत : भारत गृहमंत्रालय, राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो (2002)

IAS

2003-04

दर्शनशास्त्र

सर्वाधिक लोकप्रिय एवं अंकदायी विषय

द्वारा

धर्मेन्द्र कुमार

पिछले सात बैचों की लगातार शानदार सफलता के पश्चात् अब और नए परिष्कृत एवं परिमार्जित अध्ययन सामग्री के साथ

कक्षा-कार्यक्रम

✡ दर्शनशास्त्र (मुख्य परीक्षा)	–	27 नवम्बर
✡ **Philosophy (English Medium)**	–	**27th November (Separate Batch) (With Complete Study Materials)**
✡ दर्शनशास्त्र (प्रारम्भिक (P.T.))	–	फरवरी के दूसरे सप्ताह से
✡ सामान्य अध्ययन (मुख्य+प्रारम्भिक)	–	3 दिसम्बर (राजीव महेश्वरम् एवं अन्य विशेषज्ञ)
✡ राजनीति विज्ञान	–	द्वारा जीतेन्द्र कृष्णन

निःशुल्क कार्यशाला–नवम्बर अन्तिम सप्ताह
कक्षा प्रारम्भ–दिसम्बर प्रथम सप्ताह

नामांकन प्रारम्भ : 1 नवम्बर

निःशुल्क कार्यशाला (दर्शनशास्त्र) : 23, 24, 25 नवम्बर

पत्राचार कार्यक्रम : दर्शनशास्त्र (मुख्य परीक्षा)

- *संस्थान दर्शनशास्त्र हेतु परिष्कृत एवं गुणात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराता है। जो अभ्यर्थी व्यस्तता, असमर्थता या किसी अन्य कठिनाई के कारण दिल्ली आकर कक्षा में सम्मिलित नहीं हो सकते, वैसे अभ्यर्थी पत्राचार के माध्यम से इस सम्पूर्ण सामग्री को प्राप्त कर सकते हैं।*
- *इसमें वैसे सभी अध्यायों की भी समुचित एवं क्रमवार विवेचना की गई है जिस पर उहापोह की स्थिति है, जैसे-ईश्वर की धारणाएँ, ईश्वर विहीन धर्म, वैज्ञानिक मनोवृत्ति एवं प्रगति, पर्यावरण-दर्शन आदि।*

पत्राचार-कार्यक्रम की विशेषता होगी:–

1. *सुव्यवस्थित एवं उपयोगी अध्ययन सामग्री*
2. *उत्तर लेखन शैली का विकास*
3. *प्रश्नोत्तर जांच की व्यवस्था*
4. *पिछले 10 वर्षों के प्रश्नों का क्रम-वार संग्रह*

❑ पत्रचार सामग्री को प्राप्त करने के लिए अपेक्षित राशि का दिल्ली में भुगतान योग्य बैंक ड्राफ्ट, "**Dharmendra Kumar**" के नाम भेजें।

पत्रचार कार्यक्रम का शुल्क : 2600/-

I.A.S. PATANJALI

PATANJALI

2580, HUDSON LINE, KINGSWAY CAMP, DELHI-110009
PH. : 27402108, MOBILE : 9811583851

आशियान के साथ घनिष्ठ संबंधों की शुरुआत

○ नवीन पंत

बाली में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने आशियान देशों के साथ प्रगाढ़ आर्थिक संबंधों की शुरुआत की है। उन्होंने आशियान के साथ भारत, चीन, जापान और दक्षिण कोरिया को मिलाकर एशियाई आर्थिक समुदाय बनाने की पेशकश की है। लेखक का मत है कि वाजपेयी जी के इस प्रयास के सफल हो जाने के बाद इस क्षेत्र में खुशहाली और समृद्धि का नया युग शुरु होगा।

भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के बीच अन्यत प्राचीन काल से घनिष्ठ राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध है। भरतीयों ने ईसा के जन्म से लगभग पांच सौ वर्ष पहले दक्षिण पूर्व एशिया की ओर जाना शुरु कर दिया था। प्रारम्भ में वे म्यांमार और मलेशिया होकर जमीनी मार्ग से इस देशों को जाते थें। इन लोगों ने पांचवी शताब्दी ईस्वी तक मलय प्रायद्वीप और कम्बोडिया क्षेत्र में अनेक राज्य स्थापित कर लिए थे। इनके बारे में हमे चीनी इतिहासकारों के वर्णनों और इस स्थानों पर प्राप्त मंदिरों के अवशेषों से पता लगता है।

मलयेशिया में तक्कोला (आधुनिक ताकुआ) या भारतीय व्यापारियों, धर्म प्रचारकों और विद्वानों के पहुंचने का पहला स्थान था। यहां से कुछ लोग जमीनी मार्ग से श्याम, अनाम, कम्वोडिया और समुद्री मार्ग से सुवर्ण द्वीप जावा, सुमात्रा, बाली पहुंचे। इन लोगों ने यहां विशाल चम्पा, कम्वोज और शैलेद्र साम्राज्यों की स्थापना की।

इस साम्राज्यों के बारे में एक बात उल्लेखनीय और हमेशा याद रखने योग्य है कि इसकी स्थापना भारत से सैनिक

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी

दल भेज कर नहीं की गई थी। स्थानीय जनता ने इस लोगों को स्वयं राजसत्ता सौंपी। भारतीयों ने स्थानीय जनता को दास बनाकर नहीं रखा, उनका शोषण नहीं किया। भारतीय पूरी तरह स्थानीय जनता से घुल मिल गए और उन्होंने स्थानीय शिल्प और स्थापत्य को नई ऊचांइयों तक पहुंचाया।

इन भारतीय नरेशों ने इस क्षेत्र की कला, संस्कृति और शिल्प को हर संभव बढ़ावा दिया। उन्होंने इस क्षेत्र में रामायण और महाभारत की कथाओं का प्रचार किया और संस्कृत और पाली में अनेक शिलालेखों में अपनी कीर्ति अंकित करायी। उन्होंने कम्वोडिया में अंकोरवाट और इंडोनेशिया में बोरोबुदूर जैसे विशाल मंदिरों–मठों का निर्माण कराया, जिन्हें देखकर आज भी लोग आश्चर्य में पूछते हैं कौन थे वे लोग जिन्होंने इनका निर्माण किया? इस स्मारकों की आत्मा तो भारतीय है लेकिन इनका स्वरूप स्थानीय है।

यह बड़े हर्ष की बात है कि भारत के साथ आशियान देशों के संबंध फिर से प्रगाढ़ हो रहे हैं। आशियान दक्षिणपूर्व एशियाई देशों का संघ है। इसकी स्थापना 8 अगस्त, 1967 को वेंकाक में इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाइलैंड ने की थी। 1984 में इस संगठन में ब्रुनेई (दारुस्सलाम) 1995 में वियतनाम, 1997 में लाओस और म्यांमार और 1999 में कम्वोडिया शामिल हो गएं।

आशियान की जनसंख्या 50 करोड़, क्षेत्रफल 45 लाख वर्ग किलोमीटर और सकल राष्ट्रीय उत्पाद 737 अरब डालर है। इसका कुल व्यापार 720 डालर का है। इस संगठन की स्थापना का मुख्य उद्देश्य है 'क्षेत्र का आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति और सांस्कृतिक विकास

में तेजी लाना और क्षेत्रीय शान्ति और स्थिरता को मजबूत बनाना'। 1995 में आशियान देशों के राज्याध्यक्षों और शासनाध्यक्षों ने कहा कि आशियान का मूलमंत्र है – "आपसी सहयोग से शान्ति और समृद्धि।" 25 फरवरी, 1976 को हुए आशियान के पहले शिखर सम्मेलन में यह निश्चत किया गया कि इस क्षेत्र के सभी देश एक–दूसरे की स्वतंत्रता, प्रभुसत्ता, प्रादेशिक अखंडता और राष्ट्रीय पहचान का सम्मान करेंगे। प्रत्येक देश को बिना बाहरी दबाव, तोड़–फोड या विध्वंसक कार्यवाईयों के रहने का अधिकार है। आशियान के देश एक–दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे और सभी विवादों का शान्तिपूर्ण ढंग से समाधान करेंगे। किसी के विरुद्ध बल प्रयोग की धमकी नहीं देंगे और आपस में पूर्ण सहयोग करेंगे।

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी बुधवार 8 अक्तूबर, 2003 को बाली, इंडोनेशिया में आशियान – भारत शिखर बैठक में आशियान देशों के राष्ट्राध्यक्षों के साथ।

आशियान की स्थापना के समय इस देशों के बीच आपसी व्यापार बहुत कम था। 1967 और 70 के बीच यह व्यापार 12 से 15 प्रतिशत के बीच था। आपसी व्यापार का बढ़ाने के लिए 1977 में इन देशों ने आपस में तट कर में छूट और अन्य रियायतें देने का निश्चय किया। दस वर्ष बाद, मनीला शिखर सम्मेलन में इस सहयोग को बढ़ाने के और उपाय किए गए। 1992 में सिंगापुर में चौथे शिखर सम्मेलन में आशियान देशों ने आपस में मुक्त व्यापार व्यवस्था शुरू की। तीन वर्ष बाद बैंकाक शिखर में अशियान देशों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाने के अनेक उपायों को स्वीकार किया गया। इस उपायों में सदस्य देशों के बीच घनिष्ठ आर्थिक सहयोग और भागीदारी बढ़ाने, इस क्षेत्र में माल, सेवाओं निवेश, पूंजी के मुक्त प्रवाह और सभी सदस्य देशों के न्यायसंगत आर्थिक विकास पर जोर दिया गया। इस संकल्प को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए 'हनोई कार्य योजना' (1998) बनाई गई। व्यापार और निवेश में समन्वय लाने के अलावा आशियान ने क्षेत्रीय सहयोग को सुदृढ अधार प्रदान करने के लिए सदस्य देशों के बीच नई सड़क–रेल मार्गों के निर्माण और पुरानी सड़कों–रेल मार्गों की मरम्मत, बंदरगाहों, हवाई अड्डों और दूरसंचार की व्यवस्था के आधुनिकीकरण का काम बड़े पैमाने पर शुरू किया। इसके अलावा, आशियान पावर ग्रिड, ट्रांस आशियान गैस पाइप लाइन परियोजना भी शुरू कीं। इन उपायों के परिणामस्वरूप आशियान देशों ने आर्थिक क्षेत्र में जबर्दस्त प्रगति की। उन्हें एशियाई शेर कहा जाने लगा। उनका आपसी व्यापार जो 1993 में 43.26 अरब डालर था, 1996 में 80 अरब डालर हो गया। इस समय आशियान देश व्यापार, निवेश, उद्योग, सेवाएं, वित्त, कृषि, वन, ऊर्जा, परिवहन, संचार, बौद्धिक सम्पत्ति, छोट और मंझोले उद्यम और पर्यटन में घनिष्ठ सहयोग कर रहे हैं। आशियान देशों ने 1997 में सन 2020 तक आशियान देशों को अत्यंत विकसित देशों की श्रेणी में ले आने का संकल्प व्यक्त किया है। इस बात की पूरी संभावना है कि वे अपने इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

भारत आशियान संबंध

भारत आशियान संबंधों की स्थापना 1992 में उस समय हुई जब आशियान के शासनाध्यक्षों ने अपने चौथे शिखर सम्मेलन में सर्वसम्मति से भारत को सेक्टोरियल डायलाग पार्टनर (क्षेत्रीय

बातचीत भागीदार) की हैसियत प्रदान की। यह हैसियत प्राप्त हो जाने के बाद भारत आशियान के विदेश मंत्रियों की और अधिकारियों की बैठक में भाग लेने का अधिकारी हो गया। इससे पहले भारत की विदेश नीति में यह नीतिगत निर्णय लिया जा चुका था कि दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ घनिष्ठ आर्थिक, राजनीतिक संबंध स्थापित किए जाएं। भारत ने जुलाई 1996 में आशियान के मंत्री सम्मेलन और आशियान क्षेत्रीय मंच में भाग लिया।

इसके बाद आपसी संबंधों को अधिक मजबूत बनाने के लिए दोनों पक्षों ने आशियान–भारत सहयोग समिति का गठन किया। 1996 में दिल्ली में इसकी पहली बैठक हुई। फरवरी 1998 में दोनों पक्षों के वरिष्ठ अधिकारियों ने आपसी हित और राजनीतिक–आर्थिक और सुरक्षा विषयों में विस्तार से विचार–विमर्श किया। इस विचार विमर्श के परिणामस्वरूप भारत–आशियान संबंधों को अधिक ठोस संस्थागत रूप देने का फैसला किया गया और विकास, विज्ञान टेक्नोलाजी और व्यापार और निवेश पर कार्यदल बनाए गएं। इसी के साथ आशियान–भारत व्यापार परिषद की स्थापना की गई।

आशियान देशों के कुछ नेता सन् 2000 से भारत को आशियान शिखर सम्मेलन में बुलाए जाने का प्रयास कर रहे थें। उनके इन प्रयासों के परिणामस्वरूप आशियान देशों के सातवें शिखर सम्मेलन, नवम्बर 2001 में सर्वसम्मति से भारत को आशियान – भारत शिखर बैठक में बुलाने का फैसला किया गया। नवम्बर 2002 में कम्बोडिया, नोम पेन्ह में भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ऐसी पहली बैठक में भाग लिया। इसी के साथ भारत–आशियान संबंधों में एक युग शुरू हुआ।

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी दक्षिण एशियाई देशों के साथ घनिष्ठ आर्थिक संबंध स्थापित करने पर सबसे अधिक जोर देते रहे हैं। आशियान में दस में से सात देशों की यात्रा कर चुके हैं। अब उन्हें केवल म्यांमार (बर्मा), ब्रुनेई (दार ए सलाम) और फिलीपींस की यात्रा करनी है।

प्रधानमंत्री बाजपेयी ने बाली बैठक में दस देशों के आशियान संगठन के साथ सन 2011 तक मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने के समझौते को दस महीने की अल्प अवधि में अंतिम रूप दिया। दस महीने की अवधि में इतनी बड़ी सफलता प्राप्त करना निस्संदेह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। चीन को आशियान के साथ इसी तरह के समझौते को अंतिम रूप देने में लगभग तीन वर्ष लगे थे।

प्रधानमंत्री वाजपेयी ने बाली बैठक में दस देशों के आशियान संगठन के साथ सन 2011 तक मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने के समझौते को दस महीने की अल्प अवधि में अंतिम रूप दिया। दस महीने की अवधि में इतनी बड़ी सफलता प्राप्त करना निस्संदेह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। चीन को आशियान के साथ इसी तरह के समझौते को अंतिम रूप देने में लगभग तीन वर्ष लगे थे।

इसके अलावा दो और समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। इसमें पहला था आतंकवाद के खिलाफ भारत और आशियान का संयुक्त घोषणा–पत्र। इस घोषणा–पत्र में आतंकवाद का मिलकर मुकाबला करने और उसे निष्प्रभावी बनाने के लिए सूचना का आदान–प्रदान करने की व्यवस्था है। इस समझौते की विशेषता यह है कि इस पर बाली में हस्ताक्षर किए गए, जहां 12 अक्टूबर को एक बम विस्फोट में 202 व्यक्तियों की जानें गई थीं। इसके बावजूद इंडोनेशिया में आशियान और भारत का शिखर सम्मेलन आयोजित करके इंडोनेशिया ने आतंकवाद के सामने न झुकने का संकल्प व्यक्त किया।

भारत ने इस अवसर पर आशियान के साथ मैत्री और सहयोग की भी संधि की। यह संधि आशियान देशों के साथ भारत की बढती हुई घनिष्ठता को प्रकट करती है।

प्रधानमंत्री ने दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के सामने इस देशों की विमान सेवाओं के लिए भारतीय आकाश को खोलने की भी घोषणा की। इस प्रस्ताव के अंतर्गत इन देशों की विमान सेवाएं चार भारतीय महनगरों – दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई और मुम्बई के लिए दैनिक उडानें कर सकेंगी। इसके अलावा वे 18 पर्यटक स्थल के लिए असीमित उड़ाने भर सकेंगी। श्री वाजपेयी ने आशियान देशों के साथ सड़क और रेल संपर्क शुरू करने पर भी जोर दिया। उन्होंने यह प्रस्ताव किया कि गुवाहाटी से म्यामांर, थाईलैंड, कम्बोडिया होकर वियतनाम की राजधानी तक आशियान–भारत कार रैली शुरू की जाए।

प्रधानमंत्री ने दस देशों अशियान संगठन में भारत, चीन, दक्षिण कोरिया और जापान को शामिल करके एशियाई आर्थिक समुदाय बनाने की वकालत की उन्होंने कहा इस तरह का विशाल एशियाई समुदाय बन जाने के बाद इस क्षेत्र के विकास में अभूतपूर्व तेजी आएगी। बाली बैठक की प्रमुख उपलब्धि आर्थिक सहयोग के समझौते पर हस्ताक्षर करना थी। इस समझौते में इस क्षेत्र में सामान, सेवाओं और निवेश में मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने की योजना है। ❑

(वरिष्ठ पत्रकार)

IAS/PCS

आरोहण

(हिन्दी माध्यम)

❋ प्रारंभिक से साक्षात्कार तक आपके साथ ❋

उपलब्ध विषय :-

- भूगोल (प्रारंभिक + मुख्य)
- दर्शनशास्त्र (सिर्फ मुख्य)
- हिन्दी साहित्य
- सामान्य अध्ययन (प्रारंभिक + मुख्य)
- निबंध

{ हिन्दी माध्यम के लिए बेहतर विकल्प एवं सर्वाधिक अकंदायी विषय }

एकमात्र संस्थान जो प्रारंभिक परीक्षा में सफलता की पूरी गारंटी देता है, अन्यथा फीस वापस ।

विशेष आकर्षण :-

✦ विषय चयन से संबंधित निःशुल्क मार्गदर्शनः सिविल सेवा के अभ्यर्थियों (विशेषकर हिन्दी माध्यम) के समक्ष प्रमुख समस्या वैकल्पिक विषय के चयन, पुनः उसकी तैयारी के तौर-तरीको की होती है । विषय का सही चयन (विशेषकर दूसरा वैकल्पिक विषय) न कर पाना ही सफलता में सबसे बड़ी बाधा है । अतः यहां के एक्सपर्ट (यदा-कदा प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित रहेगें) द्वारा अभ्यर्थियों की पृष्ठभूमि, रुचि अर्थात हर पहलुओं पर गौर करते हुए निष्पक्ष मार्गदर्शन किया जाता है । संभव है आपको वैसे विषय के चयन का सुझाव दिया जाए जो हमारे यहां उपलब्ध न हो । अर्थात मेरे लिए आपकी सफलता सर्वोपरि है, जिसे आप खुद भी महसूस करेंगे ।

नोट : इसके लिए कार्यालय से संपर्क कर समय निश्चित कर लें ।

अन्य आर्कषण :-

- ✦ मुख्य परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्ति हेतु विस्तृत एवं गहन अध्ययन वैज्ञानिक विधि द्वारा ।
- ✦ निश्चित समय - अंतराल पर आंतरिक परीक्षाओं का आयोजन ।
- ✦ आंतरिक परीक्षा के टापर्स को (प्रोत्साहन के लिए) पूरी फीस तत्काल वापस ।
- ✦ SC/ST/OBC को फीस में छूट ।
- ✦ प्रत्येक छात्रों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन की सुविधा ।
- ✦ सामान्य अध्ययन अलग-अलग विशेषज्ञों द्वारा।
- ✦ निबंध के लिए विभिन्न पहलुओं पर चर्चा एवं अभ्यास ।
- ✦ साक्षात्कार वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों एवं विशेषज्ञों द्वारा।
- ✦ छात्र एवं छात्राओं के रहने की अलग-अलग व्यवस्था ।

नामांकन अधिकतम 30

पता : 204, दूसरी मंजिल, A-23, 24 सतीजा हाउस (बत्रा सिनेमा हाल के पीछे), डा. मुखर्जी नगर, दिल्ली-9

011-27652362 (O)
011-35216097 (M)

कानकुन में एक–दूसरे की चिंताओं को समझने का स्तर बढ़ा

○ अरुण जेटली

विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) का पांचवां मंत्रीस्तरीय सम्मेलन समाप्त हुए एक माह से भी अधिक समय बीत गया है। सम्मेलन में मचा शोर और उन्माद धीरे–धीरे समाप्त हो गया है। और उम्मीद है कि अब नाराजगी भी शांत हो गई होगी। वहां मौजूद हम सभी लोगों और डब्ल्यूटीओ के सभी सदस्य देशों के लिए यह आवश्यक है कि हम निष्पक्षता के साथ चिन्तन करें कि क्या कुछ हुआ, क्या गलत हुआ, क्या सही हुआ और हम किस तरह आगे बढ़ सकते हैं, जैसा दोहा में तय लक्ष्यों को हासिल करने के लिए हमेशा से करते आए हैं।

मेरे विचार से किसी मंत्रीस्तरीय सम्मेलन को एक बार होने वाली घटना मानना मौलिक गलती होगी जहां चार अथवा पांच दिन के छोटे से समय में मंत्रियों द्वारा महत्वपूर्ण फैसले लिये जाएं। कोई भी मंत्रीस्तरीय सम्मेलन पांच दिन का आश्चर्य नहीं बन सकता। सफलता अनिवार्य रूप से महीनों की कड़ी बातचीत पर निर्भर करती है जो ऐसी किसी घटना के पहले होती है और मुख्य कार्यक्रम से पहले तकनीकी विशेषज्ञों तथा वार्ताकारों द्वारा तैयार तर्कसंगत नतीजों पर भी निर्भर करती है। इसलिए कानकुन की कहानी को मैक्सिको के खूबसूरत समुद्री रिर्सोट में उन पांच दिनों के दौरान हुए घटनाक्रम तक सीमित नहीं रखा जा सकता। वस्तुतः उसकी शुरुआत दोहा में और शायद दोहा से पहले ही हो चुकी थी और यह सुनिश्चित करने के लिए विकासशील

कानकुन सम्मेलन को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री श्री अरुण जेटली

देशों द्वारा संगठित रूप से संघर्ष छेड़ा गया कि दोहा कार्यक्रम में विकास का आयात केंद्रबिन्दु बने।

दोहा मंत्रिस्तरीय घोषणा में आर्थिक विकास के लिए एक शस्त्र के रूप में व्यापार का समर्थन किया गया विशेषकर विकासशील और कम विकसित देशों के मामले में। इसमें कहा गया कि डब्ल्यूटीओ के ज्यादातर सदस्य विकासशील देश हैं हम इस धारणा में स्वीकृत कार्य योजना के केंद्र में उनकी जरूरतों और हितों को रखना चाहते हैं। यह नई अवधारणा नहीं है। यह वस्तुतः उरुग्वे दौर की वार्ता में वार्ताकारों की इच्छा का परिचायक है। विश्व व्यापार संगठन की स्थापना करने के लिए हुए मराकेश समझौते ने भी ऐसे सकारात्मक प्रयासों की आवश्कता को माना है जो यह सुनिश्चित करने के इरादे से किए गए हों कि विकासशील देश और उनमें भी कम विकसित देश अपनी आर्थिक विकास की आवश्यकताओं के अनुरुप अंतरर्राष्ट्रीय व्यापार में हो रही प्रगति में अपनी हिस्सेदारी पाएं। दोहा घोषणा विश्व व्यापार संगठन के कार्य को उसके पहले सिद्धान्त पर केन्द्रित करने का प्रयास थी। दोहा के बाद हालांकि जिनेवा में हुई बातचीत कमजोर रही।

दोहा घोषणा ने विकास से संबद्ध परिणामों को हासिल करने के लिए कुछ सपष्ट समय सीमा निर्धारित की। ये विशेष प्रावधानों से संबद्ध है तथाकथित कार्यान्वयन के मुद्दे मूलतः उरुग्वे दौर के समझौतों को लागू करने के दौरान विकासशील देशों ने जिन समस्याओं की पहचान की, कम विकसित और विकासशील देशों की कठिनाइयों को दूर करने के लिए प्रभावशाली तंत्र बनाने की समस्या जिनके पास फार्मा क्षेत्र में या तो कोई क्षमता नहीं है या फिर अपर्याप्त निमार्ण क्षमता है। कृषि, गैर कृषि बाजार पहुंच एवं सेवाओं जैसे बाजार पहुंच से जुड़े महत्वपूर्ण क्षेत्रों से संबंध में समय सीमा तय की गई।

बिना किसी ठोस परिणाम के एक के बाद दूसरी समय सीमा तय होती रही। विकासशील और कम विकसित देशों के बीच असंतोष बढ़ता जा रहा था। ऐसा लगा कि हमारे कुछ व्यापार साझीदार

और डब्लूटीओ सचिवालय भी जिनेवा के बदले माहौल में जैसे कुछ भूलते जा रहे हैं। मेरा इरादा कतई यह नहीं है कि मैं विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से लिखूं ऐसे मुद्दों के बारे में जो या तो अभी वार्ता की प्रक्रिया में है या डब्ल्यूटीओ की संस्थाओं में जिन पर चर्चा चल रही है। मगर कृषि क्षेत्र में काफी अधिक सब्सिडी दे रहे हैं, इससे इन देशों में बाजार पहुंच ही सीमित नहीं होती बल्कि तीसरी दुनिया के देशों के बाजारों के लिए निष्पक्ष प्रतिस्पर्द्धा भी रुक जाती है। साथ ही सब्सिडी प्राप्त उत्पादों के प्रवाह ने अत्यंत गरीब विकासशील देशों के ग्रामीण क्षेत्र को नष्ट कर दिया है। विकासशील देश आम तौर पर पूरी तरह कृषि पर ही निर्भर है और मौजूदा प्रणाली विकास अवरुद्ध कर रही है। कई विकासशील देशों में कृषि को तबाह कर रही है।

भारत जैसे भारी ग्रामीण आबादी वाले देशों में लोग कृषि पर पूरी तरह निर्भर है और उनमें से अधिकतर या तो गरीबी रेखा के नीचे या फिर इसके कुछ करीब जीवन बसर कर रहे हैं। बाजर में छोटी–सी बाधा कीमतें तेजी से गिरा सकती जिससे आय में गिरावट आएगी। इससे भुखमरी और तंगहाली होगी। इसी तरह विकासशील देशों में खराब आधारभूत ढांचे, अधिक पूंजी लागत, पूंजी और प्रौद्योगिकी से जुड़ी खामियों के कारण कम उत्पादकता और अन्य समस्याओं को कम करने के लिए हमें लघु एवं कुटीर उद्योगों पर निर्भर होना ही था जिनसे अपेक्षाकृत कम पूंजी मूल्य पर अधिक रोजगार उपलब्ध होते हैं। सेवा क्षेत्र मं भी स्वाभाविक लोगों की आवाजाही और सीमा पारीय सेवा आपूर्ति के माध्यमों पर पर्याप्त ध्यान दिया गया। ज्यादा जोर वाणिज्यिक मौजूदगी पर रहा यानी संयुक्त उपक्रम लगाना तथा विदेशी स्वामित्व वाली कंपनियों एवं ऐसी ही अन्य गतिविधियों पर जिनेवा वार्ता में विचार किया जाएगा। सच्चाई यह है कि दोहा के बाद की पूरी अवधि में शायद ही कोई गतिविधि हुई हो और विकासशील देशों की समस्याओं को दूर करने के लिए कोई उचित प्रयास नहीं हुआ।

जब मैं विकासशील देशों की बात करता हूं तो स्वाभाविक तौर पर मेरे दिमाग में यह बात आती है कि विकासशील देश विभिन्न मुद्दों पर खुद ही अपना रुख बदल रहे हैं और भारत के मामले में जो लागू होता है ऐसा जरूरी नहीं कि अन्य विकासशील देशों के मामले में भी ऐसा ही हो। कानकुन में हमने जो देखा वह जबर्दस्त एकजुटता और विकासशील देशों के बीच हितों को लेकर साझा नजरिया था हालांकि सभी मुद्दों पर सभी देशों ने एक जैसा रुख नहीं अपनाया। उदाहरण के लिए सिंगापुर मुद्दे पर हमारा जो रूख था सभी विकासशील देशों का वह रुख नहीं था। कृषि क्षेत्र में समझौतें के तीन स्तंभों को लेकर परस्पर अलग–अलग नजरिये रहे घरेलू समर्थन, निर्यात प्रतिस्पर्धा और बाजार पहुंच। जो खुशगवार बात रही वह यह थी कि विकासशील देशों में एक–दूसरे तक पहुंचने, संपर्क साधने की इच्छा दिखी।

कानकुन सम्मेलन से पहले अमेरिका और यूरोपीय संघ के साथ मिलकर आने के फैसले के कारण ही विकासशील देशों ने एकजुट रहने का निर्णय लिया जिससे समूह–17 की उत्पत्ति हुई जो अब समूह–22 बन गया है। कृषि मुद्दे पर समूह–22 के वार्ताकार तथा अमेरिका व यूरोपीय संघ के साथ कई बैठकें हुईं लेकिन सिंगापुर मुद्दे पर किसी भी समय कोई संदेह नहीं था। अधिकांश देश व्यापार और निवेश, व्यापार और प्रतिस्पर्धा नीति, व्यापार सुविधा और सरकारी खरीद में पारदर्शिता के मुद्दों पर बातचीत के खिलाफ थें। इनमें एलडीसी समूह, एसीपी समूह और अफ्रीकी समूह के अलावा भारत, चीन, मलेशिया, फिलीपींस और इंडोनेशिया जैसे देश शामिल रहे।

जब मैंने सिंगापुर मुद्दे पर नियुक्त वार्ताकार कनाडा के मंत्री पेट्टीग से मुलाकात की और उनसे कह दिया कि उनका लक्ष्य शायद सबसे आसान है। दोहा घोषणा में बातचीत की रुपरेखा के बारे में स्पष्ट आम सहमति की अपील की गई थी उन्हें केवल यह रपट देनी है कि किसी भी मुद्दे पर स्पष्ट आम सहमति नहीं है। लेकिन जब 13 अगस्त को अध्यक्ष का संशोधित मसौदा सामने आया हम सकते में आ गए। कृषि मसले पर हमारी चिंताओं को दरकिनार कर दिया गया था। कपास सब्सिडी के बारे में तोड़–मरोड़ कर कही गई बातों को सुधारने के सवाल की पूरी तरह अनदेखी की गई। अगले दिन ग्रीन रूम में हुई बैठक में करीब 38 देशों ने भाग लिया। मुझे उम्मीद थी कि कोई नतीजा निकलेगा लेकिन हम सभी को उस समय आश्चर्य हुआ जब अध्यक्ष ने अचानक तय किया कि अन्य मुद्दों पर विचार किये बिना ही मंत्रिस्तरीय सम्मेलन को सम्पन्न कर दिया जाए।

बैठक के इस तरह समाप्त होने से आशंकाएं हावी हुईं और कई प्रश्न अनुत्तरित रह गए लेकिन यह हमारे ऊपर हैं कि हम कुछ हिस्सों को चुन लें और दिसम्बर तक किसी परिणाम को हासिल करने का प्रयास करें, जब आम परिषद की बैठक होना प्रस्तावित है। इसके लिए सभी सदस्यों से प्रतिबद्धता और समर्पण अपेक्षित होगा। कानकुन में जहां कोई सकारात्मक नतीजा नहीं निकल सका मेरा मानना है कि फिर भी प्रगति हुई है। कृषि और सिंगापुर मुद्दों पर आगे गतिविधि हुई है और एक–दूसरे की चिंताओं और संवेदना को समझने का स्तर बढ़ा है। यह बात महत्वपूर्ण है कि हम इस अभ्यास को जारी रखें। मुद्दों पर ध्यान केंद्रित रखे। ❑

(भाषा से साभार)

फिर टकराए अमीरों और गरीबों के हित

○ अनन्त मित्तल

कानकुन बैठक की विशेषता यह रही कि व्यापार संगठन की अब तक हुई सभी बैठकों के मुकाबले विकासशील देश इस बार कहीं ज्यादा मुखर रहें और उन्होंने अपने हित पर आंच लगाने की आंशका वाले सभी प्रस्ताव का डटकर विरोध किया। गौरतलब है कि अभी तक हुए किसी भी दौर की बातचीत में बैठक के बाद कोई भी सर्वसम्मत घोषणा न हो पाने की नौबत नहीं आई थी, मगर इस बार ऐसा ही हुआ। कानकुन बैठक के बाद उसमें शामिल देशों द्वारा कोई घोषणा नहीं की जा सकी। अब संगठन की अगली बैठक जिनिवा में प्रस्तावित है।

कानकुन में हुई विश्व–व्यापार संगठन की पांचवीं मंत्रिस्तरीय बैठक भी विकसित और विकासशील देशों की आपसी खींचतान के कारण सुर्खियों में रही। इस बैठक के बारे में हालांकि प्रचारित यह किया जा रहा है कि बातचीत, कृषि उत्पादों पर अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा की जा रही अंधाधुंध सब्सिडी में कटौती न करने के और विकासशील देशों द्वारा ऐसा करवाने की मांग पर आमादा हो जाने के कारण टूटी है। लेकिन बैठक का शोरगुल और उससे जोड़े गए देशभक्ति के उबाल के बैठ जाने पर अब सच्चाई यह सामने आ रही है कि बातचीत, दरअसल सिंगापुर बैठक के प्रमुख मुद्दों पर इस बैठक में भी कोई आम राय न बन पाने के कारण टूटी है। सिंगापुर बैठक के प्रमुख मुद्दे थे – विदेशी निवेश प्रतिस्पर्धा, कानून, सरकारी खरीद में पारदर्शिता और बाजार तक मनचाही पहुंच। रही बात कृषि सब्सिडी में कटौती और विकासशील देशों के कृषि उत्पादों के आयात के लिए भी अमीर देशों का बाजार खुलवाने की बहस की, तो इस मुद्दे पर अमेरिका और यूरोपीय संघ के प्रतिनिधियों के साथ भारत सरकार की इस वर्ष मार्च के महीने से ही बातचीत चल रही थी और वे दोनों ही सब्सिडी में चरणबद्ध कटौती करने के लिए तैयार थें। यूरोपीय संघ ने तो इस तथ्य की पुष्टि भी की है। यूरोपीय संघ के भारत स्थित शिष्टमंडल के प्रमुख पदाधिकारियों ने हाल में कुछ चुनींदा पत्रकारों के साथ एक संगोष्ठी में यह रहस्योदघाटन किया है। उन्होंने बताया कि यूरोपीय संघ द्वारा भारत सरकार के नुमाइंदों को इस बारे में दिए गए प्रस्ताव पर सहमति बन गई थी, मगर बाद में अचानक सब कुछ उल्टा–पुल्टा हो गया।

इस बैठक की विशेषता यह रही कि व्यापार संगठन की अब तक हुई सभी बैठकों के मुकाबले विकासशील देश इस बार कहीं ज्यादा मुखर रहें और उन्होंने अपने हित पर आंच लगाने की आंशका वाले सभी प्रस्ताव का डटकर विरोध किया। गौरतलब है कि अभी तक हुए किसी भी दौर की बातचीत में बैठक के बाद कोई भी सर्वसम्मत घोषणा न हो पाने की नौबत नहीं आई थी, मगर इस बार ऐसा ही हुआ। कानकुन बैठक के बाद उसमें शामिल देशों द्वारा कोई घोषणा नहीं की जा सकी। अब संगठन की अगली बैठक जिनिवा में प्रस्तावित है। लेकिन जाहिर है कि तब तक अमेरिका तो कम से कम चुप नहीं बैठेगा और अपने व्यापार सहयोगियों पर द्विपक्षीय समझोते करने के लिए दबाव डालेगा। उल्लेखनीय है कि भारत में लगभग 65 प्रतिशत आबादी रोजगार, कृषि और उसी से संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। सकल राष्ट्रीय उत्पाद में भी कृषि क्षेत्र को 30 प्रतिशत योगदान है। कमोबेश यही स्थिति अन्य विकासशील देशों की

भी है। इसलिए वे कृषि पर सब्सिडी को लेकर इतने संवेदनशील हैं। उन्हें लगता है कि जब तक सब्सिडी का स्तर विकसित और विकासशील देशों में बराबर नहीं हो जाता तब तक कृषि उत्पादों के आयात को खुली छूट नहीं दी जा सकती। यदि छूट हड़बड़ी में दी गई तो हमारे विदेशी अनाज और अन्य कृषि उत्पादों से पट जाएंगे तथा देशी किसान दिवालिया हो जाएंगे। जिससे विशेषज्ञों के अनुसार – अंततः हमारी खाद्य सुरक्षा ही खतरे में पड़ जाएगी।

इसीलिए बैठक में विश्व के 65 प्रतिशत किसानों वाले विकासशील देशों ने एक स्वर में विकसित देशों की मनमानी का विरोध किया और भारत ने इसमें अहम भूमिका निभायी। विकासशील देशों की एकता को भंग करने के लिए विकसित देशों के प्रलोभन भी बेकार गए। इस बैठक से शीतयुद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के विघटन के बाद विश्व मानचित्र पर पहली बार तीसरी दुनिया यानी विकासशील देशों की एकता फिर से कायम हुई। साथ ही यह मान्यता भी टूटी है कि सारी शक्ति अमेरिका तथा उसके सहयोगी देशों में ही समाहित हो गए हैं और बाकी दुनिया उनका उपनिवेश बनकर रह गया है। विकसित देशों की मनमर्जी का विरोध करते हुए, कानकुन में हुए सम्मेलन में भी विकासशील देशों ने अपनी अलग लाइन रखी और दो साल पहले दोहा में तय किए गए एजेंडे को आगे बढ़ाया। भारत की भूमिका इस दौरान महत्वपूर्ण रही और विकासशील देशों ने जो आक्रामक रूख अपनाया, उसके पीछे अरूण जेटली के नेतृत्व में भारतीय रणनीति काफी हद तक जिम्मेवार रही। दोहा में मुरासोली मारन ने विकासशील देशों को साथ लेकर डब्ल्युटीओ वार्ता को जिस मुकाम तक पहुंचाया था, उसे आगे बढ़ाने की जिम्मेवारी अरूण जेटली पर थी, जिसे उन्होंने पूरी खूबी के साथ निभाया।

कृषि के मुद्दे पर विकासशील देशों का ग्रुप जी–21 सक्रिय रहा और निवेश के मुद्दे पर 15 विकासशील देशों ने जी–15 नाम से ग्रुप बना लिया। इसके अलावा समान धारा वाले देशों का भी एक ग्रुप बन गया है। कृषि पर जी–21 देशों ने जो प्रारूप तैयार किया, उसे आधिकारिक तौर पर स्वीकार किया जाना एक बड़ी सफलता थी। सिंगापुर मुद्दों पर भी इतना दबाव बना दिया गया कि विकसित देश, विदेशी निवेश, प्रतिस्पर्धा कानून, सरकारी खरीद में पारदर्शिता और बाजार तक मनचाही पहुंच पर कानकुन में किसी तरह की मनमानी नहीं कर पाए।

इसके पीछे भारत, चीन और ब्राजील की एकजुटता भी महत्वपूर्ण रही। विकासशील देशों से गतिरोध तोड़ने के लिए डब्ल्युटीओ ने सिंगापुर के व्यापार मंत्री जॉर्ज येओ को वार्ताकार नियुक्त किया, जिन्होंने संबंद्ध पक्षों का नजरिया जानने के बाद वार्ता का मसौदा तैयार किया। विकासशील देशों का तर्क था कि विश्व के 65 प्रतिशत किसान उन्हीं देशों के हैं, इसलिए उनके हित सर्वोपरि हैं। समूह–22 का निर्माण ही किसानों के हितों के संरक्षण के लिए बना था, इसलिए यह मांग की गई कि विकास ऐसा हो, जिसका लक्ष्य किसानों की दशा सुधारना हो। निवेश, प्रतिस्पर्धा नीति, व्यापार सुविधा तथा पारदर्शिता जैसे सिंगापुर बैठक के मुद्दों के बारे में विकासशील देशों का कथन था कि डब्ल्युटीओं के 146 सदस्य जब तक सहमत न हों, तब तक ऐसे मुद्दों पर नियम बनाने के बारे में बातचीत शुरू नहीं हो सकती, चूंकि लगभग 70 विकासशील देश नहीं चाहते कि इन मुद्दों पर बातचीत शुरू की जाए। यहां ये समझना जरूरी है कि आखिर अमीर देश इस बारे में इतना जोर क्यों डाल रहे हैं। सरकारी खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता की मांग का सीधा–सा मतलब यह है कि अमीर देश भी उसमें हिस्सेदार बनना चाहते हैं। वे चाहते है कि विकासशील देशों की सरकारें सरकारी माल की खरीदारी सीधे उनकी कंपनियों से भी करें और बोली प्रक्रिया में उन्हें शामिल होने दें। इसी तरह प्रतिस्पर्धा नीति की मांग भी उनके द्वारा अपनी कंपनियों की पैठ विकासशील देशों में गहरी कराने की कोशिश है। अभी तक बाजार अर्थव्यवस्था अपना लेने के बावजूद तमाम विकासशील देश राष्ट्रीय हित के नाम पर अपने उद्योगों को संरक्षण दे रहे हैं। विकसित देशों की मांग है कि उनकी कंपनियों को देशी कंपनियों के मुकाबले बराबरी से कारोबार का अधिकार दिया जाए। विडंबना यह है कि देशी कंपनियां भी यही मांग करती आ रही हैं, खासकर लघु क्षेत्र की कंपनियां तो ये कर ही रही है कि अमीर देशों की सस्ती ब्याज दरों और आधुनिक प्रौद्योगिकी के आगे उनका बाजार होड़ में टिक पाना असंभव ही है।

बैठक में कृषि उत्पादों का आयात खोलने की अमेरिका और यूरोपीय संघ की शर्त को भी अनुचित बताया गया। अमेरिका तथा यूरोपीय देशों का कहना था कि लेन–देन दोनों तरफ से होना चाहिये। अमेरिका का कहना था कि ब्राजील जैसे खाद्य पदार्थ निर्यातक बड़े विकासशील देशों पर सब्सिडी तथा आयात कर संबंधी वही नियम लागू होने चाहिये, जो अमेरिका पर लागू करने की बात कही जा रही है। इन सभी मुद्दों पर कानकुन सम्मेलन में विकासशील देशों को मनाने का सिलसिला चलता रहा। इसकी मुख्य वजह ये है कि विश्व व्यापार संगठन दुनिया का एकमात्र ऐसा अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जिससे अमेरिका जैसी महाशक्ति और माले या सेनेगल जैसे छोटे–छोटे देशों के मत का भी समान महत्व हैं, क्योंकि उसके संविधान के अनुसार किसी भी प्रस्ताव को पारित

करने के लिए सर्वसम्मति आवश्यक है।

इस कवायद से भाजपा को अपनी अतिरिक्त आर्थिक सुधारवादी छवि से मुक्त होने में भी मदद मिलेगी। पूर्व प्रधानमंत्रियों के मंच से डब्ल्युटीओ का लगातार विरोध हो रहा है और स्वदेशी जागरण मंच का तो यहां तक कहना है कि भारत सरकार डब्ल्युटीओ को अपनी जरूरतों के मुताबिक बदले और अगर न बदल पाए, तो इससे अपने–आप को अलग कर ले। मुख्य विपक्षी दल इस पर चुप है, लेकिन उनका भी मानना है कि नुकसान हो रहा है। डब्ल्युटीओ में शामिल होना एक राजनीतिक फैसला था, इसलिए उससे अलग नहीं हुआ जा सकता। वैसे भी अर्थव्यवस्थाओं के खगोलीकरण के इस युग में व्यापार की सभी सीमाएं खुद ही खत्म होती जा रही है, ऐसे में द्विपक्षीय समझौतों के बजाय बहुपक्षीय समझौते ही अंततः कामयाब हो पाएंगे, क्योंकि उनमें सामूहिक विरोध अथवा लेन–देन की गुंजाइश रहती है और यह बात कानकुन में सिद्ध भी हुई है। इसलिए डब्ल्युटीओ से बाहर आ जाने के पैरोकारों को कम से कम अब तो ये राग अलापना बंद कर देना चाहिए। हमारा दुर्भाग्य यह भी है कि यहां विश्व व्यापार संगठन को शुरू से ही कोई अपवित्र संगठन और शैतानों का जमावड़ा बनाकर प्रस्तुत किया जा रहा है और हर बार उसकी बैठक शुरू होते ही देशभक्ति और देशद्रोह के दो पाले खींच दिए जाते हैं। डब्ल्युटीओ में लेन–देन की भावना का समर्थन करने वाले देशद्रोही और उसका विरोध करने वाले देशभक्त बना दिए जाते हैं, जबकि सच यह है कि हमने अपनी मर्जी से उसे अंगीकार किया है और उसके अंतर्गत हुए समझौतों के मद्देनजर हमें आज नहीं तो कल अपने बाजार खोलने ही पड़ेंगे।

विश्व व्यापार संगठन की इस बैठक का भी सिएटल बैठक की तरह उदारीकरण विरोधियों और स्वयंसेवी संगठनों की तरफ से भारी विरोध हुआ और नौबत यहां तक आई कि डब्ल्युटीओ के आयोजकों ने सभी 148 सदस्य देशों के मंत्रियों से आग्रह किया किया वे अपने होटल के कमरे से बाहर नहीं निकलें, क्योंकि शहर और पूरे सम्मेलन स्थल पर अचानक डब्ल्युटीओ विरोधी प्रदर्शनकारियों ने अपना कब्जा जमा लिया था। दक्षिण कोरिया के एक किसान संगठन के पूर्व अध्यक्ष ली युंग हेई ने विकसित देशों की नीतियों के खिलाफ आत्महत्या कर अपना विरोध जताया था। भारत में आंध्र प्रदेश और पंजाब जैसे राज्यों के किसानों की तरह हेई को भी फसलों की कीमतों में आई गिरावट की वजह से आर्थिक घाटा उठाना पड़ा था। ❑

(स्वतंत्र पत्रकार)

RAO IAS

THE MOST POPULAR INSTITUTE FOR IAS AND PCS

14/1, स्टैनली रोड, (लोक सेवा आयोग के सामने), इलाहाबाद फोनः 2601624

पत्राचार कोर्स एवं क्लास कोचिंग, छात्रावास उपलब्ध

हिन्दी माध्यम

IAS/PCS (Pre & Main) बैच 11 नवम्बर से

भूगोल विजय कुमार मिश्र

वैकल्पिक विषय (Pre & Main) द्वारा

- नवीनतम परीक्षा प्रणाली के अनुसार विषय की तैयारी
- 500 से अधिक मानचित्रों का अभ्यास
- प्रतिदिन होमवर्क तथा उनका सूक्ष्मता से परीक्षण
- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर भरपूर अध्ययन सामग्री
- पाँच महीने का गहन शिक्षण एवं प्रशिक्षण
- अभ्यास हेतु वस्तुनिष्ठ प्रश्नावलियाँ, नियमित टेस्ट
- सर्वोत्तम शिक्षण परिवेश

विषय उपलब्ध :- सामान्य अध्ययन और निबन्ध, इतिहास, लोक प्रशासन, राजनीति शास्त्र, समाज शास्त्र,

विवरण पुस्तिका हेतु रू० 50/- M.O. से भेजें

SATYA

IAS/PCS 2003-04

छत्तीसगढ़, एवं उ.प्र. स्पेशल

भूगोल एवं सामान्य अध्ययन

(हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम)

द्वारा **सरोज कुमार एवं अन्य विशेषज्ञ**

अन्य उपलब्ध विषय : इतिहास, लोक प्रशासन, समाज शास्त्र एवं दर्शन शास्त्र

नया बैच : 5 एवं 20 नवम्बर

फाउण्डेशन कोर्स–लक्ष्य : 2004

(प्रारम्भिक एवं मुख्य)

हमारी उपलब्धियाँ

भारतीय सिविल सेवा 2002

प्रथम 27 में 8 चयनित कुल सफलतम छात्र (प्रा./मुख्य/साक्षात्कार) 45

प्रांतीय सिविल सेवा

उत्तर प्रदेश : 103 राजस्थान : 23 मध्य प्रदेश : 27 बिहार : 89

निःशुल्क कार्यशाला (प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा)

3 नवम्बर 2003 : भुगोल प्रातः 10.30 बजे
4 नवम्बर 2003 : सामान्य अध्ययन प्रातः 10.30 बजे
5 नवम्बर 2003 : लोक प्रशासन प्रातः 10.30 बजे
5 नवम्बर 2003 : समाज शास्त्र अपराहन 2.30 बजे
6 नवम्बर 2003 : दर्शन शास्त्र प्रातः 10.30 बजे
6 नवम्बर 2003 : इतिहास अपराहन 2.30 बजे

अधिक जानकारी के लिए रु 50/– DD द्वारा सरोज कुमार के नाम से निम्न पते पर भेजें या डॉ. वीना शर्मा से निम्न पते पर सम्पर्क करें

SAROJ KUMAR'S IAS ERA

1/9, Roop Nagar, G .T.Karnal Road,Near Shakti Nagar, Above Punjab National Bank, Near Shakti Nagar Red Light, Delhi-7.
Tel : (O) 011-23842311, 011- 23847516 Mobile : 9811285863

पत्राचार पाठ्यक्रम उपलब्ध : सामान्य अध्ययन, भूगोल, समाज शास्त्र एवं लोक प्रशासन

नोट : हमारी कोई अन्य ब्रांच नहीं है

झारखंड में तसर रेशम उद्योग की दशा एवं दिशा

○ ललन कुमार चौबे
○ गार्गी

भारत में तसर रेशम का जो उत्पादन होता है उसमें झारखंड राज्य अग्रणी भूमिका निभाता है। एक अध्ययन के अनुसार झारखंड की तीस जनजातियां इस उद्योग से जुड़ी हुई हैं। इसका कारण इस उद्योग का वनों पर आधारित होना है। इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि वनों से इन आदिवासियों को खास तौर पर गहरा लगाव है। लेकिन हाल के कुछ वर्षों में कतिपय कारणों से तसर रेशम के उत्पादन में लगातार गिरावट आई है और इसे दूर करने की आवश्यकता है।

भारतीय रेशम उद्योग में तसर रेशम का महत्वपूर्ण योगदान है। यद्यपि स्थूल रूप में रेशम शब्द का अर्थ गैर–शहतूती रेशम के रूप में लिया जाता रहा है परंतु गैर–शहतूती कीटों से तैयार रेशम में तसर का स्थान इसलिए उल्लेखनीय है कि कुल उत्पादन में इसका योगदान सर्वाधिक है। झारखंड राज्य के परिप्रेक्ष्य में इसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है क्योंकि तसर रेशम् उद्योग आदिवासियों का परंपरागत उद्योग है एवं इनकी संस्कृति से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। भले ही रेशम उद्योग का लिपिबद्ध वैज्ञानिक साहित्य ज्यादा पुराना नहीं है परंतु इसका इतिहास प्राचीन है। फुटकर रूप में कृमिजन्य धागों से बनी जो मोतीजड़ी साड़ी मिली थी वह रेशम की ही थी। कालान्तर में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरों ने भी अपनी कविताओं में उन्नत किस्म के रेशम का उल्लेख किया है। इन तथ्यों से इस उद्योग की प्राचीनता का बोध होता है। भारत में तसर रेशम का जो उत्पादन होता है उसमें झारखंड राज्य अग्रणी भूमिका निभाता है। एक अध्ययन के अनुसार झारखंड की तीस जनजातियां इस उद्योग से जुड़ी हुई हैं। इसका कारण इस उद्योग का वनों पर आधारित होना है। इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि वनों से इन आदिवासियों को खास तौर पर गहरा लगाव है।

झारखंड राज्य का क्षेत्रफल 79,714 वर्ग कि.मी. एवं इसकी आबादी 2,18,43,911 है। यहां प्रतिवर्ग कि.मी. जनसंख्या का घनत्व 274 व्यक्ति है। कुल 23,253 वर्ग कि.मी. में जंगल फैले हुए हैं जिनमें जनजाति समुदाय के 60,44,010 लोग इस उद्योग में लगे हुए हैं। अगर प्रतिशत में इन तथ्यों को व्यक्त किया जाए तो कहा जा सकता है कि पूरे राज्य का 29.3 प्रतिशत क्षेत्र वनाच्छादित है एवं 27.66 प्रतिशत आबादी इनमें निवास करती है। यह उचित होगा कि झारखंड में तसर उद्योग की स्थिति को सही ढंग से दर्शाने के लिए झारखंड में जिलावार वन क्षेत्र एवं जनजातीय आबादी का ब्यौरा प्रस्तुत किया जाए। यह ब्यौरा तालिका में दर्शाया गया है (तालिका–1)।

लेकिन हाल के कुछ वर्षों में कतिपय कारणों से तसर रेशम के उत्पादन में लगातार गिरावट आई है और इसे दूर करने की आवश्यकता है। यहां तसर उद्योग की स्थिति पर व्यापक विचार–विमर्श करने हेतु विभिन्न योजनावधि में झारखंड राज्य में हुए तसर रेशम उत्पाद का विवरण तालिका–2 में दर्शाया गया है।

उद्योग की संभावनाएं

उल्लेखनीय है कि झारखंड देश का प्रमुख तसर उत्पादक राज्य है जहां 60 हजार कीटपालक परिवार तसर संवर्धन में लगे हुए हैं एवं एक आंकड़े के अनुसार वर्ष 1992–93 के दौरान 265 मीट्रिक टन तसर रेशम का उत्पादन हुआ। इस राज्य में कुल 73 हजार करघे चल रहे हैं

जिनमें 10.5 प्रतिशत रेशम धागे का उपयोग हो रहा है। अगर उपलब्ध संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए तो तसर कोसों, धागों एवं वस्त्रों के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। इस उद्योग को समृद्ध करने से राज्य में न सिर्फ आर्थिक उन्नति लाई जा सकती है अपितु पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी में वांछित सुधार भी संभव हो सकता है। इतना ही नहीं इससे वानिकी एवं कुटीर उद्योगों के विकास का नया द्वार भी खुलेगा। कोसा उत्पादक जिन्हें आमतौर पर तसर रेशम कीटपालक के रूप में जाना जाता है, की संख्या राज्य में लगभग 60 हजार है जो पूरे देश के कीटपालकों के 50 प्रतिशत के बराबर है। रोचक तथ्य यह है कि तसर रेशम उद्योग से न केवल घरेलू बाजार की आवश्यकताओं की पूर्ति होती अपितु इससे प्रति वर्ष 15–40 करोड़ रुपए की विदेशी मुद्रा का अर्जन भी होता है। गौर करने लायक है कि झारखंड में उद्योग एवं खनन की व्यापक संभावनाएं हैं परंतु लंबे समय तक अर्थव्यवस्था को सुस्थिर रखने के लिए सिर्फ ये ही पर्याप्त नहीं हैं। बदलते परिवेश में वन संपदा एवं पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण नियोजन एवं बंजर भूमि का उचित उपयोग तथा कुटीर उद्योगों की स्थापना की दृष्टि से तसर उद्योग पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

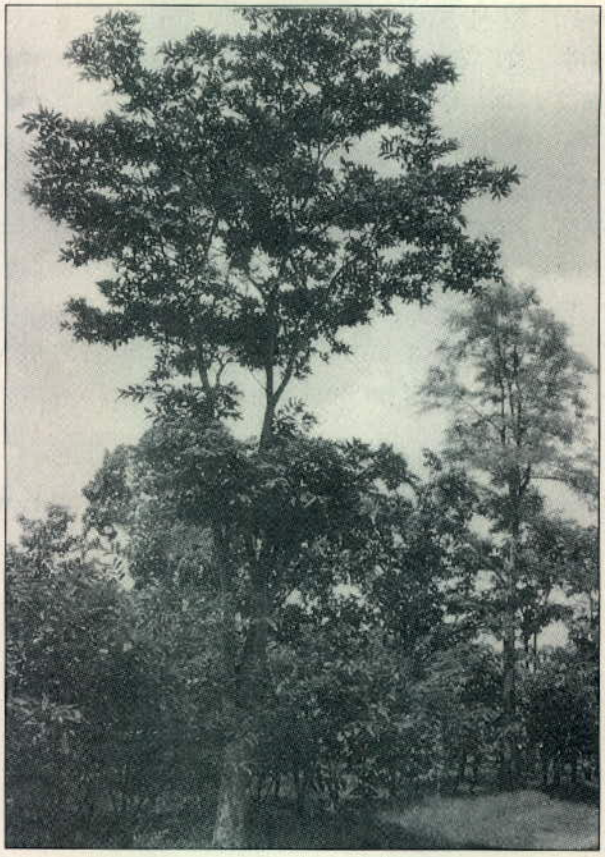

तसर भोज्य पौधे

झारखंड के वनों में साल एवं आसन के पेड़ बहुतायत से मिलते हैं जो तसर रेशम कीट के प्रमुख भोज्य पौधे हैं इसके अतिरिक्त तसर रेशमकीट के गौण भोज्य पौधे भी आसानी से इन वनों में उपलब्ध हैं। राज्य की अप्रयोज्य बंजर भूमि पर तसर भोज्य पौधों को लगाकर, वनाच्छादित कर तसर रेशम कीटपालन किया जा सकता है। ऐसा करने से बेरोजगार श्रम शक्ति का उचित उपयोग हो सकेगा एवं तसर उद्योग के माध्यम से लाखों लोगों को रोजगार देकर विकास की मुख्यधारा में लाया जा सकता है। इसी प्रकार रेशम कीटपालन में लगाए गए लोगों के अनुपात में कोसोत्तर प्रक्रियाओं में भी लोगों को शामिल किया जा सकता है। ऐसा कर नवसृजित राज्य में बेरोजगारों को रोजगार प्रदान करने का सुनहरा अवसर दिया जा सकता है।

तसर की खेती आय का एक अच्छा साधन है एक अध्ययन के अनुसार एक कृषक परिवार 200 रोगमुक्त चकत्ते का कीटपालन कर 6000–10,000 वाणिज्यिक कोसों की उगाही कर सकता है जिससे उसे नान फार्मिंग सीजन (खेती खलिहानी के लिए अनुपयुक्त समय) के 50 दिनों की अवधि में 4800 से 8000 रुपए तक की आय हो सकती है। यह वैयक्तिक स्तर पर किए गए प्रयासों से संभावित आय है। यदि सामूहिक रूप से इस कार्य में जुटा जाए और सामूहिक बीजागार की अवधारणा को मूर्त रूप दिया जाए तो इससे आय में और बढ़ोत्तरी हो सकती है।

पूर्व में तसर रेशम उत्पादन पूर्णतः वनों पर आधारित था परंतु विगत कुछ वर्षों से तसर रेशमकीट भोज्य पौधों के 4′–4′ अथवा 6′×6′ दूरी पर सघन उद्यान लगाने की पद्धति न केवल तसर रेशमकीट बीज फार्मों वरन कृषक स्तर पर भी अपनाई जा रही है। तसर रेशमकीट भोज्य पौधों के सघन ग्रामों के आस–पास की खाली भूमि एवं कृषकों की खेती योग्य भूमि में भी लगाए जा सकते हैं। तसर रेशमकीट खाद्य पौधे सड़कों, रास्तों के किनारे भी सामाजिक वानिकी कार्यक्रम के अंतर्गत लगवाए जाने चाहिए। झारखंड राज्य में निम्नकोटि, बंजर भूमि एवं झाड़ीनुमा जंगलों में तसर रेशमकीट भोज्य पौधे, वन रोपण कार्यक्रम के तहत लगवाए जा सकते हैं। जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होने के कारण प्रति व्यक्ति कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता में कमी हुई है। वर्तमान परिस्थितियों में यह अपरिहार्य हो गया है कि प्रति इकाई भूमि से होने वाली पैदावार एवं आय को बढ़ाया जाए। एक अनुमान के अनुसार सन 2002 में प्रति व्यक्ति उपलब्ध कृषि योग्य भूमि सिमटकर केवल 0.2 हेक्टेयर के आस–पास पहुंच गई है जो कि दो दशक पूर्व लगभग 0.34 हेक्टेयर थी। ऐसी विकट परिस्थिति में मिश्रित खेती एक अनिवार्यता हो गई है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर होने वाले पलायन को भी रोका जा सकेगा। वर्तमान परिस्थितियों में मिश्रित खेती एक

आशाजनक विकल्प है। तसर रेशमकीट पालन के साथ–साथ अन्य बहुपयोगी फसलों यथा – दालों, अनाजों, सब्जियों आदि की मिश्रित खेती द्वारा न केवल ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई जा सकती है अपितु धनाढ्यों से गरीबों की ओर होने वाले पूंजी प्रवाह को भी बढ़ाया जा सकता है। तसर रेशम उत्पादन की आधुनिक तकनीक का व्यापक प्रचार–प्रसार करने से न सिर्फ तसर रेशम प्राप्ति हेतु वनों पर निर्भरता कम होगी अपितु जलावन तथा चारे की समस्या का भी समाधान होगा। इसके अतिरिक्त कुछ तसर भोज्य पौधे यथा – हर्रा (टर्मिनेलिया चेबुला) व बहेड़ा (टर्मिनेलिया बेलेरिका) सुप्रसिद्ध औषधि 'त्रिफला' के दो अवयव हैं। अन्य तसर भोज्य पौधों के भी अनेकानेक औषधीय व वाणिज्यिक गुणों का दोहन करके अतिरिक्त लाभ कमाया जा सकता है। रेशमकीटों के उत्सर्ग के भूमि पर गिरने एवं उनके विघटन से मृदा की पोषक तत्वों की प्राप्ति से भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है।

भारत के ग्रामीण क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रेशम उद्योग शृंखलाबद्ध वाणिज्यिक गतिविधियों द्वारा ग्रामीण लोगों के लिये रोजगार उपलब्ध करवाता है। तसर रेशम उत्पादन श्रम आधारित है जिसमें अनेकों

तालिका–1

झारखंड में जिलावार वन क्षेत्र एवं जनजातीय आबादी

क्र.सं.	जिला	कुल क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)	वन क्षेत्र एवं प्रतिशतता	कुल आबादी	जनजातियों की आबादी एवं प्रतिशतता
1.	दुमका	621200	62913 (10.13)	1495709	621484 (41.55)
2.	गोड्डा	211000	31316 (14.84)	861182	216047 (25.09)
3.	देवघर	247900	34632 (3.97)	933113	110985 (12.76)
4.	साहेबगंज	160000	63534 (4.27)	1301088	507321 (38.99)
5.	पाकुड़*	18050000	–	–	–
6.	हजारीबाग	504900	320889 (28.74)	2843544	250586 (8.81)
7.	धनबाद	2086000	158419 (22.99)	2674651	225282 (8.42)
8.	गिरिडीह	294100	158419 (22.99)	2225480	271924 (12.22)
9.	बोकारो*	286100	–	–	–
10.	चतरा*	370600	–	–	–
11.	कोडरमा*	241000	–	–	–
12.	रांची	769800	159140 (20.67)	2214048	964422 (43.56)
13.	लोहरदगा	149100	44358 (29.75)	288886	162964 (56.41)
14.	गुमला	907700	137084 (15.10)	1153976	816988 (70.80)
15.	पूर्वी सिंहभूम	353300	122824 (34.76)	1613088	466572 (28.92)
16.	पश्चिमी सिंहभूम	99070	323487 (32.65)	1787955	978069 (54.70)

तालिका–2

विभिन्न योजनावधि के दौरान झारखंड राज्य में तसर रेशम उत्पादन

योजनावधि	वर्ष	राज्य में उत्पादन (टन में)
प्रथम योजना	1951–52	46.80
	1952–53	43.56
	1953–54	46.80
	1954–55	46.80
	1955–56	52.65
द्वितीय योजना	1956–57	54.00
	1957–58	54.00
	1958–59	72.00
	1959–60	71.11
	1960–61	76.77
तृतीय योजना	1961–62	78.80
	1962–63	81.87
	1963–64	79.55
	1964–65	85.91
	1965–66	106.82
ट्रांजिसनल	1966–67	112.05
	1967–68	115.61
	1968–69	89.45
चतुर्थ योजना	1969–70	113.00
	1970–71	199.00
	1971–72	168.00
	1972–73	207.00
	1973–74	128.00
पंचम योजना	1974–75	237.00
	1975–76	215.00
	1976–77	235.00
	1977–78	300.00
ट्रांजिसनल	1978–79	216.00
	1979–80	300.00
षष्ठ योजना	1980–81	168.00
	1981–82	170.00
	1982–83	149.00
	1983–84	275.00
	1984–85	290.00
सप्तम योजना	1985–86	331.00
	1986–87	438.00
	1987–88	351.00
	1988–89	215.00
	1989–90	267.00
ट्रांजिसनल	1990–91	281.00
	1991–92	222.00
अष्टम योजना	1992–93	265.00
	1993–94	168.00
	1994–95	168.00
	1995–96	128.00
	1996–97	135.00
नवम योजना	1997–98	144.00
	1998–99	120.00
	1999–2000	95.00
	2000–2001	120.00
	2001–2002	99.00

गतिविधियों में मानव श्रम सृजन के अवसर हैं। तसर रेशम संवर्धन द्वारा बेरोजगारी की समस्या के समाधान में सहायता मिलेगी। स्थानीय ग्रामीणों को रेशम उत्पादन और वन प्रबंधन में प्रशिक्षण एवं सुविधाएं देकर वनों को बिना हानि पहुंचाए तसर रेशम उत्पादन कार्य करने हेतु प्रेरित किया जा सकता है। इन सबसे ग्रामीण क्षेत्रों एवं जनजातीय लोगों में बेरोजगारी की समस्या के समाधान में सहायता मिलेगी। रोजगार की खोज में शहरों की ओर होने वाला पलायन भी कम होगा।

भारत की लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या महिलाओं की है जिसमें से 70 प्रतिशत महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं। सर्वेक्षण आधारित जानकारी के अनुसार ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों को मिलाकर रेशम उद्योग में महिलाओं की 50–60 प्रतिशत भागीदारी है। कृषि क्षेत्र में आने वाले व्यवसायों में महिलाओं की यह सर्वाधिक भागीदारी है। अतएवं झारखंड राज्य में रेशम उद्योग में महिलाओं की सहभागिता द्वारा उनके उत्थान की दिशा में भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया जा सकता है।

झारखंड जैसे विकासशील राज्य के लिये पर्यावरण संरक्षण एक अनिवार्यता है। उत्पादन की निरंतरता के लिए प्राकृतिक संसाधनों को विनाश से बचाने के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण भी आवश्यक है। जंगल सदियों से बड़ी संख्या में लोगों की आजीविका के साथ–साथ औद्योगिक गति का मुख्य आधार रहे हैं जो अब लकड़ी की कमी से प्रभावित होने लगी है। अतएव तसर रेशम संवर्धन द्वारा न केवल उल्लिखित समस्याओं के समाधान में योगदान किया जा सकता है अपितु तसर रेशमकीट प्रजातियों के संरक्षण एवं भोज्य पौधों के संवर्धन द्वारा पर्यावरण संरक्षण के कुछ अन्य पहलुओं पर भी ध्यान दिया जा सकता है। आधुनिक युग में जैव विविधता संरक्षण को एक अनिवार्य गतिविधि का दर्जा दिया गया हैं। तसर रेशम उत्पादन के अतिरिक्त जलावन एवं पशु चारे की प्राप्ति एवं भूमि की उर्वरा शक्ति के संरक्षण आदि लाभ भी प्राप्त किए जा सकते हैं। धागाकरण, कताई व बुनाई की प्रक्रियाओं को अपनाकर अर्थोपार्जन भी बढ़ाया जा सकता है, यदि कृषकों को उचित प्रशिक्षण दिया जाए।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची में किए गए सतत अनुसंधानों के पश्चात विकसित तसर रेशम उत्पादन की आधुनिक प्रौद्योगिकियों के अनुपालन द्वारा न केवल तसर खाद्य पौधों की पत्तियों में गुणात्मक एवं परिमाणात्मक सुधार लाया जा सकता है अपितु रेशम कीटपालन भी निश्चित व सुगम हुआ है। जोकि निश्चित रूप से तसर उद्योग द्वारा पूर्व में होने वाली आय से अधिक आय अर्जन की गारंटी प्रदान करता है। ❑

(लेखक ललन कुमार चौबे एवं डा. गार्गी : केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी, रांची के हिन्दी व प्रसारण प्रौद्योगिकी (स्थानान्तरण) अनुभाग में सेवारत हैं।)

IAS/PCS 2003-2004 (मुख्य, प्रारम्भिक, फाउंडेशन)

सामान्य अध्ययन
By
R.Kumar & Team

लोक प्रशासन
By
Mrs. Manisha Singh

इतिहास
By
R.Kumar

Commando Type Training

नये सत्र का कार्यक्रम

सामान्य अध्यन (प्रारंभिक)	14 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर
सामान्य अध्यन (फाउन्डेशन)	1 दिसम्बर 2003
भारतीय इतिहास (प्रारंभिक)	1 दिसम्बर 2003
लोक प्रशासन (Main & Pre)	15 नवम्बर 2003
भूगोल (Main & Pre)	15 नवम्बर 2003
हिन्दी साहित्य	15 नवम्बर 2003

Hostel facility arranged Separately for Boys & Girls.

IAS TUTORIALS

102,103 Jaina House, Mukherjee Nagar, Delhi-9

Ph. No :- 27651392, 27252444, 9810664003

Snews Ad. Ph.: 27050377

उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल की थारु जनजाति

○ रूपेश कुमार सिंह

थारु कद के छोटे, पीतवर्ण, चौड़ी मुखाकृति तथा समतल नासिक वाले होते हैं जो मंगोल प्रजाति के लक्षण हैं। कुछ लोग इन्हें भारत–नेपाल के आदिम निवासी सिद्ध करते हैं। थारु नाम की उत्पत्ति एवं उसके अर्थ के विषय में विभिन्न मत हैं। इनकी भाषा हिंदी एवं नेपाली से प्रभावित है। थारु जनजाति कई जातियों तथा उपजातियों में विभाजित है।

भारत का हृदयस्थल उत्तर प्रदेश जनसंख्या में सबसे बड़ा तथा राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण माना जाता है। अन्य राज्यों जैसे–बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश की भांति यहां (जनजातिय) जनसंख्या अधिक नहीं है, लेकिन नहीं हैं, लेकिन इसकी उत्तरी पहाड़ी तराई (नेपाल सीमा से सटे क्षेत्र) एवं दक्षिण की सोन पहाड़ियां जो कि वनाच्छदित हैं, आदिवासियों की कई जातियों का निवास स्थल है। उत्तर प्रदेश में आदिवासी 'अदृश्य जनता' के रूप में हैं और वर्ष 1961 तक की जनगणना में इनकी गणना नहीं की जाती थी। आज भी सरकार ने कोल, खरवार, गौंड, अगरिया आदि को अनुसूचित जनजाति ही माना है जबकि पड़ोसी राज्यों में (बिहार, मध्य प्रदेश) इन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्रदान किया गया है। वर्ष 1969 में महाड़ों एवं तराई की कुछ जातियां जैसे, भोटिया, भुक्सा, जौनसारी, राजी एवं थारु को अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया।

वर्ष 1991 की जनगणनानुसार उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल की अनुसूचित जनजाति की संख्या 2,87,901 थी जो प्रदेश की कुल जनसंख्या का 0.33 प्रतिशत थी।

वर्ष 2000 में उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों तथा कुछ मैदानी क्षेत्रों (हरिद्वार, उधमसिंह नगर जिलों) को लेकर उत्तरांचल राज्य का रूप दिय गया। अतः उत्तर प्रदेश के लखीमपुर, खीरी, बहराईच, श्रावस्ती, बलरामपुर, महाराजगंज तथा उत्तरांचल के नैनीताल एवं उधमसिंह नगर में थारु जनजाति का विस्तार है।

उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल में जनजातीय जनसंख्या (वर्ष 1991 के अनुसार)

क्र.सं.	जनजाति	जनसंख्या
1.	भोटिया	23,410
2.	भुक्सा	42,642
3.	राजी	494
4.	जौनसारी	64,948
5.	थारु	1,18,558

स्रोत : उत्तर प्रदेश (1991) जनजागरण रिर्पोट

क्र.सं.	जिले	जनसंख्या
	उत्तर प्रदेश	
1.	बहराईच+श्रावस्ती	9,358
2.	बलरामपुर	14,174
3.	लखीमपुर खीरी	26,335
4.	महाराजगंज	2,568
	उत्तरांचल	
1.	उधमसिंह नगर + नैनीताल	66,123

स्रोत : सांख्यिकीय डायरी, उत्तर प्रदेश, 2000

थारुओं की उत्पत्ति के विषय में अनेक भ्रामक सिद्धांत एंव किवदंतियां प्रचलित हैं। तार्किक रूप से इनमें से सीमाओं के अंदर केवल दो सिद्धांतों को रखा जा सकता है। सर्वप्रथम, अधिकतर थारु अपने को राणा वंश की उत्पत्ति कहते हैं। उनका विचार है कि मुसलमानों के अत्याचार व दमन नीति के कारण राजपूताने से 12 राणा भागकर इस क्षेत्र में आए जो धीरे–धीरे विस्तृत रूप से फैल चुके हैं। दूसरा सिद्धांत राजपूत स्त्रीयों से उत्पत्ति पर बल देता है। इनका कहना है कि जौहरव्रत की असहनीय पीड़ा से घबराकर कुछ राजपूत स्त्रियां अपने थोड़े से सेवकों के साथ जंगलों में छिपती हुई भागीं और समय के साथ–साथ आंतरिक वृत्तियों की संतुष्टि हेतु इन्हीं सेवकों से यौन–संबंध स्थापित कर लिए। इस प्रकार उत्पन्न संतान थारु कहलाई और यह कारण इनकी उच्च स्थिति की भी पुष्टि करता है। थारुओं की उत्पत्ति के विषय में कुछ प्रमाणित नहीं हुआ है।

थारु कद के छोटे, पीतवर्ण, चौड़ी

IAS 2004-05

ADMISSION OPEN

भूगोल

By (Eng./हिन्दी)

प्रो० माजिद हुसैन

"एक स्थापित और प्रतिष्ठित लेखक और 43 वर्षों से अधिक का अध्यापन का अनुभव"
(पाठ्यक्रम का 80% प्रो० माजिद हुसैन द्वारा : भौगोलिक चिंतन ❖ मानव भूगोल ❖ भौतिक भूगोल ❖ भारत का भूगोल ❖ मानचित्रण ❖ प्रक्षेपण, इत्यादि)
"मुख्य परीक्षा, 2002 में 100% परिणाम (भारत का एकमात्र संस्थान)"
'मुख्य परीक्षा, 2003 में 32 छात्र सम्मिलित'

STARTING 4th NOV. 9.00 A.M.

&

रमेश सिंह

M.A. (Delhi School of Economics), Ph.D (Social Economics)
(पाठ्यक्रम का 20% रमेश सिंह द्वारा : भारत में क्षेत्रीय नियोजन; नई औद्योगिक नीति; मुक्त व्यापार; व्यापार संतुलन; बहुराष्ट्रीय कंपनियां; उदारीकरण; ई०पी०जेड०; समसामयिक समस्याएं)

सामान्य अध्ययन

(Eng./हिन्दी)

By **रमेश सिंह**, निदेशक, *सिविल्स इंडिया*

'मुख्य परीक्षा, 2003 में 35 छात्र सम्मिलित'

STARTING 8th NOV. 9.00 A.M.

अखिलेश कु० झा, *IPS*
Delhi School of Economics (G.S: 346)

विभाश कु० झा
Delhi School of Economics (G.S: 334)

A PANEL OF BUREAUCRATS to deliver Expert Lectures (Honorary) on important issues.

दर्शन शास्त्र

By A Panel of D.U. Professors
WORKSHOP : 22 & 23 NOV. (5.00 P.M.)

लोक प्रशासन

By A Panel of D.U. Professors
WORKSHOP : 13 & 14 NOV. (2.00 P.M.)

यहां छात्र भारत के सभी जगहों से आकर कोचिंग करने के बाद पुनः कोचिंग करते हैं–यह हमारी गुणवत्ता का एक प्रसिद्ध प्रमाण है।

हमारी विशेषताएं :
- लिखित अभ्यास; सामयिक एसाइन्मेंट और परीक्षाएँ, आवश्यक पहलू।
- कोर्स अवधि 3/4½ महीने।
- पूर्ण अध्ययन सामग्रियां, इत्यादि।

स्क्रीन टेस्ट आधारित नामांकन
WORKSHOPS/कार्यशाला
(केवल नामांकित छात्रों के लिए)
भूगोल - 4 और 5 नवंबर, 2003 (कक्षा प्रारंभ)
सा० अध्ययन - 8 और 9 नवंबर, 2003 (कक्षा प्रारंभ)
*Best performance : Geog.-346; GS-395/600; Essay-174/200; Interview-240/300
*Fully AC Classrooms
*Correspondence Courses *Hostel facilities

CIVILS INDIA
An Institute For IAS
A/12-13, 202-203, ANSAL BUILDING, BEHIND BATRA CINEMA, DR. MUKHERJEE NAGAR, DELHI-110009
Ph.: 27652921, 27651344, 9810553368, 9818244224

मुखाकृति तथा समतल नासिक वाले होते हैं जो मंगोल प्रजाति के लक्षण हैं। कुछ लोग इन्हें भारत–नेपाल के आदिम निवासी सिद्ध करते हैं। वस्तुतः 'थारु' शब्द अपने पड़ोसी समुदायों के लिए विशिष्ट वनवासी जाति, धर्म संस्कृति, भाषा गंवार (मूर्ख) लोकजीवन, दर्शन आदि का बोधक हो चुका है। थारु नाम की उत्पत्ति एवं उसके अर्थ के विषय में विभिन्न मत हैं। इनकी भाषा हिंदी एवं नेपाली से प्रभावित है। थारु जनजाति कई जातियों तथा उपजातियों में विभाजित है।

सामाजिक व्यवस्था

थारु जनजाति में संयुक्त परिवार प्रथा देखने को मिलती है लेकिन धीरे–धीरे यह प्रथा टूट रही है। थारु अपने परिवार की स्त्रियों विशेषतः पुत्रवधुओं का अपनी कन्याओं से अधिक सम्मान करते हैं। इनमें पितृसत्तात्मक, पितृवंशीय एवं पितृस्थानिक पारिवारिक परंपरा पाई जाती है। इनकी नातेदारी व्यवस्था हिन्दुओं से मिलती–जुलती है। करीबी नातेदारों से यौन–संबंध निषिद्ध हैं। थारुओं में विवाह प्रथा बड़ी विचित्र है। इनमें वर पक्ष की ओर से किसी मध्यस्थ व्यक्ति द्वारा विवाह की बातचीत चलती है। पहले इसमें बदला अर्थात् बहनों के आदान–प्रदान की प्रथा थी। इसमें एक दूसरे की बहन से विवाह करते हैं। लेकिन अब यह प्रथा समाप्त होती जा रही है। अब 'तीन टिकठी' नामक प्रथा जोर पकड़ रही है। इसमें विवाह फागुन महीने के शुक्ल पक्ष में होते हैं। कभी–कभी बैसाख के शुक्ल पक्ष में भी विवाह में भी विवाह संपन्न होती है। इसे 'लठमखा भोज' कहते हैं। दोनों पक्षों की ओर से जब विवाह तय हो जाता है तो उसे 'पक्की पोढ़ी' कहते हैं। यह एकविवाही है, लेकिन बहुपत्नी विवाह भी हो सकता है। थारू अपने वैवाहिक संबंध नेपाल के थारुओं से भी करते हैं और इनके रिश्तेदार वहां रहते हैं

स्त्रियों की स्थिति

थारु समाज में स्त्रियों को व्यावहारिक रूप से प्राथमिकता प्राप्त है। प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री की इच्छज्ञ को ही प्रमुख स्थान दिया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों को कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। पुरुष स्त्रियों की सहायता कर सकते हैं लेकिन उन्हें काम करने से रोक नही सकते। इस समाज में स्त्री–पुरुष दोनों वर्ग साथ में शराब पीते हैं। थारु राणा राणा स्त्रियों का पहनावा राजस्थान से मिलता–जुलता है। जेवरात भी राजस्थान के जेवरों से मिलते–जुलते हैं। लेकिन वर्तमान समय में आधुनिकता की छाप इन पर पड़ रही है और इनके दृष्टिकोण में परिवर्तन आ रहा है। युवा पीढ़ी महिलाएं नवीन फैशनों का अपना रही हैं।

आर्थिका व्यवस्था

थारु जनजाति के लोग मूलतः कृषक हैं। तराई क्षेत्र होने के कारण यहां की भूमि बहुत उर्वरक है और फसल अच्छी होती है। इसके अतिरिक्त मछली का शिकार दूसरा आवश्यक कार्य है जो व्यवसाय तो नहीं कहा जा सकता है पर पारिवारिक व्यय कम करने में अत्यधिक सहायक है। थारु जंगली क्षेत्रों के समीप रहते हैं इसलिए शिकार भी करते हैं। थारु स्वभाव से वे सुस्त व ढीले होते हैं। जितनी उर्वरा जमीन उन्हें खेती के लिए प्राप्त है, उसके अनुपात में उनकी उपज अत्यधिक कम है जिसका प्रमुख कारण प्राचीन कृषि यंत्र एवं गतिविधियों का प्रयोग है। मछली मारना थारुओं का पारिवारिक कार्य है। समीप की शारदा नदी या नहर में पुरुष एवं स्त्रियां अपनी मछलियां अलग टोकरी में रखती हैं क्योंकि वे अपनी ही पकड़ी हुई मछली खाती हैं, न कि पुरुषों द्वारा पकड़ी हुई। अधिकतर थारु निर्धन हैं। उन्हें अकुशल एवं अपर्याप्त कृषि से भरपेट भोजन प्राप्त नहीं हो पाता और जो कुछ आय होती है उसका एक बड़ा भाग शराब एवं दूसरे प्रकार के अपव्यय में समाप्त कर दिया जाता है। सामाजिक उत्सवों पर किए गए व्यय भी उनकी आय को समाप्त करने में महत्वपूर्ण है। इसीलिए अधिकांश थारु ऋण में डूबे हैं।

धार्मिक व्यवस्था

थारु हिन्दू धर्म को मानते हैं। हिन्दू देवी–देवताओं की पूजा करते हैं। साथ की तंत्र मंत्र, भूत–प्रेत में भी विश्वास करते हैं तथा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए सूअर और बकरी की बलि देते हैं। दशहरा, होती, माघ की खिचड़ी, कन्हैया अष्टमी और बजहर इनके प्रमुख त्यौहार हैं। इसके अतिरिक्त ये मकर संक्रांति, गुड़िया और त्यौहार भी मनाते हैं। होली पर स्त्री–पुरुष दोनों शराब पीकर खूब गाते–नाचते हैं। थारु मुर्दों को दफनाते हैं और दसवां, तेरहवीं आदि करते हैं।

राजनैतिक व्यवस्था

थारु जनजाति के लोगों की अपनी बिरादरी पंचायते होती हैं। यही इनकी ग्रामीण अदालते हैं। इस बारे में यह जनजाति बहुत ही कट्टरपंथी है। 'मघप पंचगण मरिरा' के घूंट के साथ तर्क–वितर्क करते है। किसी भी न्याय में शराब की प्रमुख भूमिका होती है। पराजित पक्ष को शारीरिक और आर्थिक दंड सहना पड़ता है, क्योंकि बिरादरी निर्णय की किसी अन्य कोर्ट में अपील करना असंभव है।

समस्याएं

उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल के तराई क्षेत्रों में निवास करने वाली थारु जनजातियों की अनेक समस्याएं हैं। इनमें अशिक्षा, अकाल, मृत्यु, बेरोजगारी, गरीबी प्रमुख हैं। अधिकांश थारु जनजाति के लोग ऋणग्रस्त रहते हैं क्योंकि ये अपने त्यौहारों पर अधिक पैसा खर्च कर देते हैं। इन क्षेत्रों में मलेरिया का भयंकर

प्रकोप है। जिससे लोगों की मृत्यु हो जाती है। इनके गांवों में सड़क, पेयजल, बिजली, शिक्षा तथा बाल विकास मुख्य समस्याएं है।

इनके सर्वांगीण विकास के लिए अनुसूचित जाति/जनजाति कल्याण विभाग बनाकर सरकार इन्हें लाभ पहुंचा रही है। 'समेकित बाल विकास परियोजना' द्वारा आंगनबाड़ी केंद्रों की स्थापना की गई है। इसके साथ–साथ इन क्षेत्रों में कुछ प्रमुख गैर सरकारी संगठन भी कार्य कर रहे हैं जैसे –

राणा थारु परिषद

इस परिषद का मुख्यालय उत्तरांचल के नैनीताल जिले के खटीमा विकासखंड में स्थित है। इसकी शाखाएं सितारगंज और गदरपुर विकासखंड में भी हैं। थारु समाज में कार्य करने वाला यह गैर सरकारी संगठन थारुओं के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक विकास के लिए कार्यरत है। यह संगठन कृषि बागवानी, कुटीर उद्योग तथा पशुपालन आदि के माध्यम से इनके विकास के लिए कार्यद्रम चला रहा है। संस्थान का कार्यालय उत्तर प्रदेश के बहराईच तथा देवरिया जिले में स्थित है। इसकी शाखाएं समस्त थारु आबादी वाले क्षेत्रों में कार्यरत है। यह संस्थान थारु जनजाति के संवैधानिक एवं पारंपरिक अधिकारों के लिए पिछले 6 वर्षों से समुदाय की अगुवाई में 'था3 हक अभियान' चला रहा है। अभियान को गति देने में जुड़े लोगों, समूहों, लोक संगठनों को तैयार करने हेतु शिक्षित, प्रशिक्षित एवं संगठित करने के प्रयासों में लगा हुआ है।

संस्थान थारु जनजाति के पंचायत प्रतिनिधियों को विकास खंड स्तर पर पंचायती राज से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर प्रशिक्षण देता है। इनकी आर्थिक स्थिति का सशक्त करने के लिए स्व–सहायता समूहों का गठन कराना, प्रौढ़ शिक्षा तथा आंगनबाड़ी केन्द्रों की स्थापना गांवों में संस्थान द्वारा की गई है। धीरे–धीरे इनकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थित में बदलाव आ रहा है। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश तथा उत्तरांचल में निवास करने वाली थारु जनजातियों के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक स्थिति मं परंपरागत समाज की स्थिति से हटकर परिवर्तन आ रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि नई पीढ़ी के युवा वर्ग के लोग शिक्षा प्राप्त कर नवीन विचारों का प्रसार कर रहे है तथा इस समाज पर भी आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण तथा शहरीकरण का प्रभाव पड़ रहा है। इस प्रकार स्पष्ट है कि थारु समाज में गतिशीलता आई है लेकिन इस गतिशीलता ने कोई नया स्वरूप नही ग्रहण किया है। ❑

(लेखक डा. बाबासाहेब अम्बेडकर राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान संस्थान, महू में पीएच.डी. शोधार्थी हैं।)

उत्कृष्ट परम्पराओं का एक दशक
IAS/PCS
GENERAL STUDIES • ESSAY INTERVIEW
& PUBLIC ADMINISTRATION BY THE RENOWNED CONSULTANT
Mr. R.C. SINHA
Batches Start From • G.S. Eassay 23 Dec.'03 • Public Admin 3 Feb.'04
Contact Director- (AIR CONDITIONED CLASS ROOM)
Centre for Excellence
8-B, Elgin Road, Opposite Mishra Bhawan, Civil Lines, Allahabad
Note- Membership through Entrance Test only
Ph.: 0532-2611518

2003 के कुल परिणाम

हिन्दी माध्यम में शीर्षस्थ स्थान
अजय कु. मिश्र (पाँचवा)
महिलाओं में शीर्षस्थ स्थान एस. अस्विति (तीसरा)
भूगोल में सर्वोच्च अंक (418/600)
सर्वोच्च दस (10) में चार (4) स्थान 2, 3, 5 एवं 6
सर्वोच्च सौ (100) में उन्नीस (19) स्थान
कुल 286 में इक्यावन (51) सफल परीक्षार्थी

अजय कुमार मिश्र
पाँचवें स्थान के साथ
हिन्दी माध्यम में शीर्षस्थ

आदरणीय सुमन,

आज मैं जो स्थान पा हूँ, वह आपके मार्गदर्शन के कारण है और आपके बताए हुए मार्ग पर चलने के कारण ही मैं इस मंजिल पर हूँ। मेरी सफलता में भूगोल की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है और भूगोल की वजह से मैंने सामान्य अध्ययन में भी अच्छे अंक प्राप्त किया। आपके इस मार्गदर्शन के बदले में उन्हें यह कहते हुए कोई हिचक नहीं हो रही है कि आप सिविल सेवा परीक्षा हेतु भूगोल विषय में अत्यन्त सक्षम हैं।

Ajay Kumar Mishra
(अजय कुमार मिश्र)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

हिन्दी माध्यम का एकमात्र ऐसा कार्यक्रम जिससे दूर दराज के कितने विद्यार्थी उत्तीर्ण हो पाये।

सामान्य अध्ययन के लिए मैं पूरी तरह ENSEMBLE के अध्ययन सामग्री पर निर्भर थी जो बहुत ही परीक्षापयोगी–सघन एवं विस्तृत दोनो ही था इसने मेरी सफलता में सबसे बड़ी भूमिका अदा की। **एस. अस्विथी–तीसरा स्थान**

दो वर्षों तक बहुत सारी सामग्री की खोज करने के उपरान्त जब मैंने ENSEMBLE की अध्ययन सामग्री ली तो मैंने महसूस किया कि इसके अलावा मुझे किसी और सामग्री या पुस्तक की आवश्यकता ही नहीं। **अजय कु. मिश्र–पाचवाँ स्थान**

यद्यपि मैं किसी अन्य संस्थान का हिस्सा था परंतु मेरी सफलता ENSEMBLE के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम और गुणवत्ता विकास कार्यक्रम द्वारा ही सुनिश्चित हो पायी।
मयूर महेश्वरी–छठा स्थान

अब वही अध्ययन सामग्री जो अंग्रेजी में उपलब्ध थी हिन्दी में अनूदित। वही उपगमन वही गुणवत्ता।

सामान्य अध्ययन एवं भूगोल 10 नवंबर से डिस्पैच प्रारंभ

IAS/PCS 2003-04

सामान्य अध्ययन

प्रारंभिक परीक्षा विशेष

भारत की **एकमात्र** और **सबसे विशेषीकृत** सामान्य अध्ययन **प्रारंभिक परीक्षा** की **चार महीने** की गहन कक्षाएँ। प्रारंभिक परीक्षा कक्षा –जो हमारी विशेषता है और जिस पर हमारे जैसी कोई महारत नहीं रखता अब संपूर्ण परिमार्जित अध्ययन सामग्री के साथ–15 नवंबर से।

विशेषताएँ

- पुनः परिभाषित विषय वस्तु विशेषकर **अनुप्रयुक्त विषयों** पर बल
- मौलिक विज्ञान पर विशेष बल विशेषकर **गैर विज्ञान विद्यार्थियों** के लिए
- इतिहास, भूगोल समसामयिक और भारत संदर्भ ग्रंथ का **मानचित्रों द्वारा अध्ययन**
- **मानसिक योग्यता** के ऊपर विशेष महारत
- UPSC प्रारूप पर 3000 प्रश्नों का **नियमित रूप में अभ्यास**
- संपूर्ण अध्ययन सामग्री गहन रूप में।
- कक्षाओं की दिशा इस तरह से जिससे कि तथ्यों को याद करने में सहायता मिले।

भूगोल

पाँच (5) माहों की प्रारंभिक–मुख्य समन्वयित कक्षाएँ। **गैर भूगोल के विद्यार्थियों के लिए** विशेषकर रचा हुआ पाठ्यक्रम, जिसका प्रारम्भ मौलिक भूगोल से हो रहा है। साथ ही संपूर्ण रुप से परिमार्जित अध्ययन सामग्री भी। ऐसा संरचित, विस्तृत पाठ्यक्रम जो विद्यार्थियों को किसी अन्य पुस्तक को पढ़ने की आवश्यकता नहीं छोड़ता है और जिसके अध्ययन से 360–380 अंक आसानी से पाये जा सकते हैं।

मुख्य प्रारंभिक समन्वित – 15 नंवबर
प्रारंभिक परीक्षा विशेष – 12 नवंबर

आनन्द वर्द्धन द्वारा इतिहास
अरुण सिंह द्वारा दर्शनशास्त्र
प्रवीण किशोर द्वारा समाजशास्त्र
वी. के. त्रिपाठी द्वारा राजनीतिशास्त्र

ENSEMBLE

संपर्क: 2272, हडसन लाइन्स, किंग्सवे कैम्प, दिल्ली–110009
फोन न.: 011–27418242, **मोबाइल:** 0–9811506926.
इलाहाबाद कार्यालय: 485, मम्फोर्डगंज, फव्वारा चौराहा, शिवाजी पार्क के निकट, इलाहाबाद–2. मोबाईल: 9415217610
विवरणिका के लिए 50रु/– का मनीऑर्डर/ड्राफ्ट संबंधित पते पर भेजें।

शिक्षा और साक्षरता

○ आभा श्रीवास्तव

'ज्ञान तृतीय मनुष्यस्य नेत्र' वैदिककाल से ही शिक्षा को वह प्रकाश माना गया है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रकाशित करने की सामर्थ्य रखता है। इसलिए विद्वानों ने शिक्षा को तीसरा नेत्र कहा है। महाभारत काल के अनुसार–शिक्षा के समान कोई अन्तर्ज्योति नहीं है। शिक्षा द्वारा प्राप्त प्रकाश अज्ञान को दूर कर जीवन के वास्तविक मूल्यों को समझने का सामर्थ्य देता है। अपने विस्तृत अर्थ में शिक्षा का तात्पर्य आत्मसंस्कार, आत्मोन्नति से है जो कि आयुपर्यन्त चलने वाला तथ्य है। "यावज्जीवमधीते विप्राः"। क्योंकि व्यक्ति की निपुणता में उसके आत्मानुभवों का हाथ ही सर्वोपरि होता है। परन्तु आज शिक्षा शब्द का प्रयोग अत्यन्त संकुचित अर्थ में किया जाता है। आज शिक्षा का अर्थ अधिकतम अंकों के साथ परीक्षाएं उत्तीर्ण करना ही रह गया है। विद्या के नाम पर आज विद्यार्थी दिन–प्रतिदिन अविद्या के घोर अंधकार में ढकेले जा रहे हैं। आज विद्यार्थियों के साथ जुड़ी हुई सारी समस्याएं उश्रृंखलता, उदण्डता, अनुशासनहीनता शिक्षा के वास्तविक स्वरूप को भुला देने का ही परिणाम है। वस्तुतः साक्षरता और शिक्षा मौलिक रूप से दो भिन्न प्रक्रियाएं है।

आज साक्षरता के प्रतिशत दिन–प्रतिदिन नए कीर्तिमान बना रहे है। ज्ञान की नित नई शाखा का उदय हो रहा है फिर भी आज का मनुष्य टूटा हुआ, कुंठाग्रस्त और अशांत है और यह विभीषिका एकांगी शिक्षा का ही परिणाम है। वस्तुतः शिक्षा एक बहुआयामी प्रक्रिया है। शिक्षा का अर्थ है – व्यक्ति का

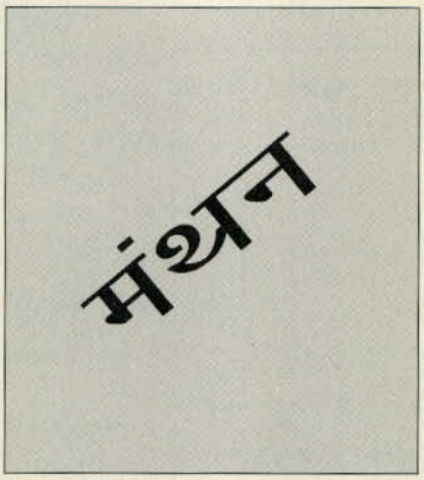

सम्यक् विकास। आज की स्थिति यह है कि शारीरिक एवं बौद्धिक दृष्टियां तो क्षितिज नाप रहीं हैं किन्तु विकलांगों की भांति क्योंकि उनके मानसिक एवं भावनात्मक विकास की ओर दृष्टिपात करने की आवश्यकता ही अनुभव नहीं की जा रही है। जबकि समस्या का समाधान सर्वांगीण विकास में ही निहित है। आज साक्षरता को ही शिक्षा का पर्याय मान लिया गया है किन्तु वास्तविकता कुछ और ही है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण 'मसि कागद छूयो नहीं कलम गह्यो नहि हाथ' कहने वाले महाकवि कबीर स्वयं हैं। अच्छे अच्छों को होश में ला देने वाले कबीर को अशिक्षित कह सकने का साहस कौन कर सकता है?

वस्तुतः शिक्षा वही सार्थक है जिसमें मेघा का संयोग हो। इस संदर्भ में एक बड़ी रूचिकर कथा है – चार मित्र थे। उनमें से तीन तो थे शास्त्रज्ञ पर एक था बुद्धिमान। शास्त्र उसने पढ़े नहीं थे। एक बार वे चारों धनार्जन के लिये परदेश जा रहे थे, रास्ते में उन्हें मृत सिंह की अस्थियाँ दिखीं। तीनों शास्त्रज्ञों ने विचार किया कि अपनी विद्या की परीक्षा करनी चाहिये। चौथे मित्र के मना करने पर भी एक ने अस्थि संचयन किया, दूसरे ने रक्त, मांस, मज्जा का संयोजन, तीसरे ने प्राण संचार किया। बुद्धिमान मित्र तो पेड़ पर चढ़ गया पर जीवित हुए सिंह ने उन तीनों शास्त्रज्ञों को मार डाला।"

श्री जे कृष्णामूर्ति ने अपनी पुस्तक *ऑन एजुकेशन* में ज्ञान (knowledge) और प्रज्ञान (Intelligence) का अन्तर स्पष्ट करते हुए लिखा है कि 'संवेदना एवं प्रज्ञान के अभाव में प्राप्त ज्ञान विनाशक होता है।' वस्तुतः शिक्षा का वास्तविक अर्थ तो मनोमय भूमि का वह विस्तार है जहां सहिष्णुता, सजगता और सर्तकता व्याप्त होती है तभी व्यक्तित्व का पूर्ण विकास सम्भव हो पाता है। श्री कृष्णमूर्ति के अनुसार सही शिक्षा अखण्डता एवं परिपूर्णता के साथ व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है साथ ही वह व्यक्ति को सहिष्णुता और सौन्दर्यानुभूति भी देती है। डॉ एनी बेसेन्ट के अनुसार – सार्थक शिक्षा वही है जो व्यक्ति को कठिनाइयों का सामना करने में समर्थ कर सके। वह परिस्थितियों को दास न बनकर उनका स्वामित्व करने में सक्षम हों।

स्वामी दयानन्द ने अपने धर्म विज्ञान में लिखा है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर जो मौलिक सत्ता विद्यमान है उनका पूर्ण प्रस्फुटन करना ही शिक्षा का लक्ष्य है। इसके अभाव में कोरा ज्ञान जिसमें दया और प्रेम का अभाव हो राक्षसी वृत्ति को जन्म देता है।

शिक्षा वही हितकारी है जो हमें सुखी संतुष्ट और स्वतंत्र रहने की कला सिखा सके, आत्मावलम्बी नागरिक बनने में

सहयोग, करे, सार्थक शिक्षा की व्याख्या करते हुए कृष्णमूर्ति जी कहते हैं कि – यदि हम 'स्व' की परिधि को तोड़ सकें, हममें विनम्रता हो, सहानुभूति हो तभी हमारी अंतःचेतना का सहज प्रस्फुटन सम्भव है और वही हमें कीचड़ में कमल की तरह जीवन जीने की कला का बोध करा सकता है। अंत चेतना के प्रस्फुटन के अभाव में हम सत्यं शिवं सुन्दरम् की चेतना का स्पर्श भी प्राप्त नहीं कर सकते।

शिक्षा को उसके सही अर्थों में न समझ पाने का परिणाम है कि हम जितना ही शान्ति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं उतनी ही अशान्ति हमें मिलती है। संक्षेप में कह सकते हैं कि शिक्षा का मौलिक उद्देश्य डिग्रियां प्राप्त करना नहीं वरन् उसका उद्देश्य है शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करना। एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना जो आत्मासम्मान से युक्त हो तथा दूसरे का सम्मान करने वाला हो। इसीलिए हमारे ऋषि कहते हैं – 'सा विद्या या विमुक्तये'। ❑

(लेखिका बनारस के सेंट्रल हिन्दू स्कूल के हिंदी विभाग में प्रवक्ता हैं।)

पढ़ना–बढ़ना

लोक भाव है, लोकतंत्र है पढ़ना-बढ़ना
हर विकास का मूलमंत्र है पढ़ना-बढ़ना

नए इरादों, विश्वासों का लेखा जोखा
शब्दों का, मूल्यों का यह संयोग अनोखा
मृदु भावों में संकल्पों के मोती जड़ना
लोकभाव है, लोकतंत्र है पढ़ना-बढ़ना
हर विकास का मूलमंत्र है पढ़ना-बढ़ना

पढ़-पढ़कर उल्लास जगाना प्रगति पथ में
बढ़-बढ़कर जयघोष गुंजाना दिग्दिगंत में
शिखर-शिखर पर नए कीर्तिमानों का मढ़ना
लोक भाव है, लोकतंत्र है पढ़ना-बढ़ना
हर विकास का मूलमंत्र है पढ़ना-बढ़ना

कठिन परिश्रम, सतत कर्म का मर्म समझना
सचमुच में आख़िर क्या कुछ है धर्म समझना
जड़ता, भूख, गरीबी, अवरोधों से लड़ना
लोक भाव है, लोकतत्रंत है पढ़ना-बढ़ना
हर विकास का मूलमंत्र है पढ़ना-बढ़ना

शेरजंग गर्ग

IAS/PCS
सफलता का सरलतम मार्ग...
INSTITUTE OF ADMINISTRATIVE STUDIES
(IAS)
प्रशासनिक अध्ययन संस्थान
वर्तमान और भविष्य का सुरक्षित व अंकदायी विषय
लोक प्रशासन
by
अशोक कु० दुबे
एक दशक का सफल अध्यापन अनुभव .....
इतिहास
प्रारंभिक परीक्षा के लिए
11 दिसंबर से
संस्थान की विशेषताएँ
• मॉडल व दृश्य माध्यम द्वारा लोक प्रशासन का जीवंत अध्यापन
• उत्तरों की प्रस्तुति में सकारात्मकता और सृजनात्मकता का पर्याप्त उपयोग
• विषय का विशद, समग्र और विश्लेषणात्मक अध्यापन
• G.S. में उपेक्षित बिन्दुओं पर भी समान रुप से बल
• परिष्कृत तथा परिमार्जित अध्ययन सामग्री
• मौलिक प्रश्न-पत्रों के माध्यम से नियमित प्रगति जाँच
पत्राचार पाठ्यक्रम उपलब्ध
FREE Class
16th Nov.
(4 p.m.)
लोक प्रशासन by
अशोक कु० दुबे
नोटः- SC/ST/OBC, विकलांगों व महिलाओं के शुल्क में विशेष रियायत
Foundation 2004
(Mains Cum Pre.)
102/B-14, Ist Floor, Com. Complex, Near HDFC ATM, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi - 110009
Separate Hostel Facility
Ph. 27651002, M. 9811291166

IAS PCS

वैकल्पिक विषय

अर्थशास्त्र

by

आनन्द शुक्ला

JRF NET

आनन्द एकैडमी

13/3D, Bund Road, Opp. A.U. Library, Alld. Ph.: 2466692, Mob. 9415254465

सदस्यता कूपन

❑ नई सदस्यता ❑ नवीनीकरण ❑ पता बदलने के लिए

(जो लागू होता हो उस पर '✓' का चिह्न लगाएं।)

मैं ..... (पत्रिका का नाम एवं भाषा)

का ❑ वार्षिक (70 रुपये) ❑ द्विवार्षिक (135 रुपये) ❑ त्रिवार्षिक (190 रुपये) सदस्य बनने का इच्छुक हूं।

डिमांड ड्राफ्ट/भारतीय पोस्टल आर्डर/मनीआर्डर संख्या ..... तारीख .....

नाम .....

वर्ग ❑ विद्यार्थी ❑ शिक्षक ❑ संस्था ❑ अन्य

पता : .....

.....

.....

पिन .....

नवीनीकरण/पता बदलने के लिए कृपया अपनी सदस्य संख्या यहां लिखें ☐

डिमांड ड्राफ्ट/भारतीय पोस्टल आर्डर/मनीआर्डर 'निदेशक, प्रकाशन विभाग' के नाम से बनवाएं और कूपन के साथ निम्न पते पर भेजें :

विज्ञापन एवं प्रसार व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग, ईस्ट ब्लाक IV, लेवल VII, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110066,
दूरभाष : 26100207, 26105590

पहली प्रति की प्राप्ति हेतु आठ से दस हफ्ते का समय दें।

ग्रामीण बालिकाओं के लिए बेमिसाल उदाहरण – स्व उत्थान

❍ ममता भारती

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में एक कस्बा है – अनूपशहर। वहां ग्रामीण लड़कियों के एक स्कूल में एक नया प्रयोग शुरू किया गया है। मुक्त शिक्षा लेने के साथ–साथ छात्राएं अपना व्यावसायिक कौशल बढ़ाकर वहां खुद अपने हाथों अपनी तकदीर संवार रही हैं। अमेरिका में 40 वर्ष काम करने के बाद अपने देश वापस आए वीरेन्द्र सिंह ने करीब सवा करोड़ रुपया लगाकर अपने गांव में इस स्कूल की स्थापना नवम्बर 2000 में की थी।

विदेशों में चल रहे व्यावसायिक शिक्षण संस्थानों की तर्ज पर अपने देश में शुरू किए गए इस स्कूल में फिलहाल 160 लड़कियां पढ़ रही हैं। इस स्कूल में पढ़ने वाली छात्राओं को प्रतिदिन दस रुपया वजीफा, मुक्त किताबें, यूनीफार्म, नाश्ता और दोपहर का खाना दिया जाता है। वजीफे में मिली धनराशि संचित करने के लिए प्रवेश लेते समय ही छात्रा के नाम से बैंक में उसका एक खाता खोल दिया जाता है जिसमें वजीफा राशि जमा होती रहती है। स्कूल छोड़ते समय वह बड़ी रकम लड़कियों को मिल जाती है जो उनकी शादी के वक्त काम आती है।

स्कूली पढ़ाई के साथ–साथ वहां पढ़ने वाली बालिकाओं को सिलाई, कढ़ाई जरदोजी, क्रांसस्टिच तथा एप्लीक का काम भी सिखाया जाता है ताकि वे बड़ी होकर आत्मनिर्भर बन सकें। अपने अंदर पैदा किए गए हुनर का फायदा उठा सकें।

इतना ही नहीं उन्हें संगीत एवं नृत्य की शिक्षा भी दी जाती है। दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्रों से स्कूल तक आने के लिए छात्राओं को स्कूल से ही मुफ्त साइकिल भी मिल जाती है। स्कूल का भवन विस्तारित होते ही अगले साल से छात्राओं की संख्या बढ़ाकर दोगुने से भी अधिक कर दी जाएगी तथा अन्य क्षेत्रों में भी इस स्कूल की शाखाएं खोली जाएगीं।

निजी क्षेत्र में शिक्षा के नाम पर जो लूट मची है उसी समंदर में कुछ बेमिसाल टापू ऐसे भी हैं जो गैर सरकारी होते हुए भी समाज के लिए कल्याणकारी, पथ प्रशस्त करने में मिसाल सिद्ध हो रहे हैं। हमारे देश के सम्पन्न वर्ग को ग्रामीण बालिकाओं को खुद अपने पैरों पर खड़े करने के ऐसे कामों के लिए आगे बढ़ाना चाहिए, क्योंकि समाज के प्रति सिर्फ सरकार की ही नहीं बल्कि हमारी भी कुछ जिम्मेदारी है।

निर्धन ग्रामीण परिवारों में लड़कियों को पूरा जीवन प्रायः घरेलू काम–धंधे निपटाने में ही निकल जाता है। गांव–देहात की लड़कियां पढ़–लिख जाएं। वे घर बैठे कुछ आमदनी करने लायक हो जाएं तथा उन्हें अपने अधिकारों की सही और पूरी–पूरी जानकारी भी हो तो उनका जीवन स्तर तो अपने–आप सुधर जाएगा। वे खुद अपनी गुत्थियों को सुलझा सकेगीं। अपने पूरे परिवार को तरक्की के रास्ते पर आगे बढ़ा सकेगीं। कष्ट और अभावों भरी जिंदगी को भी खुशहाल बना सकेगीं।

अपना भविष्य बनाने की इस मुहिम में लगी लड़कियां सुबह को प्रथम सत्र में मध्यानांतर होने से पूर्व मनमाफिक व्यावसायिक प्रतिशक्षण प्राप्त करती हैं। फिर अपरान्ह को दूसरे सत्र में उनकी पढ़ाई– लिखाई चलती है।

इस बेमिसाल कन्या विद्यालय का नाम है – परदादा परदादी स्कूल। शिक्षण प्रशिक्षण के अलावा इन छात्राओं के स्वास्थ्य की नियमित देखभाल के लिए हर सप्ताह एक महिला डाक्टर भी स्कूल में आती हैं। दरअसल शुरूआत में तो लोगों को विश्वास ही नहीं हुआ था कि हमारे देश में ऐसा भी कुछ हो सकता है जोकि अपने–आप में एक अनोखी मिसाल हो। इसलिए पहले साल सिर्फ 45 लड़कियां ही स्कूल आई थीं। साल पूरा होते होते उनकी भी संख्या घटकर सिर्फ 29 रह गई थी। अब जब सच सबके सामने खुलकर आया तो 500 आवेदन–पत्र विचाराधीन पड़े हैं। जगह और शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या कम पड़ रही है। हस्ताशिल्प का जो सामान ये लड़कियां बनाती हैं वे देश विदेश के बड़े–बड़े शो रूमों में हाथों हाथ बिक जाता है।

इस स्कूल में पढ़ने वाली लड़कियों को मुख्य रूप से अनुशासन, साफ सुथरे ढ़ग से रहना, एक–दूसरे की मदद करना तथा अपनी सेहत का ख्याल रखना सिखाया जाता है। देश के विभिन्न हिस्सों से आए कुशल प्रशिक्षक, छात्राओं को उनकी रुचि के अनुसार तरह–तरह के हुनर सिखाकर उन्हें रोजगार सृजन में दक्ष करते हैं। बाजार में बिक्री करने के उद्देश्य से छात्राओं से कोई तैयार नहीं कराया जाता है। सिलाई, बुनाई और कढ़ाई आदि के पारम्परिक ज्ञान को आधुनिक शोध–विकास की ऊर्जा मिल जाने से कौशल में एक नया निखार आया है जो इन छात्राओं के सतरंगी सपनों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होगा। इसीलिए तो कहते हैं कि – जहां चाह वहां राह...। ❑

IAS 2003-04

D. KUMAR'S MODULAR G.S. & History

Next Batch of

Indian Economy

From 10th Nov. 2003

Courses Available:

- IAS PT cum MAINS 2004
- PCS U.P. & Rajsthan
- Foundation Course 2004

Both Hindi & English

ORIGIN

IAS STUDY CENTRE

2041,OUTRAM LINES, DELHI-9

PH: 011- 27444189, 32347048 & 9811599917

e-mail: dkumarorigin@hotmail.com

Abhivyakti/Org005

ऑटिस्म

○ विनोद कुमार मिश्र

ऑस्टिम के शिकार बच्चे जन्म से ही दूसरे बच्चों से भिन्न होते हैं। वे अपनी देखभाल करने वालों से दूर भागते हैं। वे या तो बहुत ज्यादा शांत रहते हैं या बहुत ज्यादा बेचैन रहते हैं। जो बच्चे शांत रहते हैं वे किसी चीज की माँग ही नहीं करते हैं। जो बेचैन रहते हैं वे जरा–जरा–सी बात पर अपना सिर पटकना आरम्भ कर देते हैं।

ऑटिस्म एक किस्म की मानसिक विकृति है जिसके बारे में समाज में अत्यल्प जानकारी है और इसके कारण अनेक गलत धारणाएं विद्यमान है।

ऑस्टिम के शिकार बच्चे जन्म से ही दूसरे बच्चों से भिन्न होते हैं। वे अपनी देखभाल करने वालों से दूर भागते हैं। वे या तो बहुत ज्यादा शांत रहते हैं या बहुत ज्यादा बेचैन रहते हैं। जो बच्चे शांत रहते हैं वे किसी चीज की माँग ही नहीं करते हैं। जो बेचैन रहते हैं वे जरा–जरा–सी बात पर अपना सिर पटकना आरम्भ कर देते हैं।

जीवन के पहले चंद सालों में अधिकांश ऑटिस्टिक बच्चे सामान्य बच्चों की तरह बात करना, घुटने चलाना आदि गतिविधि करने लगते हैं। डेढ साल से तीन साल की आयु के पश्चात आटिस्टिक बच्चों के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। अब ये बच्चे बातचीत में, सामाजिक व्यवहार में, पहचान करने में पिछड़ने लगते हैं। अब वे अपनी गतिविधि को अनावश्यक रूप से दोहराने, बिना उद्देश्य काम करने, चीखने–चिल्लाने जैसे काम करने लगते हैं। वे अपने–आपको चोट लगा लेते हैं। उनकी खाने, सोने जैसी गतिविधियाँ भी असामान्य हो जाती हैं तथा कई बार तो उन्हें दर्द होता ही नहीं है या वे दर्द होने पर अनावश्यक रूप से चीखते–चिल्लाते हैं।

कुछ बच्चे एक ही चीज की बार–बार मांग करते हैं। यदि उसमें जरा–सा भी परिवर्तन हो जाता है तो वे परेशान हो जाते हैं और हंगामा खड़ा कर देते हैं। वे एक ही प्रकार के भोजन, एक ही पेय, एक ही कपड़ा पहनने पर जोर देते हैं। कुछ बच्चे तो एक ही रास्ते से स्कूल जाने की भी जिद् करते हैं। नई स्थिति में उन्हें घबराहट होती है।

धीरे–धीरे इन बच्चों में विचित्रताएँ बढ़ती चली जाती हैं। जो बच्चा ज्यादा प्रभावित होता है उसे बड़ा होने पर आश्रम में रहना पड़ता है। जिन पर कम प्रभाव पड़ता है वे माता–पिता के साथ या स्वतंत्र रूप से भी रह लेते हैं।

कई ऑटिस्टिक व्यक्ति स्नातक डिग्री तक पा लेते हैं और नौकरी भी करते हैं। हांलाकि वे व्यवहार के कारण विचित्र व्यक्ति कहलाते हैं। उनमें से कई का सामाजिक व्यवहार सहनीय होता है पर कुछ समाज से कट जाते हैं और कुछ तो समाज विरोधी भी हो जाते हैं। कुछ की भाषा अटपटी ही रहती है पर ज्यादातर लोग अपनी बात कह लेते हैं।

कारण

ऑटिस्म के कारणों का निश्चित ज्ञान अभी तक नहीं हो पाया है और इस विषय पर शोध जारी है। ऑटिस्म जीन पर भी अनुसंधान हो रहा है। यदि माता–पिता में यह जीन विद्यमान है तो बच्चे में इसकी संभावना काफी होती है।

यह भी संभावना है कि ऑटिस्म निश्चित वायरस के कारण होता है। यदि गर्भवती माता रुबैला की शिकार होती है तो ऑटिस्म का खतरा होता है। यह भी संभावना बताई जाती है कि टीकों (जैसे मीजल्स, एम.एम.आर.,डी.पी.टी. आदि) के कारण उत्पन्न वायरस ऑटिस्म का कारण बनते हैं। वातावरण के प्रदूषण और फैलता जहर भी ऑटिस्म का कारण है।

अनुसंधानकर्ताओं को ऑटिस्म से पीड़ित व्यक्तियों के मस्तिष्क में असमान्यताएं मिली हैं पर इनका कारण अभी ज्ञान नहीं हुआ है और इसके कारण इनके व्यवहार पर पड़ने वाले असर की

IAS/PCS

Main-cum-Prelim 2004

UGC/CSIR NET

FEEL THE MAGIC OF

The Most Personalized Coaching*

IN

ECONOMICS,COMMERCE & ACCOUNTANCY,POLITICAL SCIENCE,PUB. ADMN.,LAW
GEOGRAPHY,SOCIOLOGY,HISTORY,PHILOSHOPHY,PSYCOLOGY
ZOOLOGY,BOTANY,CHEMISTRY,PHYSICS,MATHEMATICS
ENGLISH LITT.,HINDI LITT.,SANSKRIT LITT.
& GENERAL STUDIES

We kalp your dreams into reality.

KALP ACADEMY

The Citadel of Excellence for the Civil Service Examination

Separate Hostels for **Girls & Boys**

Separate Batches for **Hindi & English** mediums

Fresh Batches For Main-cum-Prelim 2004

Start November 3rd & November 15th 2003

*Ask "what's this" to the Counselor at

A 38-40,Ansal Building,Commercial Complex
Near Mother Dairy [Safal],Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009.
Ph : 011-27655825, 27655826, 20054802
Cell: 0-9810565283, 9868024975

For prospectus send DD/MO worth Rs. **100/-** in favour of KALP ACADEMY

Abhivyakti/kalpobi

जानकारी नहीं है। यह संभावना जताई जाती है कि ऑटिस्म के कारण शरीर का प्रतिरोधी तंत्र कमजोर हो जाता है।

इसके अलावा कई ऑटिस्म से पीड़ित व्यक्तियों की ज्ञानेंद्रियाँ प्रभावित हो जाती हैं। उनकी सुनने की क्षमता, देखने की क्षमताएं स्पर्श की क्षमता, स्वाद की क्षमता, प्रभावित हो सकती है। यह क्षमता कम भी हो सकती है और ज्यादा भी। कुछ लोग तो इतने सतर्क रहते हैं कि दूसरे से शारीरिक संपर्क भी बर्दास्त नहीं करते हैं। कुछ लोग निश्चित प्रकार की आवाज बर्दास्त नहीं कर पाते हैं और कान ढके रहते हैं। दूसरी ओर कुछ लोग ध्वनि पर प्रतिक्रिया तक नहीं व्यक्त करते हैं।

ऑटिस्म के बारे में पहला जानकारीपूर्ण लेख डा. लियो कैनर ने आज से 50 वर्ष पूर्व लिखा था। पहले इंग्लैड एवं अमेरिका जैसे विकसित देशों में हर दस हजार नवजात शिशुओं में 4.5 बच्चे ऑटिस्म के शिकार होते थे। धीरे–धीरे ऑटिस्म का प्रभाव बढ़ रहा है और आबादी का आधा प्रतिशत ऑटिस्म का शिकार है। यह बीमारी महिलाओं के मुकाबले पुरुषों पर तीन गुना ज्यादा असर डालती हैं।

विशेष बात यह है कि ऑटिस्म से पीड़ित लोगों में से 10 प्रतिशत लोगों में संगीत, कला जैसी प्रतिभा भी होती है। कुछ में गणित की असाधारण प्रतिभा होती है और वे पुराने दिनों, हफ्तों, सालों की गणना आसानी से कर लेते हैं। कुछ लोग किसी एक पक्ष पर ज्यादा ध्यान देते हैं। जैसे, यदि उन्हें पक्षी दिखाया जाए तो वे उसके रंग पर ज्यादा ध्यान देते हैं।

अब तक परिवार के लोग ऑटिस्टक बच्चों से विभिन्न परंपरागत और गैर–परंपरागत तरीकों से व्यवहार करते थे। कुछ दवाएँ तैयार करने के भी प्रयास किए गए। विटामीन बी–6 में मैग्नैसियम मिलाकर दिया जाता था और इससे ऑटिस्म से पीड़ित बच्चों को काफी लाभ हुआ।

कुछ आँतों में अतिरिक्त पदार्थ जमा होता है और इसका भी इलाज संभव है। भोजन संबंधी सीमाओं को दूर करने के लिए ऑटिस्टिक बच्चे के भोजन से कुछ पदार्थ हटा दिये गए और इसका काफी लाभ व्यक्ति/बच्चे का मिला।

ज्ञानेन्द्रियों संबंधी विकारों को दूर करने के लिए भी प्रयास किए गए। एक ऑटिस्टिक महिला ने अपने लिए एक मशीन बनाई जिससे लिपट–लिपटकर उसे आराम मिलता था। कुछ बच्चों को झूला झूलाने से आराम मिलता है। इसी प्रकार अन्य प्रकार के बच्चों को भी इसी प्रकार की चिकित्सा दी जाती है।

ऑटिस्म के बारे में अन्य तथ्य

1. ऑटिस्म से पीड़ित बच्चे–बड़े देखने में असामान्य लगते हैं। देखने वालों को लगता है कि वे मानसिक रोग या पागलपन के शिकार हैं, पर ऐसा नहीं है। कुछ लोग यह धारणा बना

☎ 2331560, 2757086
हिन्दी एवं इतिहास का टॉपर संस्थान
एकेडमीशियन्स IAS
C-50, अलकापुरी, अलीगंज, लखनऊ
Total Selections - IAS - 129, PCS - 327
IAS - 2002 - 12, 1 in Top 10, 4 in Top 100
इतिहास रहीस सिंह द्वारा।
विशेषताएं– ❖ 12 वर्षों का अध्यापन अनुभव।
❖ 6 अत्यन्त लोकप्रिय पुस्तकों (हड़प्पा सभ्यता, दिल्ली सल्तनत, मुगल, आधुनिक भारत, स्वतंत्रता संघर्ष) के लेखक।
❖ प्रारम्भिक परीक्षा में 75% से अधिक एवं मुख्य परीक्षा में 81% परिणाम (तथा 75.4% तक अंक) दिलाने में सफल।
❖ विषय की विशेषज्ञता के संदर्भ में आप परिणाम देखकर या छात्रों से जानकारी ले सकते हैं।
हिन्दी डा0 सुशील सिद्धार्थ
विशेषताएं– ❖ 20 वर्षों का अध्यापन अनुभव ❖ लेखक, सम्पादक (सहायक सम्पादक 'तद्भव' एवं 'कथाक्रम')।
❖ बेहतर अंक (IAS में 70% तक, PCS में 75% तक)।
❖ समग्र पाठ्यक्रम का पाठ्य सामग्री सहित अध्यापन।
General Studies
विशेषज्ञों की टीम द्वारा, सटीक एवं बेहतर अध्यापन एवं 15 दिन पर एक सेमिनार जिसमें (IAS, PCS प्राध्यापक एवं पत्रकार) अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।
LAW, PCS(J) APO डा. पी.पी. सिंह
एवं अन्य (गेस्ट फैकल्टी के रूप में रिटायर्ड जज, वरिष्ठ अधिवक्ता एवं विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक)।
दर्शन शास्त्र
श्रेष्ठ प्राध्यापकों (लखनऊ एवं इलाहाबाद) द्वारा।
Sociology Faculty from LU
COURSES : Foundation Course (1 yr.), Main, Main-cum-Pre & Pre
BATCHES : Cycle Batch (from 1st Week of each Month)

लेते हैं कि यह माता–पिता की लापरवाही या अनावश्यक लाड़–प्यार का नतीजा है पर यह भी सही नहीं है।

2. ऑटिस्म जीवन भर की विकलांगता है जो जीवन के पहले तीन वर्षों में ही दिखाई देने लगती है। इससे भाषा, विचार, रुचि आदि प्रभावित हो जाती हैं। कई बच्चे तो अपनी जरूरतें शब्दों द्वारा बता भी नहीं पाते हैं। कुछ सो नहीं पाते हैं तो कुछ खा नहीं पाते हैं।
3. कुछ लोग ऑटिस्म से बहुत ज्यादा पीड़ित होते हैं। वे मुस्कराते भी नहीं हैं। कुछ अपनी माता से भी लगाव महसूस नहीं करते हैं। वे साथ खेल रहे बच्चों के प्रति भी आकर्षित नहीं होते हैं।
4. ऑटिस्म से पीड़ित बच्चों का भाषा विकास खासा प्रभावित होता है। कुछ बच्चे तो बिल्कुल नहीं बोल पाते हैं। कुछ निरर्थक शब्द दोहराते रहते हैं। कुछ व्याकरण संबंधी अशुद्धियाँ करते हैं। कुछ को सुनाई देने वाली गतिविधियाँ समझ में नहीं आती है। वे कुछ आवाजों से परेशान हो जाते हैं जबकि कुछ आवाजों से अप्रभावित ही रहते हैं। वे खतरनाक काम में भी नहीं होते हैं पर कभी–कभी मामूली–सी बात से भी विचलित हो जाते हैं।
5. घर के फर्नीचर में परिवर्तन, खाने या सोने के समय में परिवर्तन, खाने के मीनू में परिवर्तन आदि से उनके व्यवहार में काफी परिवर्तन हो जाता है।
6. विशेष शिक्षा तथा प्रशिक्षण ऑटिस्टिक बच्चें के जीवन में परिवर्तन लाता है। यदि स्कूल में ऐसे बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जाए तो वह काफी लाभदायक होता है।
7. ऑटिस्म से पीड़ित बच्चों को अनुपयोगी नागरिक नहीं मानना चाहिए वरन उनकी क्षमताओं का ज्यादा से ज्यादा विकास करते उन्हें नागरिक बनाने का प्रयास करने चाहिए। थोड़े से प्रयास से ही वे आत्मनिर्भर बन सकते हैं। उनमें और मानसिक रूप से अविकसित व्यक्तियों में काफी अंतर होता है। ऑटिस्म से पीड़ित बच्चे/वयस्क कुछ मामलों में सामान्य लोगों से काफी बेहतर होते हैं।
8. यदि बोलने में परेशानी है तो स्पीच थेरेपी लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यथासंभव उन्हें घर पर ही रखना चाहिए। इससे उन्हें सामान्य समाज से घुलने–मिलने में आसानी होगी। हॉस्टल में रखना अन्तिम विकल्प होना चाहिए।
9. आम तौर पर देखा गया है कि ऑटिस्म से पीड़ित काफी लोग शादी करना पसंद नहीं करते। पर फिर भी यदि व्यक्ति रोजगारशुदा है या आर्थिक रूप से संपन्न है तो जीवन साथी की सहमति से विवाह किया जा सकता है। दूसरे पक्ष की सावधानी और समझदारी विवाह को सौहाद्रपूर्ण और सफल बना सकती है। ❑

IAS/PCS - 2004

निःशुल्क कार्यशाला कार्यक्रम

विषय : 350 + तीन महीने में कैसे लाएं?

समाज शास्त्र

धर्मेन्द्र – "समाजशास्त्र के पर्यायवाची"

16th Nov., 2003 हिन्दी
17th Nov., 2003 English

राजनीति शास्त्र

शुभ्रा रंजन सक्सेना

"Lecturer-Delhi University"

18th Nov., 2003 हिन्दी
19th Nov., 2003 English

मनोविज्ञान

ओम प्रकाश चौधरी

"गोल्ड मेडलिस्ट"

विषय : सामग्री समस्या नहीं है।

20th Nov., 2003 हिन्दी

सामान्य अध्ययन

ओम प्रकाश चौधरी

21st Nov., 2003 हिन्दी

समय : 4.00 सायं (प्रतिदिन)
नामांकन प्रारंभ : 1 नवम्बर, 2003
नियमित कक्षाएं : 25 नवम्बर, 2003

Dharmendra's SOCIOLOGY

302, A-12-13, Top Floor, Ansal Building,
Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009.
Ph.: 55152590 Cell.: 011-31080722

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित कुछ नई पुस्तकें

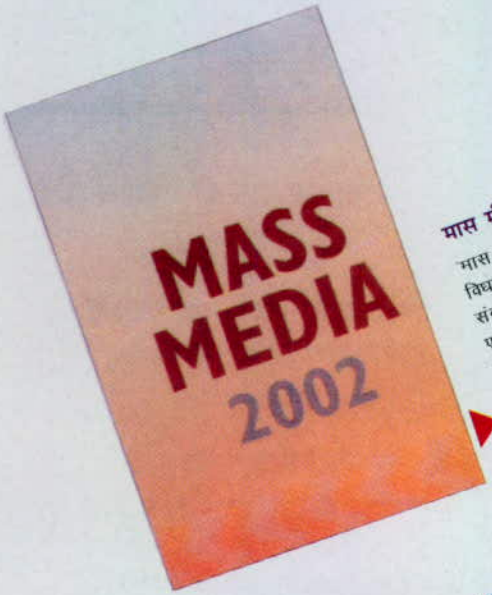

मास मीडिया 2002

मास मीडिया इन इंडिया–2002' का यह 18वां संस्करण पत्रकारिता के विद्यार्थियों, शिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं, नीति–निर्माताओं तथा मीडिया से संबद्ध अन्य व्यक्तियों के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है। केन्द्र एवं राज्यों में स्थित संचार संस्थाओं की व्यापक जानकारी इससे प्राप्त हो सकेगी।

मूल्य : 235 रुपये
पृष्ठ संख्या : 351

भारत के प्राचीन स्मारक

कथा शैली में लिखी गई इस पुस्तक में मुगल काल से पहले बने भारत के प्राचीन स्मारकों का रोचक और सजीव वर्णन एवं चित्रण है।

मूल्य : 65 रुपये
पृष्ठ संख्या : 51

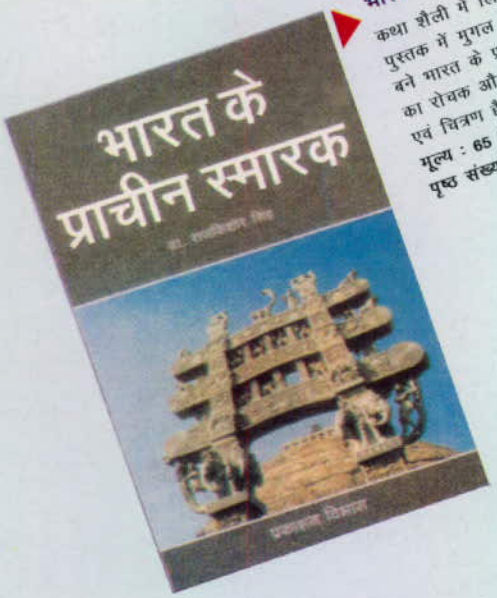

मीरां : मुक्ति की साधिका

हिन्दी साहित्य के भक्ति युग में उपेक्षित नारी को एक नई पहचान और नई मर्यादा देने का काम किया था मीराबाई ने। मीरा के प्रामाणिक पद मूल भाषा में देने के साथ–साथ पुस्तक में कुछ लोकप्रिय पदों को भी समाहित किया गया है।

मूल्य : 465 रुपये
पृष्ठ संख्या : 92

विक्रय केन्द्र

प्रकाशन विभाग के विक्रय केन्द्र

प्रकाशन विभाग, पटियाला हाउस, तिलक मार्ग, नई दिल्ली–110001; सुपर बाजार, कनाट सर्कस, नई दिल्ली–110001; हाल न. 196, पुराना सचिवालय, दिल्ली–110054; कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, मुंबई–400038; राजाजी भवन, बेसेंट नगर, चेन्नई–600090; 8 एम्प्लेनेड ईस्ट, कोलकाता–700069; बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना–800004; प्रेस रोड, तिरुवनंतपुरम–695001; 27/6 राम मोहन राय मार्ग, लखनऊ–226001; प्रथम तल, गृहकल्प काम्प्लेक्स, नामपल्ली, हैदराबाद–500001; प्रथम तल, 'एफ' विंग, केन्द्रीय सदन, कोरामंडल, बंगलौर–560034, अम्बिका काम्प्लेक्स, प्रथम तल, यूको बैंक के ऊपर, पालदी, अहमदाबाद–380007; नोझम रोड, उजान बाजार, गुहावटी–781001

पत्र सूचना कार्यालय के विक्रय केन्द्र : सी.जी.ओ. काम्प्लेक्स, 'ए' विंग, ए. बी. इंदौर (म.प्र.); 80 मालवीय नगर, भोपाल–462003; बी/7/बी, भवानी सिंह मार्ग, जयपुर–302001

उमाकांत मिश्रा, निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पटियाला हाऊस, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित एवं मुद्रित तथा अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा. लिमिटेड, नई दिल्ली–110 020 में मुद्रित। दूरभाष : 26388830–33
संपादक : राजेन्द्र राय

रजि.सं.एल. 12036 यू (डीएन) 53/2003-05 तथा डाक व्यय की पूर्व अदायगी के बिना डाक में डालने के लिए लाइसेंस-प्राप्त पंजी सं. 951/5
Reg. No. D.L.12036 (DN) 53/2003-05 Licenced to post without pre-payment at RMS, Delhi. R.N. 951/5

IAS/PCS PT/MAINS PT-CUM-MAINS

सफलता की नई सीढ़ी,
अन्वेषण और विश्लेषण का नया दृष्टिकोण,
व्यक्तित्व विकास का अनूठा माध्यम,

"नया उपगमन
विशिष्ट रणनीति,
नई विधा,
तीक्ष्ण दृष्टि"

DISCOVERY

...Discover your mettle

सामान्य अध्ययन

सी.बी.पी. श्रीवास्तव,
निलेश सिंह, अख्तर मलिक एव अन्य

- सामान्य अध्ययन के विभिन्न खंडों में चिर-परिचत विशेषज्ञों का मार्गदर्शन,
- प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा में सफलता सुनिश्चित करने वाली परंपरा को बनाए रखने के प्रति कटिबद्ध

समाज शास्त्र

सी.बी.पी. श्रीवास्तव,

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा में सफलता के लिए विशिष्ट तकनीकों की सहायता से मार्गदर्शन, विचारकों के सिद्धांतों की परख विकसित करने वाली तकनीक

सुधार-आधारित विकास कार्यक्रम
Reform-based Development Programme (RBDP)

- विशिष्ट अध्ययन क्षमता निर्माण एवं विकास
- अन्तर्क्रियात्मक वातावरण
- विश्लेषणात्मक लेखन हेतु विशेष मार्गदर्शन
- आवर्ती जांच परीक्षा
- सुग्राह्य अध्ययन सामग्री
- लोक अभिव्यक्ति का विशेष सत्र

ADMISSION OPEN

ALSO AVAILABLE
– CORRESPONDENCE COURSES
– HOSTEL FACILITIES

लोक प्रशासन

दिवाकर गुप्ता

प्रारंभिक परीक्षा के लिए एकमात्र विकल्प, मुख्य परीक्षा के लिए विशिष्ट लेखन रणनीति

भूगोल

निलेश सिंह

विषय के विभिन्न उपखंडों का अत्याधुनिक तकनीकी विश्लेषण प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा पर विशिष्ट बल

दर्शन शास्त्र

अविनाश तिवारी एवं टीम, निष्ठा इलाहाबाद

विषय के विभिन्न उपखंडों का अत्याधुनिक तकनीकी विश्लेषण प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा पर विशिष्ट बल

इतिहास

अख्तर मलिक एवं अन्य विशेषज्ञ

प्रारंभिक परीक्षा के लिए विशेष रणनीति एवं उपगमन मुख्य परीक्षा के विभिन्न उपखण्डों का विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन

FREE WORKSHOP
2ND WEEK OF NOV., 2003

DISCOVERY

...Discover your mettle

(THE IAS ACADEMY BY C.B.P. SRIVASTAVA)

B-14 (Basement), Commercial Complex, Beside HDFC Bank, Mukherjee Nagar, Delhi-9
Ph. : 27655891, Mobile : 33058532, E-mail : discovery_ias@rediffmail.com